आदिवासी एक्सप्रेस

आमजन का एक मात्र हिंदी दैनिक अखबार

रांची, सोमवार
26 मई 2025
वर्ष: 38, अंक: 171
पृष्ठ: 12, मूल्य: 3रु
RNI NO.: 49065/1989
DAVP CODE: 130961

देश

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मुख्यमंत्री परिषद में बस्तर के नवाचारों की मिली खुलकर तारीफ

झारखंड

वित्त मंत्री, सांसद ने 20 करोड़ की लागत से सड़क निर्माण कार्य का किया शिलान्यास

हज़ारीबाग

लोकसभा अध्यक्ष पहुंचे झारखंड तो एयरपोर्ट में ही हजारीबाग सांसद ने किया आत्मीय अभिनंदन

झारखंड में कोरोना ने दी दस्तक! स्वास्थ्य मंत्री बोले- कोविड के नए वेरिएंट पर सरकार अलर्ट

बिशेष प्रतिनिधि द्वारा

रांची: देश-दुनिया में एक बार फिर कोरोना वायरस अपना पांव पसार रहा है। इस बीच 2025 में झारखंड की राजधानी रांची में कोरोना वायरस का पहला मामला सामने आया है। झारखंड फिल्म डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड के सदस्य और प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक लाल विजय शाहदेव कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं। उन्होंने रविवार को स्वयं सोशल मीडिया पर पोस्ट डालकर इसकी पुष्टि की है।

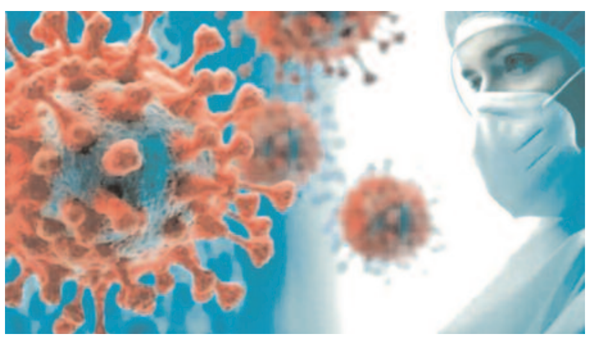

फ्लाइट में तबीयत बिगड़ने पर बेहोश हो गए लाल विजय शाहदेव: लाल विजय शाहदेव ने लिखा - भारत में कल तक 257 लोग कोरोना पॉजिटिव पाए गए हैं और मैं भी उनमें शामिल गया हूं। 22 मई को जब मैं मुंबई से रांची आ रहा था, उसी दौरान फ्लाइट में मेरी तबीयत बिगड़ गई और मैं बेहोश हो गया।

लाल विजय शाहदेव ने बताया कि वो रांची लौटने के बाद कुछ फिल्मों का प्रिव्यू करने वाले थे लेकिन स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण वो कार्य नहीं कर सके। फिलहाल उनका इलाज रांची के प्रतिष्ठित निजी अस्पताल में चल रहा है।

उधर, देश में कोविड के मामलों को देखते हुए स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि यह एक सामान्य स्थिति है। घबराने की कोई जरूरत नहीं है। स्वास्थ्य विभाग पूरी स्थिति पर नज़र रहे हुए है ।

डॉ. अंसारी ने कहा- 'भीड़-भाड़ वाले इलाकों में मास्क पहनना जरूरी है। इससे न केवल कोविड, बल्कि अन्य बैक्टीरियल और वायरल संक्रमणों से भी बचाव होता है।' सतर्क रहें, सुरक्षित रहें और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें। हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम खुद भी सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सुरक्षित रखें।

मंत्री ने बताया कि झारखंड सरकार, केंद्र सरकार की ओर से जारी होने वाली नई गाइडलाइन्स का इंतजार कर रहा है। उन्होंने कहा कि निर्देश मिलते ही राज्य सरकार तुरंत आवश्यक कदम उठाएगी। डॉ. अंसारी ने कहा लोगों को घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि सतर्कता बनाए रखने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार और स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह सतर्क एवं तैयार हैं। नागरिकों से अपील है कि वे अफवाहों से दूर रहें, आधिकारिक सूचना पर ही विश्वास करें और आवश्यक एहतियात बरतें।

स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि झारखंड के सभी जिलों में विशेष अवेयरनेस प्रोग्राम चलाए जाएंगे, ताकि आम नागरिकों को कोविड के प्रति जागरूक किया जा सके और गलतफहमियों को दूर किया जा सके. डॉ. अंसारी ने कहा, भीड़-भाड़ वाले इलाकों में मास्क पहनना जरूरी है. इससे न केवल कोविड, बल्कि अन्य बैक्टीरियल और वायरल संक्रमणों से भी बचाव होता है. मंत्री ने भावुक अपील करते हुए कहा, एक डॉक्टर होने के नाते मैं आप सभी से कहना चाहता हूं–सतर्क रहें, सुरक्षित रहें और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें. हम सबकी जिम्मेदारी है कि हम खुद भी सुरक्षित रहें और दूसरों को भी सुरक्षित रखें.

मंत्री ने बताया कि झारखंड सरकार, केंद्र सरकार द्वारा जारी होने वाली नई गाइडलाइन्स का इंतजार कर रही है. उन्होंने कहा कि निर्देश मिलते ही राज्य सरकार तुरंत आवश्यक कदम उठाएगी. डॉ. अंसारी ने जानकारी दी कि बेंगलुरु में जिन बुजुर्ग की मृत्यु हुई है, उनकी उम्र लगभग 85 वर्ष थी और उन्हें पहले से ही कई स्वास्थ्य समस्याएं थीं. इसलिए आम जनता को घबराने की जरूरत नहीं है, बल्कि सतर्कता बनाए रखने की जरूरत है, उन्होंने दोहराया. झारखंड सरकार और स्वास्थ्य विभाग पूरी तरह सतर्क एवं तैयार हैं. नागरिकों से अपील है कि वे अफवाहों से दूर रहें, आधिकारिक सूचना पर ही विश्वास करें और आवश्यक एहतियात बरतें. हम साथ हैं, हम तैयार हैं - कोविड को हर बार की तरह हराएंगे!

ग्राम सभा की सहमति से झारखंड में खुलेगी शराब दुकानें, बीजेपी कर रही गुमराह: हेमलाल मुर्मू

संवाददाता द्वारा

रांची: झारखंड में शराब नीति को लेकर भाजपा के आरोपों पर झामुमो नेता हेमलाल मुर्मू ने पलटवार किया है. उन्होंने कहा कि भाजपा के नेता आदिवासियों को गुमराह कर रहे हैं और विरोध के नाम पर सरकार का पुतला जलवा रहे हैं.

झामुमो विधायक हेमलाल मुर्मू ने कहा कि झारखंड सरकार की शराब नीति स्पष्ट है. जिसमें यह बात साफ तौर पर कहा गया है कि राज्य में शराब की दुकानें वहीं खुलेगी, जहां ग्रामसभा के माध्यम से सहमति दी जाएगी.

उन्होंने कहा कि भाजपा ये आरोप लगाती रही है कि झामुमो झारखंड के आदिवासियों को शराब में डुबोना चाहती है. जबकि भाजपा के नेता और पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने पिछले दिनों बयान दिया था कि उनके कार्यकाल शराब से रेवेन्यू 1900 करोड़ रुपये तक पहुंच गया था, जबकि झामुमो महज 1000 करोड़ पर अटकी हुई है. ऐसे मे साफ है कि कौन राज्य के आदिवासियों को को शराब में डुबो रहा था.

वहीं पड़ोसी राज्य बिहार की तर्ज पर झारखंड में पूर्ण शराबबंदी के मसले पर हेमलाल मुर्मू ने कहा कि ये फिलहाल झारखंड में अभी तय नहीं हुआ है. इसके कई पहलू हैं. इसके परिणाम पर विचार होगा फिर तय हो पाएगा कि क्या करना है.

वहीं शराब नीति में गड़बड़ी के मामले और विपक्ष के आरोप के बीच कुछ आला अधिकारियों की गिरफ्तारी पर झामुमो नेता हेमलाल मुर्मू ने कहा कि कानून अपना काम कर रही है, जो गलत होंगे उनपर कार्रवाई होगी.

लिस कस्टडी में युवक की मौत का मामला, दो थाना प्रभारियों निलंबित

क्राइम संवाददाता द्वारा

दुमका: संथाल परगना प्रमंडल के पुलिस उप महानिरीक्षक (डीआईजी) अंबर लकड़ा ने पुलिस कस्टडी में साइबर क्राइम के आरोपी मो. मेराज अंसारी के मौत के मामले में कार्रवाई की है. डीआईजी ने सारठ और पालोजोरी के थाना प्रभारी को निलंबित कर दिया है. इस कार्रवाई की पुष्टि डीआईजी अंबर लकड़ा ने की है.

दरअसल, चार दिन पूर्व 21 मई को देवघर जिला के पालोजोरी थाना क्षेत्र के दुधानी गांव निवासी मेराज अंसारी (35 वर्ष) को पुलिस ने साइबर क्राइम के आरोप में गिरफ्तार किया था. इस गिरफ्तारी में पालोजोरी थाना के साथ सारठ थाना की पुलिस भी शामिल थी.

गिरफ्तारी के बाद आरोपी मेराज अंसारी की तबीयत बिगड़ने लगी तब पहले उसे स्थानीय स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया. वहां से उसे देवघर सदर अस्पताल के लिए रेफर किया गया. देवघर सदर अस्पताल में चिकित्सकों ने मेराज को मृत घोषित कर दिया. दूसरे दिन 22 मई को मेराज के पुलिस अभिरक्षा में मौत के बाद दुधानी और आसपास गांव के रहने वाले काफी लोगों ने पालोजोरी थाना में पुलिस के खिलाफ प्रदर्शन शुरू कर दिया.

हंगामा करने वाले लोगों ने पथराव किया, सड़क जाम किया और पालोजोरी बाजार भी बंद करा दिया. उनका आरोप था कि पुलिस की प्रताड़ना से मेराज की मौत हो गई है. इस स्थिति से निपटने के लिए अगल-बगल के थानों से अतिरिक्त बल मंगाया गया. लोगों के आक्रोश को देखते हुए पुलिस ने भी बल प्रयोग करते हुए उपद्रवियों को खदेड़ दिया. काफी देर तक हंगामा चलने के बाद स्थिति सामान्य हुई और बाजार खुले. मृतक मेराज के परिवार वाले और अन्य ग्रामीण पुलिस पर कार्रवाई की मांग कर रहे थे.

संथाल परगना क्षेत्र के डीआईजी अंबर लकड़ा ने सारठ के थाना प्रभारी सूरज कुमार और पालोजोरी के थाना प्रभारी प्रभात कुमार को निलंबित कर दिया. डीआईजी ने अपने आदेश में यह स्पष्ट किया है कि सारठ थाना प्रभारी सूरज कुमार और पालोजोरी थाना प्रभारी प्रभात कुमार के द्वारा मो. मेराज के स्वास्थ्य संबंधित जानकारी प्राप्त किए बिना ही मनमाने तरीके से पूछताछ की गयी.

जबकि उन्हें मेराज के स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त करने के उपरांत ही आगे की कार्रवाई की जानी चाहिए थी. इससे स्पष्ट होता है कि ये अपने कर्तव्य के प्रति घोर लापरवाह है और इनका कनीय पदाधिकारियों पर नियंत्रण नहीं है. अतः इन दोनों थाना प्रभारी को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया जाता है. इसकी कॉपी डीआईजी कार्यालय से देवघर के एसपी कार्यालय को भेजी गई है.

भारी वाहन ने लकड़बग्घे को कुचला, सड़क पार करने के दौरान हुआ हादसा

क्राइम संवाददाता द्वारा

सरायकेला: जिले के चांडिल अनुमंडल अंतर्गत ईचागढ़ थाना के मिलन चौक सोडो गांव के पास रविवार सुबह मुख्य सड़क पर मृत अवस्था में लकड़बग्घा दिखा. आशंका जताई जा रही है कि देर रात सड़क पार करने के दौरान भारी वाहन की चपेट में आकर लकड़बग्घा की मौत हुई है. घटना के बाद रविवार सुबह लकड़बग्घे को देखने लोगों का जमावड़ा लग गया. घटना के बाद मामले की जानकारी ग्रामीणों ने ईचागढ़ थाना और वन विभाग को सूचित कर दिया. मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने वन विभाग के अधिकारियों से संपर्क किया है और आगे की कार्रवाई की जा रही है. इधर मामले के संबंध में जानकारी देते हुए वन विभाग के वन क्षेत्र पदाधिकारी शशि कुमार रंजन ने बताया कि आशंका है कि भारी वाहन ने लकड़बग्घा को कुचल दिया है.

वन विभाग के अधिकारी ने कहा कि लकड़बग्घे के शव को अपने कब्जे में लेकर पशु चिकित्सा की देखरेख में पोस्टमार्टम कर दफना दिया जाएगा. वन विभाग ने कहा कि फिलहाल अज्ञात के विरुद्ध मामला दर्ज किया जाएगा. उन्होंने कहा कि अनुसंधान के क्रम में अगर कुछ वाहन का पता चलता है तो एफआईआर दर्ज की जाएगी. वन विभाग की टीम ने कहा कि ईचागढ़ और दलमा रेंज में लकड़बग्घा की संख्या काफी अधिक में है.

वन विभाग की टीम ने बताया कि इसका शारीरिक बनावट कुत्ता से मिलता जुलता होता है. लकड़बग्घा भी एक खतरनाक जानवर माना जाता है. वे बकरियां या छोटे जानवरों को हमेशा अपना शिकार बनाता है.

रांची में अड्डेबाजी के खिलाफ बड़ा अभियान, 50 से ज्यादा पकड़े गए

रांची, (क्राइम संवाददाता द्वारा): राजधानी में सार्वजनिक स्थानों के साथ-साथ कई अन्य जगहों पर रात के समय अड्डेबाजी करने वाले लोगों के खिलाफ शनिवार की रात को बड़ा अभियान चलाया गया. डीआईजी सह एसएसपी रांची के निर्देश पर चलाए गए अभियान की वजह से राजधानी में अड्डेबाजी करने वालों में हड़कंप मच गया. डीआईजी सह रांची एसएसपी चन्दन कुमार सिन्हा ने शनिवार की रात अड्डेबाजी को लेकर मोबाइल नंबर साझा किया और आमलोगों से मोबाइल पर सूचना देने की अपील की. नंबर साझा करने के कुछ ही देर बाद उसका असर दिखने लगा. रांची के अलग-अलग थाना क्षेत्रों से आमलोगों के फोन आने लगे और बकायदा अड्डेबाजी की तस्वीर के साथ लोकेशन तक पुलिस के पास पहुंचने लगी. सूचना मिलने पर एसएसपी के निर्देश पर एक साथ शहर के हर थाना क्षेत्र में अड्डेबाजी करने वालों पर कारवाई शुरू की गई. इस दौरान मोरहाबादी मैदान, करमटोली चौक के आसपास, बिरला मैदान, रिम्स के आस पास, डीआईजी मैदान, डोरंडा, लालपुर के लोवर वर्दमान कॉलोनी में एक साथ पुलिस ने कार्रवाई की. पुलिस की इस कार्रवाई से हर तरफ हड़कंप मच गया.

पुलिस अभियान के दौरान 50 से ज्यादा लोगों को बेवजह मजमा लगाने के आरोप में पकड़ा गया. इसमें कई लोग ऐसे थे जो बेवजह सड़कों पर खड़े होकर समय बर्बाद कर रहे थे. कुछ स्थानों पर धूम्रपान करते हुए लोगों को भी पकड़ा गया. कुछ लोग ग्रुप में धूम्रपान कर रहे थे. सभी को थाने लाया गया और फिर उन्हें चेतावनी देते हुए उनके परिजनों को मामले की जानकारी देकर उन्हें वापस घर जाने दिया गया. साथ ही साथ यह हिदायत दी गई कि भविष्य में अगर बेवजह अड्डेबाजी करते दिखे तो कानूनी कार्रवाई की जाएगी.

देश में असीम संभावनाएं, दुनिया की नजर भारत पर: ओम बिरला

बिशेष संवाददाता द्वारा

जमशेदपुर: कोल्हान का सबसे बड़ा व्यवसायिक संगठन सिंहभूम चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के प्लेटिनम जुबली समारोह में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला शामिल हुए.लोकसभा अध्यक्ष ने अपने संबोधन में कहा है कि आज भारत में असीम संभावनाएं हैं दुनिया के बड़े देशों की नजर भारत पर है. भारत हर विषम परिस्थितियों से निपटने के लिए तैयार भी है. इस कार्यक्रम में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा और जमशेदपुर के सांसद विद्युत महतो शामिल हुए.

शहर के बिष्टुपुर स्थित लोयोला स्कूल के ऑडिटोरियम में आयोजित समारोह में पूरे कोल्हान के अलावा अन्य जगहों से भी व्यावसायिक और सामाजिक संगठन के लोग मौजूद रहे. इस मौके पर चैंबर के 75 साल के सफर की जानकारी दी गई. इस दौरान अतिथियों द्वारा चैंबर के सभी पूर्व अध्यक्ष को समानित किया गया.

पहली बार जमशेदपुर दौरे पर आये लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि बिरसा मुंडा के झारखंड की धरती पर टाटा जैसी शख्सियत ने उद्योग स्थापित कर शहर को एक पहचान दी है. आज यह धरती दुनिया में सबसे बड़ी स्टील फैक्ट्री के लिए पहचान बनाई है.

उन्होंने कहा कि आज व्यापारिक क्षेत्र में आने वाली नई चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार रहने की जरुरत है. आज पूरे देश को भारत की सेनाओं पर गर्व है. आज इस देश में कोई भी आतंकवाद फैलाने का काम करेगा अंजाम ऑपरेशन सिंदूर जैसा होगा.

आज इन सभी कार्य में इंडस्ट्री सेक्टर का भी योगदान है. आज भारत के 75 वर्ष की यात्रा में देश में नई इंडस्ट्री नये उपकरण के क्षेत्र में कई उपलब्धि हासिल हुई है. आज दुनिया में व्यापारिक क्षेत्र में बदलाव को देखते हुए काम करने की जरुरत है. इस प्रतिस्पर्धा के बीच आना हमारे पास कुशल प्रशासक के साथ बौद्धिक क्षमता का प्रमाण है.

आज दुनिया की सभी बड़ी कंपनी में भारत के युवा पीढ़ी की उपस्थिति है. यही कारण है कि भारत में बड़े-बड़े देश के लोग आते हैं आज भारत मे काफी संभावानए हैं. चैंबर को नये विचार, नई सोच के साथ मंथन करने की जरुरत है.

आज बदलती टेक्नोलॉजी में भारत कदम से कदम मिलाकर चल रहा है. हमारे पास एक कुशल कार्यबल है जो किसी के पास नहीं है. हमें नौजवानों को नई तकनीक इनोवेन से जोड़ना होगा. आज चैंबर को सीमित दायरे से निकलकर आगे सोचना होगा. लोकसभा अध्यक्ष ने कहा कि भारत मे संभावना है दुनिया के बड़े देश की नजर भारत पर है.

इस मौके पर रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने कहा कि आज का भारत नया भारत है, मोदी मतलब विकास. 2047 तक भारत दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति बनेगा. उन्होंने कहा कि आज के परिपेक्ष में एक देश एक चुनाव लागू होना चहिए. वहीं पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने कहा कि देश के इतिहास में सबसे अधिक विधाई काम करने के लिए लोकसभा अध्यक्ष का नाम होगा.

सरना धर्म कोड के लिए सड़क से सदन तक करेंगे संघर्ष: कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष का एलान

संवाददाता द्वारा

सरायकेला: झारखंड प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने रविवार को सरायकेला में जिला परिसदन में संगठन सृजन 2025 को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक की. जिसमें जिला अध्यक्ष, प्रखंड अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष और पर्यवेक्षकों सहित कई पार्टी पदाधिकारी उपस्थित रहे.

इस दौरान कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने स्पष्ट किया कि संगठन को जमीनी स्तर तक मजबूत करने की योजना के तहत सभी प्रखंडों और मंडलों में नई कमेटियों का गठन किया जा रहा है. प्रत्येक प्रखंड और मंडल कमेटी में 12 सदस्य होंगे. जिसमें एक अध्यक्ष, दो उपाध्यक्ष और नौ कार्यकारिणी सदस्य शामिल होंगे.

इन कमेटियों में ओबीसी, महिला और अल्पसंख्यक वर्गों का समुचित प्रतिनिधित्व अनिवार्य होगा. जिला स्तर की कमेटी 24 सदस्यों की होगी, जबकि भविष्य की प्रदेश कमेटी में 48 सदस्य होंगे. उन्होंने बताया कि सरायकेला जिला के 12 में से 6 प्रखंडों में कमेटियों का गठन हो चुका है और शेष 6 की प्रक्रिया तीन दिनों में पूरी कर ली जाएगी. प्रखंड और मंडल के गठन के बाद पंचायत और वार्ड स्तर पर भी संगठन विस्तार किया जाएगा.

इस बैठक के बाद कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने मीडिया से बातचीत में कहा कि सरना धर्म कोड की मांग को लेकर कल कांग्रेस पार्टी की ओर से राजभवन के समक्ष विशाल धरना-प्रदर्शन किया जाएगा. उन्होंने कहा कि झारखंड के आदिवासी समाज की पहचान, संस्कृति और अस्तित्व की रक्षा के लिए सरना धर्म कोड की मांग अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच चुकी है.

केशव महतो कमलेश ने कहा कि झारखंड विधानसभा से इस प्रस्ताव को पहले ही पारित किया जा चुका है, लेकिन केंद्र सरकार अब तक मामले में चुप है.उन्होंने कहा कि अगर अभी भी केंद्र सरकार की नींद नहीं खुलती है तो हम जंतर-मंतर तक जाएंगे. हमारे विधायक, सांसद, मंत्री सब इस आंदोलन में शामिल होंगे.

उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज प्रकृति के उपासक हैं और उनकी मान्यता अन्य धर्मों से भिन्न है. जनगणना के कॉलम में हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध, जैन को कोड मिला है तो आदिवासियों को सरना धर्म कोड क्यों नहीं? कमलेश ने राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के नेतृत्व में सरना धर्म कोड की लड़ाई को मजबूती से लड़ने की प्रतिबद्धता जताई.

उन्होंने कहा कि जैसे जातीय जनगणना के मुद्दे पर केंद्र को झुकना पड़ा, वैसे ही सरना कोड पर भी भाजपा को बैकफुट पर आना पड़ेगा. उन्होंने कहा कि कल का धरना कार्यक्रम ऐतिहासिक होगा. उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से अधिक से अधिक संख्या में धरना-प्रदर्शन में शामिल होने की अपील की है.

खूंटी में कम उम्र की लड़कियों के मां बनने पर दयामनी बारला ने जताई चिंता

क्राइम संवाददाता द्वारा

खूंटी: खबर प्रकाशित होने के बाद मामले पर राज्य बाल संरक्षण आयोग ने संज्ञान लिया था और सभी जिलों के डीसी से इस बाबत रिपोर्ट तलब की गई है.वहीं खबर प्रकाशित होने के बाद कई राजनीतिक दलों के नेताओं, बुद्धिजीवियों और शिक्षाविदों ने इस तरह की घटना पर चिंता जाहिर करते हुए अपनी प्रतिक्रिया दी है.

वहीं कम उम्र के बच्चों के माता-पिता बनने के मामले पर आयरन लेडी के नाम से मशहूर आदिवासी नेत्री दयामनी बारला ने समाज के लोगों को जिम्मेदार बताया है. दयामनी बारला ने समाज की भूमिका पर सवाल उठाया है. आदिवासी महिला नेत्री दयामनी बारला ने बताया कि कम उम्र में बिन ब्याही मां बनना समाज के लिए बहुत दुखद बात है.

उन्होंने बताया कि आदिवासी समाज के बुद्धिजीवियों से इस मामले पर चर्चा की गई है. इस तरह के मामले काफी गंभीर हैं. ऐसे मामलों से आदिवासी समाज के बच्चियों को कैसे बचाया जाए इस पर समाज के लोगों को मंथन करना चाहिए और उन्हें बचाने के लिए प्रयास करना चाहिए. उन्होंने कहा कि इस तरह की घटना के लिए हमारा पूरा समाज ही जिम्मेदार है.

उन्होंने कहा कि खूंटी के पूर्वी इलाके (खूंटी अनुमंडल) में शिक्षा और जागरुकता के मामले में आदिवासी समाज बहुत पिछड़ा हुआ है. बहुत दुखद बात है कि जिला मुख्यालय से महज 10 किमी अंदर जाने के बाद यह अहसास नहीं होता है कि आप मुख्यालय से नजदीक हैं और वहां की स्थिति ऐसी है कि हमारे आदिवासी लोग ठीक से हिंदी भी नहीं बोल पाते हैं. सरकारी आंकड़ों में भी इन इलाकों में शिक्षा का स्तर सबसे नीचे है. उन्होंने पश्चिमी इलाके (तोरपा अनुमंडल) का उदाहरण देते हुए कहा कि इस इलाके में लोग जागरूक हैं. लोग अपने अधिकारों को जानते हैं. इसलिए ऐसे मामले पश्चिमी इलाके में नहीं हैं. पूर्वी इलाके के लोगों में जागरुकता की कमी है.

दयामनी बारला ने कहा कि माता-पिता को अपने बच्चों पर निगरानी रखने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि खूंटी के पूर्वी इलाके में मेला आदि का आयोजन होता है. लेकिन मां-बाप मेले में आये बच्चों पर तनिक पर ध्यान नहीं देते हैं. उन्होंने कहा कि एक बार वह खुद उस इलाके में आयोजित एक मेले में गई थीं, जहां उन्होंने देखा कि एक 14 साल की लड़की की पीठ पर चार साल का बच्चा था. उस मेले में एक नहीं कई लड़कियां थीं जिनके पीठ पर बच्चे थे. यह देखकर उन्हें काफी आश्चर्य हुआ था.

उन्होंने कहा कि कम उम्र में मां बनने का मुख्य कारण है अशिक्षा और जागरुकता की कमी. सबसे बड़ा कारण है समाज के वैसे लोग जो समाज सुधारक होने का दावा करते हैं, लेकिन इन बातों पर ध्यान नहीं देते हैं. उन्होंने बताया कि हमारे जैसे लोग ही जिम्मेदार हैं कि क्षेत्र में कम उम्र में बच्चे माता-पिता बन रहे हैं. उन्होंने कहा कि यदि हमें जिला को आगे बढ़ाना है तो पहले हमें जागरूक होना होगा. उन्होंने खूंटी के पश्चिमी क्षेत्र के उदाहरण देते हुए बताई कि उन इलाकों के बच्चे कम उम्र में माता-पिता नहीं बनते हैं. क्योंकि वहां के लोग जागरूक हैं. दयामनी बारला ने खुलकर इसके लिए स्थानीय जनप्रतिनिधियों पर उदासीनता का आरोप लगाया.

दयामनी बारला ने बताई कि खूंटी अनुमंडल क्षेत्र के गांव टोलों में शाम ढलने के बाद नशे का बाजार चलता है. क्षेत्र में आये दिन आर्केस्ट्रा और छऊ नृत्य का आयोजन होता है. समाज के नेता ही ऐसे आयोजन कराते हैं. ऐसे कार्यक्रमों में कम उम्र के बच्चे शामिल होते हैं और वहीं से भटकाव होता है. उन्होंने बताया कि वैसे कार्यक्रमों में अभिभावक व्यस्त रहते हैं और बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं. इसके लिए हमलोग खुद जिम्मेवार हैं.

हत्या के मामले में दो नाबालिगों को पकड़ा

नई दिल्ली। उत्तरी जिले के बुराड़ी इलाके में दिनदहाड़े हुई एक नाबालिग की हत्या के मामले में क्राइम ब्रांच ने दो नाबालिगों को पकड़ा है। क्राइम ब्रांच के डीसीपी आदित्य गौतम ने बताया कि 22 मई को दो लड़कों ने मुकुंदपुर निवासी एक नाबालिग को चाकू से गोद डाला था। घटना के बाद घायल किशोर को अस्पताल ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने इलाज के दौरान उसे मृत घोषित कर दिया। इस संबंध में बुराड़ी थाना पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। स्थानीय पुलिस के अलावा क्राइम ब्रांच ने मामले की जांच शुरू की। इस बीच पुलिस टीम को सूचना मिली कि हत्या में शामिल आरोपित नाबालिग धौला कुआं इलाके में देखे गए हैं। सूचना को पुख्ता कर पुलिस ने जाल बिछाकर दोनों को पकड़ा। पूछताछ में आरोपितों ने अपना अपराध कबूल किया। पुलिस ने आरोपितों की निशानदेही पर हत्या में इस्तेमाल किया गया चाकू बरामद किया। पूछताछ में सामने आया कि मृतक और आरोपित एक ही मोहल्ले के थे। दोनों के बीच पहले से आपसी विवाद था। मृतक ने आरोपितों को जान से मारने की धमकी दी थी। जिसका बदला लेने के लिए दोनों आरोपितों ने मिलकर उसकी हत्या कर दी।

सरकारी अधिकारी बनकर बुजुर्ग महिला से वसूली करने वाला ठग गिरफ्तार

नई दिल्ली। दक्षिणी जिले के डिफेंस कॉलोनी थाना पुलिस ने खुद को सरकारी अधिकारी बताकर एक बुजुर्ग महिला से डेढ़ लाख रुपये की वसूली करने वाले आरोपित तौसीफ राजा को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उसके कब्जे से वारदात में इस्तेमाल बाइक, मोबाइल फोन और 28,500 नकद बरामद किए हैं। दक्षिण जिले के डीसीपी अंकित चौहान ने बताया कि 76 वर्षीय बुजुर्ग महिला डिफेंस कॉलोनी के डी-ब्लॉक में रहती हैं। उन्होंने 20 मई को पुलिस में शिकायत दी कि 9 मई को एक व्यक्ति उनके घर आया और खुद को बागवानी विभाग और एमसीडी का अधिकारी बताया। उसने नाली साफ न होने का हवाला देकर 50 हजार रुपये का चालान काटने और बिजली कनेक्शन काटने की धमकी दी। फिर मामले को रफा-दफा करने के लिए 25 हजार रुपये की मांग की। डर के मारे महिला ने उसे यह रकम दे दी। इसके बाद 13 मई को वह शख्स दोबारा आया और इस बार 50 लाख की मांग की। धमकी दी कि रकम न मिलने पर उनके बेटे की शादी में बाधा डालेगा। डर के चलते महिला के पति ने मोदी मिल फ्लाईओवर के पास उसे 1.5 लाख नकद दे दिए। रकम मिलने के बावजूद आरोपित धमकाता रहा।पुलिस ने पीड़िता के बयान पर केस दर्ज किया।डीसीपी के अनुसार एसएचओ संजय शर्मा की देखरेख में पुलिस टीम ने मामले की जांच शुरू की। पुलिस टीम ने 100 से अधिक सीसीटीवी फुटेज खंगाले, मोबाइल की कॉल डिटेल्स और तकनीकी सर्विलांस से आरोपित की पहचान कर उसे ओखला से दबोचा।

मकान में लगी आग, तीन झुलसे

नई दिल्ली। दिल्ली के लाहौरी गेट स्थित फर्श खाना इलाके स्थित एक मकान में आग लग गई। खबर मिलते ही स्थनीय पुलिस के अलावा दमकल की पांच गाड़ियां मौके पर पहुंची। घटना में एक मासूम समेत तीन लोग झुलस गए हैं। पुलिस ने सभी घायलों को तुरंत नजदीकीअस्पताल में भर्ती कराया। दमकलकर्मियों ने एक घंटे के भीतर आग पर काबू पाया। फिलहाल पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कर रहीहै। अग्नि शमन विभाग के अनुसार तड़के साढ़े तीन बजे दमकल कंट्रोल रूम को सूचना मिली कि फर्श खाना इलाके स्थित एक मकान में आग लग गईहै। सूचना मिलते ही दमकल की पांच गाड़ियों को मौके पर भेजा गया। घटना में तीन लोग झुलस गए। घायलों की पहचान अनस (13), अहमद (18) और शाहनवाज (30) के रूप में हुई है। दमकलकर्मियों ने एक घंटे के भीतर आग पर काबू पाया। दमकल अधिकारी के अनुसार आग ग्राउंड फ्लोर पर बिजली मीटर बोर्ड और एक बाइक में आग लगी थी। जिसके कारण 03 लोग झुलस गए। फिलहाल पुलिस आग लगने के कारणों की जांच कररही है।

दिल्ली के बवाना औद्योगिक क्षेत्र में आग से प्लास्टिक फैक्टरी धू-धूकर जली, विस्फोट

नई दिल्ली। दिल्ली के बाहरी उत्तरी जिले के बवाना औद्योगिक क्षेत्र में आज सुबह एक प्लास्टिक फैक्टरी में आग लग गई। इस दौरान विस्फोट भी हुए। इससे फैक्टरी का कुछ हिस्सा भरभरा गया। इसमें अभी तक किसी के हताहत होने की सूचना नही है। दमकल विभाग के निदेशक अतुल गर्ग के अनुसार, सुबह करीब 4:50 बजे सूचना मिलते ही दमकल की 17 गाड़ियां भेजी गईं। राहत और बचाव कार्य के दौरान फैक्टरी में धमाका होने से फैक्टरी का कुछ हिस्सा गिर गया। फैक्टरी के आसपास आसमान पर धुआं का गुबार छा गया है। आग लगने का कारण स्पष्ट नहीं हो सका है। फिलहाल आग बुझाई जा रही है।

मेरी हर सांस में खेती और रोम-रोम में किसान बसे हैं - शिवराज सिंह चौहान

एजेंसी

नई दिल्ली, । केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण और ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान की अगुवाई में 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' की तैयारियां अब अपने अंतिम चरण में हैं। ओडिशा के पुरी स्थित श्री जगन्नाथ की पावन धरती से 29 मई को इस व्यापक अभियान का शुभारंभ होगा। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय का पूरा अमला राज्यों के सहयोग से इसकी तैयारियों में जुटा हुआ है।

इसी कड़ी में केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने नई दिल्ली में पूसा कैंपस स्थित सुब्रह्मण्यम हॉल में देशभर के कृषि वैज्ञानिकों से संवाद किया। उन्होंने कहा कि मैं सत्ता के सुख के लिए कृषि मंत्री नहीं बना हूं, बल्कि किसानों की सेवा के लिए, उत्पादन बढ़ाने,

उत्पादन की लागत घटाने, खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, देश में अन्न के भंडार भरने और भावी पीढ़ी के कृषि संबंधित हितों की रक्षा के लिए ही मेरा जीवन समर्पित है। उर्वरक का संतुलित प्रयोग, स्थानीय परिस्थिति, सही शोध जानकारी होने और अच्छे बीजों से किसान को उत्पादकता बढ़ाने में निश्चित तौर पर मदद मिल सकती है। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों, विभाग के अमले और किसानों को जोड़ने पर जोर देते हुए कहा कि इस अभियान के जरिए इसे पूरा करते हुए किसानों से जुड़ने की एक बड़ी कोशिश होने जा रही है। खेती हृदय और लगाव का विषय है। खेती को जिया जाता है। उन्होंने कहा, मेरी हर सांस में खेती और रोम-रोम में किसान बसे हैं। फसल के अच्छे और खराब होने पर भावनाएं जुड़ जाती हैं। सरकार की पूरी कोशिश कृषि अनुसंधान को आगे बढ़ाने की है। शोध और अनुसंधान के लिए हमारी सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में फंड की कमी नहीं होने देगी। उन्होंने कहा कि यह अभियान परिणाम उन्मूलक कार्यक्रम है, जिसका परिणाम इसी खरीफ सीजन में उत्पादन वृद्धि और उत्पादन लागत में कमी के रूप में जल्द ही हमारे सामने होगा। उन्होंने देश के वैज्ञानिकों से अपनी शोध क्षमता को वैश्विक स्तर पर सिद्ध करने की भी अपील की। उन्होंने कहा कि हमारे कृषि संस्थानों में वह ताकत है, जिसका लोहा पूरी दुनिया मानेगी। केंद्रीय मंत्री ने वैज्ञानिकों के प्रयासों की प्रशंसा की और कहा कि इस अभियान के पूरा होने के बाद देश, वैज्ञानिकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करेगा। यह अभियान 29 मई से 12 जून तक देशव्यापी स्तर पर आयोजित किया जा रहा है, जिसमें वैज्ञानिकों की टीमें गांव-गांव जाकर किसानों से सीधे संवाद करेंगी।

दिल्ली पुलिस ने कुख्यात हिस्ट्रीशीटर मनप्रीत उर्फ काकू को किया गिरफ्तार

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस की क्राइम ब्रांच ने एक बड़ी कामयाबी हासिल करते हुए कुख्यात हिस्ट्रीशीटर मनप्रीत उर्फ काकू को गिरफ्तार किया है। 29 वर्षीय मनप्रीत, मोहन गार्डन, उत्तम नगर का निवासी है और उस पर हत्या का प्रयास, डकैती, चोरी, हथियार तस्करी, धोखाधड़ी, साइबर अपराध और हमला जैसे 13 केस दर्ज हैं। वह चार मामलों में वांछित था, जिनमें दो में उसे उद्घोषित अपराधी (पीओ) और दो में गैर-जमानती वारंट (एनबीडब्ल्यू) जारी किया गया था। दिल्ली पुलिस क्राइम ब्रांच के डीसीपी हर्ष इंदौरा ने बताया कि यह ऑपरेशन उत्तरी रेंज-II की टीम ने सहायक आयुक्त नरेंद्र सिंह की देखरेख और इंस्पेक्टर संदीप तुशिर के नेतृत्व में अंजाम दिया। टीम में उप-निरीक्षक सतेंद्र, योगेश दहिया, परवीर सिंह, प्रधान सिपाही सिद्धार्थ ढाका, प्रदीप तोमर, अजय पाल, विनोद बजाड़, अश्वनी दहिया, संदीप संगरोहा, अजय, प्रदीप श्योकंद और महिला सिपाही रजनी शर्मा शामिल थे। पुलिस को सूचना मिली थी कि मनप्रीत लगातार अपने ठिकाने बदल रहा था। क्राइम ब्रांच ने तकनीकी और स्थानीय सूचनाओं के आधार पर उसकी तलाश शुरू की। कई दिनों तक छापेमारी के बाद, प्रधान सिपाही सिद्धार्थ ढाका को सूचना मिली कि मनप्रीत मोहन गार्डन में एक खास जगह पर आएगा। इसके बाद, पुलिस ने जाल बिछाकर उसे धर दबोचा। मनप्रीत के खिलाफ 2016 से 2024 तक 13 मामले दर्ज हैं, जिनमें हत्या का प्रयास (धारा 307), डकैती (धारा 392), चोरी (धारा 379), आर्म्स एक्ट, और साइबर अपराध (आईटी एक्ट) जैसे गंभीर आरोप शामिल हैं। वह 12वीं तक पढ़ा है और प्रॉपर्टी डीलर है। पुलिस ने बताया कि मनप्रीत जल्दी पैसा कमाना चाहता था। इसके कारण किशोरावस्था से ही अपराध की दुनिया में उतर गया।

चुनाव आयोग ने कानूनी सलाहकारों और सीईओ का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने आज अपने कानूनी सलाहकारों का राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया। इस पहल का उद्देश्य आयोग की कानूनी रूपरेखा को मजबूती देना और नई चुनौतियों का बेहतर तरीके से सामना करना है। सम्मेलन में यह ज़ोर दिया गया कि कानूनी प्रक्रिया विरोध की भावना के बजाय संवाद पर आधारित हो। सभी पक्षों को पर्याप्त सुनवाई का अवसर मिलना चाहिए।

मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने नई दिल्ली स्थित आईआईआईडीईएम में आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी भी उपस्थित रहे। दिनभर चले इस सम्मेलन में चुनाव कानून, न्यायिक प्रक्रिया और कानूनी सुधारों पर चर्चा हुई। आयोग ने अपनी कानूनी टीम की तैयारी, समन्वय और दक्षता को बढ़ाने पर विशेष ध्यान दिया। इसका मकसद विभिन्न न्यायिक मंचों पर अपनी कानूनी प्रस्तुति को और प्रभावी बनाना है। सम्मेलन में सुप्रीम

कोर्ट और देश के 28 उच्च न्यायालयों और बेंच के वरिष्ठ अधिवक्ताओं ने भाग लिया। इसके साथ ही सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 36 मुख्य निर्वाचन अधिकारी (सीईओ) और आयोग के अधिकारी भी मौजूद रहे। इसके अतिरिक्त आयोग ने आईआईआईडीईएम में एक और सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें सभी सीईओ शामिल हुए। इस बैठक में आयोग की आईटी पहलों की योजना पर चर्चा की गई। चुनाव आयोग ने 2025 में एकीकृत डैशबोर्ड ईसीआईनेट विकसित करने की योजना शुरू की है। यह डैशबोर्ड सभी संबंधित डेटा को एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराएगा और ईसीआई की सभी आईसीटी पहलों को एक सूत्र में जोड़ेगा।

पहलगाम, पुंछ का दौरा करने वाले राहुल गांधी एकमात्र राष्ट्रीय नेता - पवन खेड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस प्रवक्ता पवन खेड़ा ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष (एलओपी) और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी के जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले के दौरे और पाकिस्तान की ओर से हाल ही में सीमा पार से की गई गोलाबारी से प्रभावित परिवारों से मिलने के लिए सराहना की। पवन खेड़ा ने समाचार एजेंसी से कहा, जब पहलगाम में आतंकवादी हमला हुआ था, तब राहुल गांधी एकमात्र राष्ट्रीय नेता थे जो वहां गए। उन्होंने अस्पतालों का दौरा किया, विभिन्न नागरिक समाज समूहों से मुलाकात की और प्रभावित नागरिकों का हालचाल जाना। अब फिर से पुंछ में, जहां गोलाबारी के कारण निर्दोष नागरिकों की जान चली गई, जबकि उनकी कोई गलती नहीं थी, राहुल गांधी ने एकजुटता व्यक्त करने और उनका दर्द समझने के लिए उनसे मुलाकात की। भारत के ऑपरेशन सिंदूर के बाद पुंछ सेक्टर में पाकिस्तान की तरफ से गोलाबारी बढ़

गई थी। भारत ने ऑपरेशन सिंदूर के तहत 7 मई को पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में नौ आतंकी ठिकानों को नष्ट कर दिया था। यह ऑपरेशन 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए घातक आतंकी हमले के प्रतिशोध में किया गया था, जिसमें आतंकवादियों ने 26 निर्दोष लोगों की हत्या कर दी थी। खेड़ा ने जोर दिया कि सभी राजनीतिक दलों के नेताओं को विपक्ष के नेता राहुल गांधी के कार्यों से सीख लेनी चाहिए। उन्होंने कहा, चाहे मणिपुर हो, पुंछ हो या पहलगाम - जहां भी नागरिक संकट का सामना करते हैं, राजनीतिक नेतृत्व को सहायता प्रदान करने और उनके घावों को भरने में मदद करने के लिए आगे आना चाहिए। विदेश मंत्री एस. जयशंकर की बर्लिन में परमाणु ब्लैकमेल के आगे न झुकने की हालिया टिप्पणी पर पवन खेड़ा ने कहा, ÷अगर हम प्रमुख वैश्विक शक्तियों को यह स्वीकार करने के लिए राजी नहीं कर पाते हैं कि पाकिस्तान आतंकवादियों को पनाह देना जारी रखता है, तो अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर जयशंकर जो कहते हैं, उसका कोई मतलब नहीं है। वह यहां सख्त बात करते हैं, लेकिन अमेरिका और चीन के सामने चुप रहते हैं।

दिल्ली-एनसीआर में भारी बारिश से जन जीवन अस्त-व्यस्त, जलभराव ने बढ़ाई मुसीबत

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर समेत देश के कई राज्यों में शनिवार-रविवार की रात तेज हवाओं के साथ भारी बारिश हुई। मौसम विभाग ने पहले ही इसे लेकर रेड अलर्ट जारी कर दिया था। कुछ घंटों की बारिश में ही दिल्ली के कई इलाकों में जबरदस्त जलभराव देखने को मिला। मौसम विभाग के अनुसार, रविवार को भी हल्की से तेज बारिश की संभावना है। अधिकतम तापमान 33 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री के आसपास रहने की उम्मीद है। वहीं, 18 किमी/घंटा या इससे अधिक तेज हवाएं चलने की संभावना जताई गई है। हालांकि, सोमवार से फिर से तापमान में वृद्धि देखने को मिलेगी। 26 मई से जून के पहले सप्ताह तक बारिश की संभावना कम जताई गई है। आने वाले दिनों में तापमान का पारा अधिकतम 40 डिग्री और न्यूनतम तापमान 28 डिग्री रहने की उम्मीद है। मौसम विभाग के अनुसार, शनिवार- रात सिर्फ दिल्ली ही नहीं बल्कि गोवा, महाराष्ट्र, पूर्वोत्तर भारत

के राज्य, लद्दाख में भी बारिश हुई है। रविवार को तमिलनाडु के कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली, तेनकासी, थेनी, तिरुप्पुर, कोयम्बटूर और नीलगिरी जिलों में एक या दो स्थानों पर हल्की से मध्यम बारिश के साथ हल्की आंधी और बिजली गिरने की संभावना है। दूसरी ओर, शनिवार-रविवार मध्यरात्रि हुई भारी बारिश के चलते दिल्ली, फरीदाबाद-नोएडा, गाजियाबाद में भी जलभराव की समस्या बनी। वसंत कुंज, आईटीओ, मिंटो ब्रिज, कनॉट प्लेस और हुमायूं रोड जैसे स्थान जलमग्न हो गए। दिल्ली के कई हिस्सों से ऐसी तस्वीरें भी सामने आई, जहां कार पानी में डूबी नजर आई। दिल्ली एयरपोर्ट पर घने बादल, तेज हवाएं और सीमित विजिबिलिटी के चलते टेकऑफ और लैंडिंग दोनों प्रभावित हुए हैं। एयरपोर्ट पर कई फ्लाइट्स देरी से संचालित की गई। दिल्ली एयरपोर्ट की ओर से रविवार को एक्स पोस्ट में लिखा गया कि दिल्ली में खराब मौसम की वजह से उड़ानों का परिचालन अस्थायी रूप से प्रभावित हुआ है। इसीलिए, यात्रियों से अनुरोध है कि वे अपनी फ्लाइट के स्टेटस जांच करते रहें, जिससे उन्हें समस्या न हो।

दिल्ली के शाहदरा में ई-चार्जिंग स्टेशन में लगी आग, चपेट में आने से दो की मौत; चार लोग झुलसे

एजेंसी

नई दिल्ली।देश की राजधानी दिल्ली के शाहदरा में ई-चार्जिंग स्टेशन में आग लग गई। आग की चपेट में आने से दो लोगों की मौत हो गई, जबकि चार लोग झुलस गए। झुलसे लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मौके पर पहुंची दमकल विभाग ने आग पर काबू पाया। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के अनुसार, रविवार सुबह करीब 6.40 मिनट पर दमकल विभाग को शाहदरा के मोती राम रोड पर राम मंदिर के पास ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन में आग लगने की सूचना मिली। सूचना मिलते ही दमकल की पांच गाड़ियां घटनास्थल पर पहुंचीं। 400 वर्ग गज के टिन शेड के नीचे ई-रिक्शा चार्जिंग स्टेशन में भीषण आग लगी थी। आग पर काबू पाने के प्रयास शुरू किए गए। दिल्ली अग्निशमन विभाग के अनुसार, दो जले हुए शव मिले है।

चार लोगों का जीटीबी अस्पताल में उपचार किया जा रहा है। इस पहले भी पिछले सप्ताह भी शाहदरा इलाके के फर्श बाजार में ई रिक्शा चार्ज करने के दौरान आग लगी थी। इस दौरान एक महिला की मौत हो गई थी जबकि पांच लोग घायल हुए थे।

नीति आयोग 10वीं गवर्निंग काउंसिल बैठक में 'विकसित भारत' पर जोर, ऑपरेशन सिंदूर को सर्वसम्मति से समर्थन

एजेंसी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में आयोजित 10वीं नीति आयोग गवर्निंग काउंसिल बैठक में 'विकसित राज्य से विकसित भारत' की अवधारणा को केंद्र में रखते हुए कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे प्रमुख क्षेत्रों पर गहन चर्चा हुई।

बैठक में सभी भागीदार राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों ने 'ऑपरेशन सिंदूर' को पूरी एकता के साथ समर्थन दिया। बैठक के बाद नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रह्मण्यम ने बताया कि प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संबोधन में तीन क्षेत्रों कृषि, शिक्षा और स्वास्थ्य पर विशेष बल दिया और राज्यों से आग्रह किया कि वे इन क्षेत्रों में संरचनात्मक सुधार और दीर्घकालिक योजनाएं बनाएं। उन्होंने यह भी कहा कि भारत एक महत्वपूर्ण मोड़ पर है और 'अब एक निर्णायक विकास यात्रा पर निकलने का समय है।' सुब्रह्मण्यम ने बताया कि 36 में से 31 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों ने बैठक में भाग लिया, जो अब तक की सबसे अधिक भागीदारी है। उन्होंने कहा कि यह दर्शाता है कि प्रतिनिधि एक सकारात्मक सोच के साथ आए थे। कर्नाटक, केरल, पश्चिम बंगाल, बिहार और पुडुचेरी के मुख्यमंत्री बैठक में शामिल नहीं हुए। पिछले वर्ष प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'विकसित राज्य' विज़न डॉक्युमेंट्स की परिकल्पना–जैसे 'विकसित बिहार', 'विकसित ओडिशा' आदि–को आगे बढ़ाते हुए इस बैठक में राज्यों को अपने-अपने विकास रोडमैप को राष्ट्रीय दृष्टिकोण से जोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान 'ऑपरेशन सिंदूर' के समर्थन में पूरी सहमति देखने को मिली। सीईओ सुब्रह्मण्यम ने इसे एक दुर्लभ उदाहरण बताया जब सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों ने बिना किसी मतभेद के एक साझा निर्णय पर सहमति जताई। नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी ने इस बात को रेखांकित किया कि यह बैठक आयोग की 10वीं वर्षगांठ के अवसर पर हो रही है। उन्होंने प्रधानमंत्री के इस विचार को दोहराया कि पिछले वर्षों में इस मंच ने सहमति निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसने सरकार की विभिन्न उपलब्धियों में योगदान दिया।

आईपीयू काउंसलिंग में बड़ी राहत

एजेंसी

नई दिल्ली। गुरु गोबिंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय (आईपीयू) ने इस बार काउंसलिंग प्रक्रिया में बड़ा बदलाव किया है। आईपीयू ने काउंसलिंग के लिए अलग से कोई फीस नहीं लेने का फैसला किया है। विश्वविद्यालय ने एक बयान में साफ किया कि नई व्यवस्था के तहत आवेदन के समय ही आवेदकों से आवेदन शुल्क और काउंसलिंग भागीदारी शुल्क के रूप में एकमुश्त 2500 रुपये लिए गए हैं। इसलिए अलग से काउंसलिंग भागीदारी शुल्क जमा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस नई व्यवस्था से छात्रों का अतिरिक्त समय बचेगा, जो पहले काउंसलिंग शुल्क के भुगतान में लगता था। अब छात्र सीधे विकल्प चयन में भाग ले सकेंगे और परिणाम प्राप्त कर सकेंगे।

आईपीयू काउंसलिंग प्रक्रिया ऑनलाइन मोड में आयोजित की जाएगी। छात्रों को अपने विकल्प चुनने और परिणाम प्राप्त करने के लिए आईपीयू की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।

महत्वपूर्ण जानकारी

- आईपीयू काउंसलिंग प्रक्रिया के दौरान छात्रों को अपने विकल्प चुनने और परिणाम प्राप्त करने के लिए आईपीयू की आधिकारिक वेबसाइट पर जाना होगा।

- एनएलटी आधारित प्रोग्राम में दाखिले के इच्छुक उम्मीदवार जो

अभी तक आवेदन नहीं कर पाए हैं, वे संबंधित प्रोग्राम की काउंसलिंग के दौरान आवेदन शुल्क और काउंसलिंग भागीदारी शुल्क के रूप में 2500 रुपये एक साथ जमा कर सकते हैं।

नीति आयोग की बैठक में हर घर नल योजना और यमुना के मुद्दे पर भी हुई चर्चाः रेखा गुप्ता

एजेंसी

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता यहां के भारत मंडपम में आयोजित नीति आयोग गवर्निंग काउंसिल की बैठक में शामिल हुईं। उन्होंने कहा कि बैठक में हर घर नल योजना और यमुना के मुद्दे पर भी चर्चा हुई। सभी संबंधित राज्यों ने यमुना के मुद्दे पर सहयोग करने की बात कही है। मुख्यमंत्री गुप्ता ने बैठक के बाद पत्रकारों को बताया कि दिल्ली में नए पर्यटक स्थलों को विकसित करने पर भी बात हुई। उन्होंने आम आदमी पार्टी पर हमला करते हुए कहा कि पिछली सरकार ने इन बैठकों में शामिल न होकर दिल्ली का बहुत नुकसान किया।

मुख्यमंत्री ने बताया कि बैठक में उपस्थित कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने एक स्वर में ऑपरेशन सिंदूर और सेना की प्रशंसा की। मुख्यमंत्रियों ने सेना और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को बधाई दी। मुख्यमंत्री ने एक्स पोस्ट में कहा कि नीति आयोग की बैठक में सहभागिता कर प्रधानमंत्री मोदी के मार्गदर्शन में विकसित भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में राज्यों की भूमिका पर विस्तृत चर्चा हुई। विकसित भारत की परिकल्पना

को साकार करने में दिल्ली की भूमिका केवल सहायक नहीं, बल्कि प्रेरणास्पद और नेतृत्वकारी स्तंभ के रूप में स्थापित करने के लिए हम पूर्णतः संकल्पबद्ध हैं। यह महज विकास की योजना नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के सपनों, संभावनाओं और सशक्त भारत के निर्माण की दिशा में एक राष्ट्रीय अभियान है। इसका हिस्सा बनना हम सभी के लिए गौरव का विषय है। दिल्ली अब प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में विकास की दिशा में अग्रणी भूमिका निभा रही है।

दिल्ली में मेगा अभियान के तहत 3,500 किलोमीटर सड़कें साफ की गईं - सीएम रेखा गुप्ता

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बताया कि 'मेगा स्वच्छता अभियान' के तहत एमसीडी ने 3,500 किलोमीटर से अधिक सड़कों की सफाई की, जिसमें सबसे अधिक सफाई रोहिणी क्षेत्र में की गई। एमसीडी द्वारा जारी प्रगति रिपोर्ट पर उन्होंने कहा कि अभियान के दौरान अतिक्रमण और गंदगी के खिलाफ मुहिम चलाई गई। अभियान के दौरान कुल 11,131 चालान जारी किए गए, जिसमें सबसे अधिक 2,994 चालान पश्चिमी जोन में किए गए। इसके अतिरिक्त, 5,932 अवैध सामग्री जब्त की गई और 186.5 किलोमीटर सड़कों को अतिक्रमण से मुक्त किया गया। 20 दिवसीय यह 'मेगा स्वच्छता अभियान' एमसीडी के सभी 12 जोन में चलाया गया, जिसमें सफाई, अतिक्रमण हटाने और चालान काटने जैसे प्रमुख कार्य शामिल थे। मुख्यमंत्री ने बताया कि दिल्ली सरकार की 'स्वच्छ दिल्ली' पहल को राजधानी के नागरिकों से जबरदस्त समर्थन मिल रहा है। एमसीडी द्वारा जारी नवीनतम आंकड़े बताते हैं कि यह व्यापक स्वच्छता अभियान जमीनी स्तर पर उल्लेखनीय परिणाम दे रहा है। उन्होंने कहा कि स्वच्छ, स्वस्थ और सुंदर दिल्ली ही विकसित दिल्ली का मार्ग है। एमसीडी द्वारा जारी जोनवार रिपोर्ट स्पष्ट रूप से दर्शाती है कि हमारी सरकार द्वारा शुरू किया गया अभियान न केवल सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है, बल्कि लोगों की जीवनशैली में भी सकारात्मक बदलाव लाया है। उन्होंने आगे बताया कि इस अभियान के तहत दिल्ली के 12 जोन (करोल बाग, सिटी एसपी, वेस्ट जोन, साउथ, सिविल लाइंस, सेंट्रल जोन, शाहदरा साउथ, शाहदरा नॉर्थ, नजफगढ़, नरेला, रोहिणी और केशव पुरम) में व्यापक सफाई और प्रबंधन गतिविधियां संचालित की गईं। इसके साथ ही, 'मेगा स्वच्छता अभियान' के तहत पूरे दिल्ली में एमसीडी के नालों की बड़े पैमाने पर सफाई की गई, जिससे मानसून के मौसम में जलभराव की समस्या से निपटने में काफी मदद मिलेगी। अब तक कुल 19,892.38 मीट्रिक टन गाद निकाली जा चुकी है, जो एक बड़ी उपलब्धि है।

धर्म की जीतः मुनका बगीचा स्थित प्राचीन शिव मंदिर की पुनर्स्थापना पर सहमति, अनशन समाप्त

मनोज नारायण भगत के नेतृत्व में चला आंदोलन सफल, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने पिलाया जूस, तोड़ा अनशन

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। हजारीबाग जिलें में स्थित मुनका बगीचा धर्मशाला परिसर स्थित प्राचीन शिव मंदिर को साजिशन तोड़े जाने के विरोध में शुरू हुआ धरना-प्रदर्शन अंततः धार्मिक आस्था की जीत के साथ समाप्त हुआ। मंदिर की पुनः स्थापना को लेकर मुनका समाज धर्मशाला कमेटी और स्थानीय जनप्रतिनिधियों के बीच आपसी सहमति बन गई है। यह समझौता शांतिपूर्ण वार्ता और सामाजिक एकजुटता का प्रतीक बन गया। कल देर रात जब मोहल्ले के लोगों को यह जानकारी मिली कि धर्मशाला में स्थित वर्षों पुराना शिव मंदिर तोड़ दिया गया है, तो पूरे इलाके में आक्रोश फैल गया। देखते ही देखते हज़ारों की संख्या में महिलाएँ, पुरुष और बच्चे मंदिर स्थल पर एकत्र होकर धरने पर बैठ गए। धरने का नेतृत्व सामाजिक कार्यकर्ता मनोज नारायण भगत और विवेक बरियार ने किया। सुबह से ही माहौल शांतिपूर्ण रहा, लेकिन भावनाओं की तीव्रता स्पष्ट रूप से झलक रही थी। शाम को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह की मध्यस्थता और प्रयासों से स्थानीय समाज के अध्यक्ष राधेश्याम अग्रवाल, अनुमंडल पदाधिकारी और धर्मशाला कमेटी के अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में एक लिखित समझौता हुआ। इसमें यह स्पष्ट किया गया कि मंदिर को उसी स्थान पर पूर्ववत स्वरूप में पुनः स्थापित किया जाएगा और आमजन के लिए पूजा-पाठ हेतु उपलब्ध रहेगा। इस ऐतिहासिक समझौते के बाद मनोज नारायण भगत ने अपना अनशन समाप्त किया। इस भावुक क्षण में वरिष्ठ कांग्रेसी नेता मुन्ना सिंह ने स्वयं अपने हाथों से उन्हें जूस पिलाकर अनशन तुड़वाया, जो सामाजिक समरसता और राजनीतिक जिम्मेदारी का अनुपम उदाहरण बन गया। इस अवसर पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता मुन्ना सिंह ने कहा, शिव मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, यह हमारी सांस्कृतिक पहचान और जनभावनाओं का प्रतीक है। इसकी पुनर्स्थापना करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था और आत्मसम्मान की पुनर्प्रतिष्ठा है। मैं आंदोलन में शामिल हर नागरिक को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने संयम, शांति और लोकतांत्रिक मूल्यों के तहत अपनी बात को मजबूती से रखा। उन्होंने आगे कहा, कांग्रेस पार्टी हमेशा से धार्मिक स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता और जनसंवेदना की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध रही है। यह आंदोलन किसी एक वर्ग या संगठन की नहीं, पूरे समाज की जीत है एक ऐसी जीत जो संवाद, एकजुटता और सहयोग की शक्ति को दर्शाती है।

प्रदीप प्रसाद के प्रयास से नूरा चौक हुआ रोशन, स्टेडियम लाइट का हुआ लोकार्पण

- विकास की ओर एक और कदम विधायक प्रदीप प्रसाद ने किया स्टेडियम लाइट का उद्घाटन
- जनता की सुविधा हमारी प्राथमिकता है, विकास कार्य निरंतर जारी रहेंगेः प्रदीप प्रसाद

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। हजारीबाग सदर क्षेत्र के विकास की कड़ी में एक और महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने रविवार को नूरा शिव मंदिर चौक के पास 12 मीटर ऊँची हाई स्टेडियम लाइट का विधिवत उद्घाटन किया। यह कार्य उनकी विधायक निधि से कराया गया है, जिसका उद्देश्य इस प्रमुख चौक और उसके आस-पास के क्षेत्रों में रात्रिकालीन रोशनी को बेहतर बनाना तथा लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। स्थानीय लोगों ने लंबे समय से इस स्थान पर समुचित रौशनी की माँग की थी, क्योंकि रात्रि में यहाँ से गुजरना असुरक्षित और असुविधाजनक हो जाता था। अब इस हाई मास्ट लाइट के लग जाने से न सिर्फ आवाजाही में सहूलियत होगी, बल्कि क्षेत्र में असामाजिक गतिविधियों पर भी अंकुश लगेगा। स्टेडियम लाइट की तीव्र रौशनी दूर-दूर तक फैलेगी, जिससे आसपास के कई मार्ग और गलियाँ भी आलोकित हो सकेंगी। इस शुभ अवसर पर बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि एवं स्थानीय नागरिक उपस्थित थे। मुख्य रूप से सदर पश्चिमी मंडल अध्यक्ष रणधीर पाण्डेय, पूर्व वार्ड पार्षद बॉबी कुमार, वर्तमान वार्ड पार्षद विजय प्रसाद, नवल किशोर कुशवाहा, गोपाल राणा, राजू राणा, राजेश कुमार, महेश प्रसाद कुशवाहा, विकास किलो, बबलू, मन्नू राणा, परमेश्वर गोप एवं राजेश यादव की गरिमामयी उपस्थिति रही। विधायक प्रदीप प्रसाद ने अपने संबोधन में कहा की जनता की सुविधा और क्षेत्र की सुरक्षा के लिए जो भी आवश्यक होगा, वह किया जाएगा। मेरी प्राथमिकता हमेशा यह रही है कि विकास कार्य धरातल पर दिखे और आम जन तक उसका लाभ पहुँचे। यह लाइट न केवल शहर की सुंदरता को बढ़ाएगी, बल्कि रात्रि में काम करने वालों, विद्यार्थियों और स्थानीय व्यापारियों को भी लाभ देगी। स्थानीय नागरिकों ने इस पहल के लिए विधायक का आभार जताया और भविष्य में भी ऐसे जनहितकारी कार्यों की अपेक्षा जताई। कार्यक्रम के अंत में सभी के द्वारा एक स्वर में क्षेत्र के समग्र विकास हेतु सामूहिक सहयोग और समर्पण की भावना को दोहराया गया।

वन विभाग की बड़ी कार्रवाईः 21 बोटा सेमल लकड़ी के साथ एक पिकअप वैन जब्त, एक गिरफ्तार

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
साहिबगंज। वन विभाग ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए 21 बोटा सेमल लकड़ी से लदी एक पिकअप वैन को जब्त किया है। यह कार्रवाई तलझारी प्रखंड अंतर्गत कैरासोल-बांझी रोड स्थित कचहरी मौजा के निकट की गई। मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार किया गया है।
गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान की जा रही है एवं पूछताछ किया जा रहा है। वन विभाग की टीम ने गुप्त सूचना के आधार पर यह छापेमारी की। छापेमारी के दौरान प्रभारी रेंजर श्री पंचम दुबे, वनपाल राणा रंजीत, तथा वनरक्षी पप्पू कुमार यादव, प्रेम कुमार, राजेश टुडू सहित अन्य वनकर्मी उपस्थित थे। यह आशंका जताई जा रही है कि लकड़ी की अवैध कटाई कर उसे बाहर भेजने की तैयारी थी। फिलहाल, आरोपी से पूछताछ जारी है और वन विभाग इस मामले की गहन जांच कर रहा है। वन विभाग ने स्पष्ट किया है कि वन संपदाओं की अवैध तस्करी करने वालों के खिलाफ ऐसी सख्त कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

बुढ़वा महादेव शिव मंदिर जाने के रास्ता पगार गांव में जल जमाव लोगों परेशानी

बड़कागांव संजय कुमार
बड़कागांव। प्रखंड अंतर्गत बुढ़वा महादेव जाने वाला मार्ग सिरमा पंचायत स्थित पगार गांव में सड़क पर भारी जल जमाव देखा जा रहा है। जिसके कारण ग्रामीणों को कई परेशानियों से गुजरना पड़ रहा है । रोड किनारे नाली का निर्माण नहीं होने का समस्या का कारण बताया जा रहा है। इसके पूर्व इस समस्या की समाधान नाली निर्माण के लिए बड़कागांव अंचल की ओर से जमीन की मापी के पश्चात, रोड किनारे बसे ग्रामीणों को चार-चार फीट जमीन छोड़ने के लिए नोटिस भी जारी किया गया था। घरों में नोटिस भी चिपकाआ गया था, परंतु लोगों ने जमीन नहीं छोड़ा और मामले को अनदेखी कर दिया। जिसके कारण ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बताते चलें कि रोजाना सैकड़ो शिव भक्त श्रद्धालु बुढ़वा महादेव में जलाभिषेक पूजा अर्चना के लिए श्रद्धालुओं का आना जाना इसी रोड से होता है। कुछ दिनों के बाद सावन का महीना भी आने वाला है ।प्रशासन को इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। ताकि आपसी वाद-विवाद से बचा जा सके। वहीं पगार गांव के अलावा छवनिया गांव में भी सड़क कीचड़ में तब्दील हो गया है इस पर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने मन की बात के 122वें संस्करण को कार्यकर्ताओं और आम नागरिकों के साथ सामूहिक रूप से सुना

प्रधानमंत्री का संदेश आत्मनिर्भर भारत और जनभागीदारी का संकल्प हैः प्रदीप प्रसाद

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। भारतीय जनता पार्टी के हजारीबाग सदर विधायक प्रदीप प्रसाद ने रविवार को अपने सेवा कार्यालय परिसर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात के 122वें संस्करण को भाजपा पदाधिकारियों, महिला मोर्चा, युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं तथा आम नागरिकों के साथ सामूहिक रूप से सुना। इस अवसर पर एक सकारात्मक और विचारोत्तेजक वातावरण बना रहा, जिसमें लोगों ने पूरे ध्यान और आत्मीयता से प्रधानमंत्री के विचारों को ग्रहण किया। कार्यक्रम के उपरांत विधायक श्री प्रसाद ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम देश के प्रत्येक नागरिक को जोड़ने वाला संवाद है। आज उन्होंने आत्मनिर्भर भारत, महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण तथा सहकारी संघवाद जैसे ज्वलंत और समसामयिक विषयों पर प्रेरणादायी विचार रखे। यह कार्यक्रम न केवल हमारी सोच को दिशा देता है, बल्कि यह हमें हमारे कर्तव्यों की याद भी दिलाता है। प्रधानमंत्री द्वारा उल्लेखित ऑपरेशन सिंदूर पर विधायक श्री प्रसाद ने कहा कि यह मिशन भारत की सैन्य शक्ति, आत्मनिर्भर रक्षा तकनीक और आतंकवाद के खिलाफ मजबूत नीति का प्रतीक है। यह दर्शाता है कि भारत अब किसी पर निर्भर नहीं, बल्कि संकट की घड़ी में अपने दम पर निर्णायक कार्यवाही करने में सक्षम है। श्री मोदी द्वारा गुजरात के गिर वन में शेरों की संख्या में हुई ऐतिहासिक वृद्धि का उल्लेख करते हुए श्री प्रसाद ने इसे वन्यजीव संरक्षण में सरकार और समाज की साझी सफलता बताया। उन्होंने कहा कि यह उपलब्धि दर्शाती है कि जब सरकार की नीतियां दूरदर्शी होती हैं और समाज उसका सक्रिय भागीदार बनता है, तब ऐसे असंभव कार्य भी संभव हो जाते हैं।
कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने प्रधानमंत्री के विचारों से प्रेरणा लेते हुए क्षेत्र में सामाजिक, पर्यावरणीय और जन कल्याण से जुड़ी गतिविधियों में बढ़-चढ़कर भाग लेने का संकल्प लिया। इस अवसर पर झारखंड ओबीसी मौर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अमरदीप यादव, जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह, भाजपा नेता हरिश श्रीवास्तव, दिनेश सिंह राठौर, मनोज सिन्हा, युवा मौर्चा के जिला अध्यक्ष राजकरण पाण्डेय, महिला जिलाध्यक्ष मनोरमा राणा, मंडल अध्यक्ष रणधीर पाण्डेय, राजेश ठाकुर सहित सकैडो लोग उपस्थित थे।

सरना धर्म कोड लागू करने की मांग को लेकर झामुमो का एकदिवसीय धरना कल

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। सरना धर्म कोड/आदिवासी धर्म कोड लागू किए बिना केंद्र सरकार के द्वारा जाती आधारित जनगणना कराये जाने के खिलाफ उपायुक्त कार्यालय के समक्ष झारखंड मुक्ति मोर्चा केंद्रीय समिति के निर्देशानुसार कल मंगलवार को एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। आयोजित कार्यक्रम की जानकारी साझा करते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय कार्यकारणी सदस्य सह जिला अध्यक्ष झामुमो हजारीबाग संजीव कुमार बेदिया ने बताया कि सरना धर्म कोड/आदिवासी धर्म कोड लागू किए बिना केंद्र सरकार के द्वारा जाती आधारित जनगणना किये जाने के विरूद्ध झारखंड मुक्ति मोर्चा के द्वारा उपायुक्त कार्यालय के समक्ष एक दिवसीय धरना कार्यक्रम आयोजित किया गया है जिसमें झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय सदस्य, जिला समिति के पदाधिकारी गण, वरिष्ठ नेतागण,सभी प्रखंड के अध्यक्ष सचिव ,20 सूत्री अध्यक्ष उपाध्यक्ष एवं सदस्य, महिला मोर्चा, युवा मोर्चा के सभी पदाधिकारीगण एवं सदस्य गण,आनुषंगिक इकाई के सभी पदाधिकारी सभी प्रकोष्ठ के सदस्य गण सक्रिय कार्यकर्ता शामिल होंगे। आदिवासीयों की लंबे समय से सरना धर्म कोड की मांग को लेकर श्री बेदिया ने कहा कि सरना धर्म कोड लागू करने की मांग को लेकर झारखंड मुक्ति मोर्चा के द्वारा एकदिवसीय धरना प्रदर्शन किया जाएगा। श्री बेदिया ने कहा कि सरना धर्म कोड झामुमो की कोई नयी मांग नहीं है। झामुमो हमेशा से ही इसे लागू करवाने की मांग करती रही है, परंतु केंद्र सरकार के उदासीन रवैये के कारण यह अब तक लागू नहीं हो पाया है। उन्होंने कहा कि जातिगत जनगणना केंद्र सरकार द्वारा कराये जाने की बात कही गयी है। इसलिए जनगणना से पहले इस सरना धर्मकोड को लागू करवाने का काम भी होना चाहिए।

सत्ता का दुरुपयोग केंद्र की सरकार कर रही हैः रेणु कुमारी

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। हजारीबाग शहर के कार्मल चौक स्थित पैराडाइज रिसॉर्ट में हजारीबाग कांग्रेस कमेटी के द्वारा जिला स्तरीय संविधान बचाओ सभा कार्यक्रम आयोजित की गई जिसमें बतौर मुख्य अतिथि कांग्रेस के प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष सह हजारीबाग के प्रभारी जलेश्वर महतो, कांग्रेस के राष्ट्रीय सचिव सह बंगाल के सह प्रभारी अंबा प्रसाद, कांग्रेस के पूर्व हजारीबाग लोकसभा एवं मांडू विधानसभा प्रत्याशी जयप्रकाश भाई पटेल, सदर विधानसभा प्रत्याशी मुन्ना सिंह, कांग्रेस ओबीसी मोर्चा प्रदेश सचिव रेणु कुमारी, प्रदेश महासचिव विनोद कुशवाहा, प्रदेश उपाध्यक्ष भीम कुमार सहित कई दिग्गज कांग्रेसी नेता शामिल हुए। इस मौके पर रेणु कुमारी ने कहा कि देश के आज हालात ऐसे बने हुए हैं कि संविधान पर खतरा मंडराता नजर आ रहा है, लोगों से बोलने की आजादी छीनी जा रही है, सत्ता का दुरुपयोग केंद्र की सरकार कर रही है। ईडी, सीबीआइ ,इनकम टैक्स और चुनाव आयोग जैसी संस्थाओं का दुरुपयोग किया जा रहा है। लोगों के मुद्दों को गायब किया जा रहा है और तानाशाही के रूप में सरकार चलाई जा रही है और संविधान को बार-बार तोड़ने की कोशिश की जा रही है। संविधान को नहीं मानने वाले लोग आज सत्ता में बैठे हैं इसलिए संविधान बचाने के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के आह्वान पर पुरे देश भर में संविधान बचाओ रैली और सभा कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं और संविधान की सुरक्षा को लेकर कांग्रेस पार्टी आवाज बुलंद कर रही है।

संक्षिप्त समाचार

लोकसभा अध्यक्ष पहुंचे झारखंड तो एयरपोर्ट में ही हजारीबाग सांसद ने किया आत्मीय अभिनंदन

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग/रांची। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला रविवार की सुबह अपने झारखंड दौरे के लिए भगवान बिरसा मुंडा एयरपोर्ट रांची पहुंचे। उनके पहुंचने से पूर्व यहां पूर्व से ही मौजूद हजारीबाग लोक सभा क्षेत्र के सांसद मनीष जायसवाल ने लोकसभा अध्यक्ष बनने के बाद पहली बार भगवान बिरसा मुंडा की धरती पर पधारे ओम बिरला का पुष्पगुच्छ भेंटकर आत्मीय अभिनंदन किया। लोकसभा अध्यक्ष अपने झारखंड दौरे के क्रम में रांची और जमशेदपुर में आयोजित कई कार्यक्रमों में शामिल होंगे। मौके पर सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि यह हम सभी झारखंडवासियों के लिए हर्ष और गर्व का क्षण है कि लोकतंत्र के सर्वोच्च सदन के अध्यक्ष हमारे बीच पधारे हैं।

गीतकार संगीतकार व पेंटर के लिए झारखंड सरकार अच्छी नीति बनाएं, जिससे उनकी माली हालत में सुधार हो- सदानंद महतो

तोपचांची। दुमदुमी के पीएम श्री स्कूल के चार दिवारी में झारखंड प्रदेश के लोकप्रिय पेंटर श्री महावीर सामी ने झारखंडी कला संस्कृति को बेहतर तरीके से दिखाने का प्रयास किया है. महावीर जी को कला से अद्भुत प्रेम है. उनकी पेंटिंग से झारखंड प्रदेश के परब,त्यौहार,भाषा भाषी, पहनावा, जीवन शैली, खानपान के अलावा झारखंड आंदोलन के शीर्ष नेतृत्व को दर्शाता है.उनकी कला से झारखंड की खूबसूरती दिखती है. गांव के चौपाल से लेकर विधानसभा तक की चमक दिखती है. आज नरकोपी ग्राम वासियों ने उन्हें बुके, शाल, व मिठाई खिलाकर बधाई दी. इस मौके पर आजसू नेता सदानंद महतो ने कहा कि झारखंड सरकार के कलाकार, संगीतकार, गीतकार,व पेंटर के लिए नई व अच्छी नीति बननी चाहिये. जिससे उनका घर परिवार का भरण पोषण हो सके.प्रदेश के पेटंरों की माली हालत ठीक नहीं है, उन्हें उचित सम्मान सरकार दे. इस अवसर पर अनंत लाल महतो, विकास महतो, छेदीलाल महतो, योगेश महतो, लीला महतो राजेश महतो, उर्मिला देवी आदि ग्रामीण मौजूद थे।

वन विभाग के लापरवाही से कभी भी हो सकती है अप्रिय घटना

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। सदर प्रखंड अंतर्गत ग्राम चपवा के रास्ते मैं लगे बाँस के पेड़ तेज हवा और बारिश से भंडारी दाना फैक्ट्री के नजदीक जो ग्राम चपवा भेलवारा सड़क तय करती है उसी मोड़ के अगल-बगल बाँस लगाई गई है तेज हवा और बारिश के चलते बाँस टूट कर झुक गए हैं और सड़क जाम की स्थिति में आ गई है दो पहिए वाहन किसी तरह से निकल जाती है मगर चार पहिए बड़ी गाड़ियो को दिक्कत उठना पड़ता है ग्रामीणो का आवागमन सडक होते हुए जाम लग जाती है तीन दिन हो चुके हैं लेकिन वन विभाग का आंख अभी तक नहीं खुली जब कोई घटना होगी तब जाकर इनकी नींद खुलेगी यह जानकारी खतियानी परिवार के महासचिव मोहम्मद हकीम ने,दी और वन विभाग से मांग की,कि जल्द से जल्द टूटे एवं झुके बांसों को छटनी कर के सड़क को क्लियर करें।

शंभू नाथ अग्रवाल से मिले चेंबर के पदाधिकारी, उत्तम स्वास्थ्य की कामना की

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। फेडरेशन ऑफ हजारीबाग चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के अध्यक्ष एवं अधिवक्ता शंभू नाथ अग्रवाल पिछले महीने 26 तारीख को हृदय आघात के बाद बेंगलुरु के नारायण अस्पताल में सफल शल्य चिकित्सा के बाद हजारीबाग आगमन पर उनके कहानी बाजार स्थित आवास पर चेंबर के सचिव राकेश ठाकुर उपाध्यक्ष सुबोध कुमार एवं समाजसेवी चंद्र मोहन पटेल पहुंचकर हाल-चाल लिया एवं उनके शीघ्र और उत्तम स्वास्थ्य की कामना की।

संक्षिप्त समाचार

आज दिनांक 25 मई 2025 को बीज दिवस के अवसर पर कोडरमा जिला अंतर्गत कषि विज्ञान केन्द्र जयनगर में धान बीज प्रभेद CR-320 (120दिन) का वितरण

आदिवासी एक्सप्रेस

कोडरमा। आज दिनांक 25 मई 2025 बीज दिवस के अवसर पर कोडरमा जिला अंतर्गत कषि विज्ञान केन्द्र जयनगर में धान बीज प्रभेद CR-320 (120दिन) का वितरण किया गया। 11किसान के बीच प्रत्यक्षन हेतु बीज का वितरण किया गया। जिसमें जिला कृषि पदाधिकारी एवं केवीके वैज्ञानिक डॉ चंचला कुमारी उपस्थित थी। केवीके जयनगर में बिक्री हेतु निम्नलिखित धान उपलब्ध है , जिसमें 1-CR-320@55Rs-120days,
2- सुगंधा
बासमती@zzRs-vwzdays शामिल हैं। इसके अलावा केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा धान बीज का बुआई एवं पानी की उपलब्धता के आधार पर किसानों को बीज बुआई एवं देखरेख के संबंध में जानकारी दिया गया।

हजारीबाग झील में अन्नदा कॉलेज के इको क्लब ने चलाया स्वच्छता अभियान

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। अन्नदा कॉलेज, हजारीबाग के इको क्लब की टीम ने हजारीबाग झील परिसर में सफाई अभियान चलाया। इस अभियान का नेतृत्व डॉ. मीना श्रीवास्तव, डॉ. आकाश गोराई और डॉ.प्रेरणा शर्मा ने किया। अभियान का मुख्य उद्देश्य झील क्षेत्र को स्वच्छ और प्लास्टिक मुक्त बनाना था। छात्रों ने अपने हाथों में झाड़ू और कचरा उठाने की थैली लेकर झील क्षेत्र की सफाई की। इस दौरान छात्रों ने जागरूकता स्लोगन के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया।

प्रिंसिपल इंचार्ज डॉ. नीलमणि मुखर्जी ने छात्रों के इस प्रयास की सराहना की और ऐसे अभियानों को युवाओं के लिए प्रेरणादायक बताया।

इस अभियान में युवराज, प्रभा, आकांक्षा, नैंसी, आयुष, सचिन, आदित्य, श्रीकांत, सोनू, शिवानी, मानसी, आशीष,आकाश,शबाना सहित इको क्लब के अन्य सक्रिय सदस्य शामिल हुए।

झारखंड के सभी जिले में डॉ बीआर अंबेडकर पुस्तकालय भवन निर्माण किया जाएगा

आदिवासी एक्सप्रेस

बड़कागांव। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने झारखंड के सभी जिलों में भारतीय संविधान निर्माता बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर आधुनिक पुस्तकालय भवन पूरे झारखंड में निर्माण कराने की निर्णय की झारखंड मुक्ति मोर्चा ने खुशी जाहिर किया है। झारखंड मुक्ति मोर्चा के जिला अध्यक्ष सह केंद्रीय कार्यकारिणी सदस्य संजीव कुमार बेदिया एवं झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष सह झारखंड श्रमिक संघ जिला सचिव संजय कुमार सिंह ने मुख्यमंत्री के निर्णय को बेहतर एवं सराहनीय प्रयास बताया है। मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त करते हुए कहा की हेमंत सोरेन यहां के लोगों के लिए एक से बढ़कर एक कल्याणकारी योजना लाकर विकास करने का कार्य कर रहे हैं। पुस्तकालय खुलने के पश्चात हजारों विद्यार्थियों को लाभ मिलेगा।

बालूमाथ में मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत प्रशिक्षण शिविर कल

संवाददाता राम कुमार

बालूमाथ। बालूमाथ प्रखंड कार्यालय में 27 मई दिन मंगलवार को प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाना है.उक्त प्रशिक्षण शिविर दीनदयाल कौशल केंद्र अंतर्गत मुख्यमंत्री सारथी योजना के तहत आयोजित किया जा रहा है। जिसका उद्देश्य युवाओं को रोजगार से जुड़ी प्रशिक्षण प्रदान करना है.जिससे वे अपने कौशल को विकसित कर सकें और रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकें.साथ ही युवाओं को आत्मनिर्भर बनाना भी उस प्रशिक्षण शिविर का उद्देश्य है जिससे वे अपने भविष्य को बेहतर बना सकें.बालूमाथ प्रखंड विकास पदाधिकारी सोमा उरांव ने लोगों से अपील की है कि वे इस शिविर में भाग लें और अपने कौशल को विकसित करें.इससे उन्हें रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद मिलेगी और वे अपने भविष्य को बेहतर बना सकेंगे।बताते चलें कि प्रबंधक क्रेंडल कौशल केंद्र की प्रोजेक्ट मैनेजर प्रवीण स एंम मोबलाइजेशन हैंड प्रशांत तिवारी ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में उम्र सीमा 18 वर्ष से लेकर 35 वर्ष तक के युवक एंम युवतीयों को चयन किया जाएगा।उन्होंने आमजनों से अपील किया है कि इस शिविर में अधिक से अधिक संख्या में भाग ले।

वित्त मंत्री, सांसद ने 20 करोड़ की लागत से सड़क निर्माण कार्य का किया शिलान्यास

मेदिनीनगर। पाटन झारखंड सरकार के वित्त मंत्री सह पाटन छतरपुर विधायक राधा कृष्ण किशोर, व पलामू सांसद विष्णु दयाल राम ने पाटन में 20 करोड़ की लागत सड़क निर्माण कार्य योजना का शिलान्यास किया। शिलान्यास करने के उपरांत पाटन बाजार में मंत्री राधा कृष्ण किशोर व पलामू सांसद बीडी राम ने ग्रामीण जनता के बीच जन सभा कर संबोधित किया। इस सभा के दौरान सांसद बीडी राम ने कहा कि क्षेत्र में विकास के मुख्य मार्ग सड़क है। यह सड़क कजरी पाटन होते पदमा मनातू से बिहार के रास्ते जाती है। जो पूर्व में वर्ष 2011-12 में बनाया गया था। लेकिन वर्तमान में इस सड़क की जर्जर हालत हो चुकी थी। वर्तमान में झारखंड सरकार ने नया सड़क बनाने का निर्णय लिया। उन्होंने बताया कि पाटन छतरपुर में 17 सड़के की निर्माण शीघ्र होने वाला है। पाटन क्षेत्र में प्रधानमंत्री जनमन योजना अंतर्गत आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र में 21 सड़कों का निर्माण जल्द होगा। पलामू संसदीय क्षेत्र में जनमन योजना के तहत एक अरब 92 करोड़ की लागत से 74 सड़कों का केंद्र से स्वीकृति दी गई है। सांसद ने सोलर पावर प्लांट लगाने के लिए जमीन का मांग सरकार से कर रहे हैं। इन्होंने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विकसित देश बनाने का संकल्प है 2047 तक भारत देश एक विकसित देश की पहचान में रहेगा।शिलान्यास के मौके पर मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने कहा-: वित्त मंत्री राधा कृष्ण किशोर ने शिलान्यास के मौके पर जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि एक जीते हुए जनप्रतिनिधि का उम्मीद होता है कि पाटन छतरपुर के जनता के बीच विकास हो। उन्होंने कहा कि हमारे बाबा चार बार विधायक बने, हम पांच बार विधायक बने और छठा बार चुनाव जीतकर झारखंड सरकार के वित्त मंत्री बने। हमें जो जनता वोट दिया उनका भी विधायक, मंत्री हैं और जो वोट नहीं दिया उसका भी विधायक मंत्री हैं। मंत्री ने कहा कि कजरी, पाटन,पदमा सड़क का जीर्णोद्धार गुणवत्तापूर्ण बनेगी, इन्होंने यह भी कहा कि बहुत जल्द ही बैरिया से सगुना पथ का चौड़ीकरण कराया जाएगा।सिरमा से लेस्लीगंज तक सड़क निर्माण पूर्ण हो जाने पर आवागमन करने में सुविधा मिलेगी। उन्होंने पाटन छतरपुर विकास के लिए अमानत बराज को चालू करने के लिए सिंचाई विभाग के अभियंता टीम से बात की है। जिसका लागत 900 करोड़ की योजना का प्रस्तावित किया गया है। वित्त मंत्री ने पाटन छतरपुर विधानसभा क्षेत्र के शिक्षा पर सवाल उठाते हुए कहा कि झारखंड सरकार के शिक्षा मंत्री से आगरा किया है कि पाटन में 1 डिग्री कॉलेज की स्थापना की जाए। अपने विधानसभा क्षेत्र में सिंचाई सुविधा के लिए बेलाही, बेटी बांध बागमन्वा की सिंचाई योजना उपलब्ध कराने को कहा। इस दौरान मंत्री ने कहा कि 5 वर्षो में पाटन छतरपुर में मुख्यमंत्री ग्राम सड़क योजना, सेतुः योजना से पुल,पुलिया की निर्माण कराया जायेगा, मईया सम्मान योजना पर मंत्री ने कहा कि गरीब बहू बेटी को अब हाथ किसी के आगे पसारना नहीं है। सरकार सभी को महीने में ?2500 दे रही है। जिससे महिलाएं अपने खुद पर आत्मनिर्भर रहेगी। मंत्री ने कहा कि हफ्ते हफ्ते तक छतरपुर पाटन विधानसभा क्षेत्र का विकास करेंगे। जनसभा कार्यक्रम की संचालन पूर्व मुखिया अखिलेश पांडे ने किया। मोके पर प्रमुख सोभा देवी, अंचलाधिकारी राकेश श्रीवास्तव, जिला परिषद सदस्य संग्राम सिंह, कांग्रेस वरिष्ठ नेता दीनानाथ तिवारी, एमो ललन पासवान, पूर्व जिला परिषद भोला सिंह, पूर्व जिला परिषद मुक्तेश्वर पांडे, ईश्वरीपाण्डेय,महेन्द्र पाण्डेय, पूर्व मुखिया राकेश दुबे, संवेदक शैलेंद्र सिंह, अशोकसोनी, शक्ति शंकर गुप्ता, विभिन्न पंचायत के मुखिया, समेत कार्यकर्ता मौजूद थे। युवा नेता प्रशांत किशोर ने कहा कि बहुत लड़ाई लड़ के जनता के लिए यह सड़क की स्वीकृति दिलाई है। सड़क बन जाने पर रोजी रोजगार की सुविधा बढ़ जाएगी। हर जन प्रतिनिधि को जनता की सुख-दुख में हमेशा खड़ा रहना चाहिए।1) रोड का शिलान्यास, कजरी पाटन मनातू पथ की मरम्मती लंबाई 19 किमी, लागत 12 करोड़ 18 लाख रुपया, 2) सिरमा से सहदेवा, मुर मुशी तक पथ मरमति 1करोड़ 99 लाख की लागत से 3) महिंद्रा मोड़ से काके, लोईगा तक पथ मरमति पांच करोड़ उनतीस लाख की लागत से।

ग्रीष्मावकाश के मौके पर अविनाश देव ने बच्चों को दिया जीवन-ज्ञान

मेदिनीनगर। संत मरियम विद्यालय के चेयरमैन अविनाश देव ने विद्यालय में ग्रीष्मावकाश की घोषणा के अवसर पर छात्रों को सिर्फ शैक्षणिक ही नहीं, बल्कि जीवनोपयोगी और नैतिक शिक्षाएं भी दीं। उन्होंने छात्रों को छुट्टियों के दौरान सतर्क रहने और आत्म-विकास पर ध्यान देने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि वर्ष भर की पढ़ाई के बाद विद्यार्थी ग्रीष्मावकाश का बेसब्री से इंतजार करते हैं। तपती दोपहर में विद्यालय जाना और फिर कड़ी पढ़ाई, बच्चों के लिए मानसिक थकान का कारण बनता है। विद्यालय नियमावली के अनुसार एक महीने का अवकाश घोषित किया गया है।

अवकाश की घोषणा से पूर्व अविनाश देव ने बच्चों से संवाद करते हुए उन्हें वर्तमान सामाजिक परिवेश के प्रति जागरूक किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार सोशल मीडिया, टीवी, अखबारों के माध्यम से आए दिन ऐसी खबरें सामने आती हैं, जो दिल दहला देने वाली होती हैं। उन्होंने चेताया कि गर्मी की छुट्टियों में अधिकांश बच्चे हिल स्टेशन, जलप्रपात, बाइक राइडिंग, मोबाइल गेम्स या रिश्तेदारों के घरों में समय बिताते हैं, जबकि कुछ बच्चे आवारागर्दी में भी समय गंवा देते हैं।

उन्होंने बच्चों को आगाह किया कि कई बार एक छोटी-सी गलती जीवन भर की सजा बन जाती है, जैसे जलप्रपात में नहाते समय मौत, बाइक हादसे, मोबाइल के दुरुपयोग से उत्पन्न संबंधों की समस्याएं, स्क्रीन पर समय बिताने से पढ़ाई से दूरी और मानसिक तनाव जैसी घटनाएं बच्चों का भविष्य बिगाड़ सकती हैं।

अविनाश देव ने छात्रों से आग्रह किया कि वे इस अवकाश को आत्म-मंथन, आत्म-शिक्षा और अच्छे संस्कारों को अपनाने में लगाएं। उन्होंने कहा कि भारत की भूमि ज्ञान की भूमि रही है। बुद्ध, महावीर, विवेकानंद, डॉ. राजेंद्र प्रसाद और डॉ.ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे महान व्यक्तित्व इसी भूमि पर जन्मे हैं। आप जैसे छात्र ही भारत को पुनः विश्वगुरु बना सकते हैं। अंत में, उन्होंने कहा कि छुट्टियों में कोई ऐसा कार्य न करें, जिससे विद्यालय या परिवार की छवि धूमिल हो। उन्होंने बच्चों से किताबों से प्रेम करने और भविष्य निर्माण की दिशा में बढ़ने का आग्रह किया।

बड़का गांव में बी स्कैन अल्ट्रासाउंड केंद्र का उद्घाटन

बड़कागांव संवाददाता

बड़कागांव। बड़कागांव प्रखंड में बी स्कैन अल्ट्रासाउंड केंद्र का उद्घाटन थाना रोड बड़कागांव नियर हजरत दाता बाबा मजार समीप किया गया।केंद्र का उद्घाटन मुख्य अतिथि डॉक्टर शिखा खंडेलवाल के द्वारा फीता काटकर किया गया।डॉ शिखा खंडेलवाल ने कहा कि बड़कागांव में इस प्रकार के अल्ट्रासाउंड का पहली बार केंद्र का संचालन होगा। जिससे क्षेत्र के लोगों को उचित जांच रिपोर्ट मिल पाएगा ।केंद्र के संचालक अमरजीत कुमार एंव रंजीत पंडित ने संयुक्त रूप से कहा कि इस केंद्र में अत्याधुनिक मशीन के द्वारा उचित फीस लेकर अल्ट्रासाउंड से संबंधित सभी प्रकार का जांच किया जाएगा। उद्घाटन कार्यक्रम में मुख्य रूप से डॉ अनामिका दीप, डॉक्टर रंजीत कुमार, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे ,धीरज सिंह, विमलेश पांडे, सुजीत नगवाला, इंटक जिला अध्यक्ष कजरु साव, अमित कुमार, परमेश्वर कुमार, गौतम कुमार, नरेंद्र कुमार, मधु कुमारी, संदीप पंडित, सूरज कुमार, विकास रंजन, रोहित सिंह, पंकज ठाकुर, चिंतामणि वर्मा, इरशाद अली, सफर रजा, मनीष सिंह सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

भाजपा नेता जीतन राम ने रक्तदान कर मानवता की एक मिसाल पेश की

आदिवासी एक्सप्रेस / संतोष कुमार दास

सिमरिया (चतरा)। थाना क्षेत्र के हुरनाली गांव के निवासी सुरेंद्र कुमार जिनकी तबीयत काफी बिगड़ गई थी। उन्हें जीवन रक्षा के लिए रक्त की आवश्यकता थी। ऐसे में सिमरिया विधानसभा क्षेत्र के भारतीय जनता पार्टी के नेता जीतन राम जी को जैसे ही इसकी सूचना मिली होने बिना विलंब किए सुरेंद्र कुमार के जीवन रक्षा के लिए संकल्पित भाव से जाकर अपना रक्तदान कर मानवता का परिचय दिया। ऐसे कम लोग मिलते हैं जो मरीज की ऐसी विषम परिस्थिति को संवेदना पूर्वक संवेदनशील होकर समझते हैं। जीतन राम ने जैसे ही यह खबर सुनी बिना विलंब किए हुए सुरेंद्र कुमार की मदद के लिए आगे आए। यह जीतन राम का 11वां रक्तदान था। इससे पूर्व इन्होंने 10 लोगों को रक्तदान कर उनके जीवन की रक्षा की है। उनके इस सहानुभूति पूर्ण संवेदनशीलता की जितनी भी प्रशंसा की जाए वह काम है। भारतीय जनता पार्टी का एक सक्रिय कार्य करता होने के साथ-साथ समाज सेवा के प्रति इनका समर्पण भाव वास्तव में उनके व्यक्तित्व के आदर्श को दर्शाता है। जीतन राम जी के ऐसे पुनीत कार्य की लोगों ने भूरी भूरी सराहना की। स्वयं जीतन राम जी ने कहा कि नेतृत्व करना एक अलग बात है और मानवता के नाते सामाजिक सरोकारों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करना मेरा पहला कर्तव्य है। मैं मानवता की सेवा के लिए समर्पित भाव से तत्पर रहता हूं। रक्तदान जीवन दान है और मेरे रक्तदान से यदि किसी के जीवन और प्राणों की रक्षा होती है तो इससे बड़ा पुण्य का कोई काम नहीं होता। मैं सभी लोगों को इस बात के लिए प्रेरित करता हूं की मानवता के रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए।

बालूमाथ का अर्जुन राम उर्फ वृक्ष मोची दो साल से लापता, पत्नी उर्मिला देवी ने लगाई न्याय की गुहार

बालूमाथ। देश में मानव तस्करी की जड़ें किस कदर गहरी हो चुकी हैं,इसका ताजा उदाहरण झारखंड के लातेहार जिले के बालूमाथ प्रखंड से सामने आया है। यहां के अम्बेडकर नगर (हरिजन मोहल्ला) निवासी दलित मजदूर अर्जुन राम उर्फ वृक्ष मोची पिछले दो वर्षों से लापता है। पीड़ित परिजनों का आरोप है कि उसे एक लेबर ठेकेदार द्वारा धोखे से चेन्नई ले जाकर गायब कर दिया गया है।

अर्जुन राम की पत्नी उर्मिला देवी ने बताया कि मई 2023 में मुरपा गांव निवासी लेबर दलाल मकसूद मियां उनके पति को मजदूरी दिलाने के बहाने चेन्नई ले गया था। लेकिन उसके बाद से अर्जुन राम का कोई अता-पता नहीं है। बार-बार पूछे जाने पर ठेकेदार कभी झूठी दिलासा देता रहा, तो कभी पैसे और धमकी देकर चुप रहने को कहता रहा।

ठेकेदार ने जातिसूचक गालियों से किया अपमान

उर्मिला देवी ने यह भी आरोप लगाया कि जब वह अपने पति की वापसी के लिए लगातार दबाव डालने लगीं, तो ठेकेदार मकसूद मियां ने न सिर्फ जातिसूचक गालियां दीं, बल्कि यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि तुम्हारा आदमी चेन्नई जाते वक्त ही गायब हो गया था,हम कुछ नहीं जानते। यह सुनकर पीड़िता और उसका पूरा परिवार गहरे सदमे में है।

प्रशासन से लगाई थी गुहार, लेकिन नहीं मिली मदद

उर्मिला देवी ने 10 मई 2023 को बालूमाथ थाना में आवेदन दिया था और बाद में लातेहार के पुलिस अधीक्षक से भी लिखित शिकायत कर कार्रवाई की मांग की थी। लेकिन प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। अंततः न्यायालय की शरण लेने के बाद अब बालूमाथ थाना में मुकदमा दर्ज हुआ है।

न्यायालय के हस्तक्षेप के बाद हुई FIR दर्ज

बालूमाथ थाना प्रभारी अमरेंद्र कुमार ने पुष्टि की है कि ठेकेदार मकसूद मियां के खिलाफ प्राथमिकी संख्या 47/15.05.2025 भारतीय दंड संहिता की धारा 363 (अपहरण), 364 (हत्या की नीयत से अपहरण), और 365 (गोपनीय रूप से अपहरण) के तहत दर्ज की गई है। उन्होंने बताया कि मामले की गंभीरता को देखते हुए तफ्तीश तेज़ कर दी गई है।

उर्मिला देवी का संघर्षः दो बच्चियों के साथ अकेली जंग

उर्मिला देवी खुद दिहाड़ी मजदूरी कर अपनी दो बेटियों का पालन-पोषण कर रही हैं। उनका कहना है कि अब सिर्फ न्यायालय से ही उम्मीद है। मुझे डर है कि मेरे पति के साथ कुछ अनहोनी न हो गई हो। लेकिन जब तक आखिरी उम्मीद बाकी है, मैं हार नहीं मानूंगी।

मानव तस्करी पर गंभीर सवाल

यह मामला न केवल मानव तस्करी के संगठित नेटवर्क की ओर इशारा करता है,बल्कि यह भी दर्शाता है कि किस तरह से दलित और कमजोर वर्ग के मजदूरों को बहला-फुसलाकर शोषण का शिकार बनाया जा रहा है। प्रशासन की लापरवाही और सिस्टम की उदासीनता इस संकट को और गहरा बना रही है।

अब देखना यह है कि क्या अर्जुन राम को न्याय मिल पाएगा, और क्या मानव तस्करी के इस जाल में शामिल लोगों पर कड़ी कार्रवाई होगी।

ऑपरेशन सतर्क अभियान के तहत आर.पी.एफ के जवान ने दो लोगों को धर दबोचा

कोडरमा। आज दिनाक-25.05.2025 को समय करीब 10:00 बजे सहायक उप निरीक्षक/ओम प्रकाश सिंह साथ प्रधान आरक्षी/अजय कुमार सिंह, आरक्षी/अशोक कुमार गुप्ता तथा महिला आरक्षी/नीतू कुमारी सभी रेसुब, पोस्ट, कोडरमा के बल सदस्य कोडरमा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं0 04/05 पर गस्ती कर रहे थे। गस्ती के क्रम में एफओबी के निचे पहुँचे तो दो व्यक्तियों को पिठ्ठु बैग के साथ संदिग्ध अवस्था में देखा गया। संदेह होने पर उसके पास जाकर पूछताछ किया गया तो उसने अपना नाम व पता (1) राहुल कुमार, उम्र करीब 18 वर्ष, पिता महेन्द्र प्रसाद, पता दलेलपुर, थाना- नारदीगंज, जिला- नवादा (बिहार) तथा (2) रोशन कुमार, उम्र करीब 18 वर्ष, पिता विजय कुमार, पता बहुरी बिधा, थाना- नारदीगंज, जिला- नवादा (बिहार) बताया। जब राहुल कुमार के कब्जे वाले ब्राउन रंग के पिठ्ठु बैग को खोलकर चेक किया गया तो उसमें रखा हुआ (1) 06 अदद Royal Stag Deluxe Whisky जिसमे प्रत्येक की क्षमता 750 मिली0 और प्रत्येक का किमत 740 रूपये (ii) 15 अदद हंटर स्ट्रांग प्रियमियम बियर था, जिसमें प्रत्येक की क्षमता 500 मिली और प्रत्येक का किमत 130 रूपये अकित पाया गया। उसके बाद जब रोशन कुमार के कब्जे वाले काला रंग के पिठ्ठु बैग को खोलकर चेक किया गया तो उसमें रखा हुआ (1) 24 अदद हंटर स्ट्रांग प्रियमियम बियर जिसमें प्रत्येक की क्षमता 500 मिली0 और प्रत्येक का कीमत 130 रूपये अंकित पाया गया। उक्त दोनों व्यक्तियो से शराब की बोतलों के बाबत पूछताछ किया गया तो उसके द्वारा बताया गया कि हमलोग बेरोजगार है इसलिए इसे बिहार ले जाकर अधिक दामों में बेच कर इससे लाभ कमाता हूँ। शराब की बोतलों के बाबत न तो कोई कागजात दिखाया और ना ही संतोषप्रद जबाब दिया। जिसके बाद मौके पर उपस्थित गवाहों के समक्ष सहायक उप निरीक्षक/ओम प्रकाश सिंह, रेसुब पोस्ट कोडरमा के द्वारा उपर्युक्त शराब की बोतलों को जप्ती सूची बनाते हुए जप्त किया गया तथा पकडे गये व्यक्तियों का गिरफ्तारी सह जामातालाशी बनाते हुए गिरफ्तार किया गया तथा अग्रिम कार्यवाही वास्ते रेसुब पोस्ट कोडरमा पर लाया गया। जब्त सभी अग्रेजी शराब की कुल क्षमता 24000 मिली0 व कुल कीमत 9510/- रूपये आका गया। गिरफ्तार अभियुक्तो और जप्त शराब को अग्रिम कानूनी कार्यवाही वास्ते उत्पाद विभाग कोडरमा को सुपुर्द कर दिया गया।

संक्षिप्त समाचार

खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी के द्वारा फलों से कार्बाइड मुक्त दुमका की की गई शुरुआत

दुमका/
ललित कुमार पाल की रिर्पोट।
दिनांक 24.05.25 को खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी दुमका अमित कुमार राम के द्वारा फलों से कार्बाइड मुक्त दुमका की शुरुआत की गई। इस संबंध में fda building dumka में जिले में फलों के थोक एवं खुदरा विक्रेताओं, चैंबर ऑफ कॉमर्स के साथ बैठक आयोजित की गई। खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी द्वारा बैठक में उपस्थित सभी खाद्य कारोबारियों को सूचित किया गया कि कार्बाइड का इस्तेमाल कर फलों को पकाने से गंभीर बीमारियों से ग्रस्त होने का खतरा बना रहता है। साथ ही फलों की गुणवत्ता एवं सेल्फ लाइफ में गिरावट होती है। इस अभियान के तहत सभी थोक एवं खुदरा विक्रेताओं को कार्बाइड की जगह पर Ethylene गैस का इस्तेमाल करने का निर्देश दिया गया। खाद्य सुरक्षा पदाधिकारी द्वारा सभी को 15 दिनों का समय दिया गया है इस अभियान को सफल बनाने के लिए। उक्त अवधि के उपरांत यदि फलों को पकाने के लिए कार्बाइड का इस्तेमाल करते हुए पाया जाता है तो खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम के सुसंगत धाराओं के तहत कठोर कार्रवाई की जाएगी।

शिकारीपाड़ा हाई स्कूल मैदान में ग्रीष्मकालीन वॉलीबॉल प्रशिक्षण शिविर कैंप आयोजित

शिकारीपाड़ा/दुमका/
ललित कुमार पाल की रिर्पोट।
लड़का लड़कियों को वॉलीबॉल का प्रशिक्षण देने के लिए शिकारीपाड़ा +2 उच्च विद्यालय मैदान में ग्रीष्मकालीन वॉलीबॉल प्रशिक्षण शिविर कैंप का किया गया आयोजन। यह शिविर 30 मई तक आयोजित की जाएगी, शिविर में लड़का और लड़कियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसमें स्ट्रेचिंग ,वार्म-अप ,गतिशीलता, आदि विभिन्न प्रकार की अभ्यास ट्रेनिंग दी जा रही है ताकि प्रशिक्षण लेने वाले मानसिक और शारीरिक रूप से मजबूत हो। ताकि तकनीकी प्रशिक्षक द्वारा तकनीकी ज्ञान लेकर खिलाड़ी अपने खेल को और अच्छे तरीके से खेल सके। शिविर में कुलदीप सिंह और रामनन्द घोष द्वारा प्रशिक्षण दी जा रही है। जिसकी जानकारी जिला वॉलीबॉल संघ के मीडिया प्रभारी गौरव सिंह ने दिया। शिविर कैंप को आयोजित करने में जिला वॉलीबॉल संघ के अध्यक्ष अमित कुमार ,सचिव मुकेश कुमार, मीडिया प्रभारी गौरव सिंह की महत्वपूर्ण भूमिका है। मौके पर राजीव रंजन ठाकुर ,नीरज रजक ,सुभाजीत मंडल, राजा भगत, दिवाकर भगत, शिव शंकर आदित्य इत्यादि लोग उपस्थित हैं।

कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष के अध्यक्षता में प्रखंड, पंचायत, बुथ कमिटी मजदूर को लेकर बैठक आयोजित

आदिवासी एक्सप्रेस लिट्टीपाड़ा (पाकुड़)। संगठन श्रृजन 2025 मंथन के तहत आज रविवार को प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश एंव झारखण्ड प्रदेश प्रभारी श्री के राजू के निर्देशानुसार लिट्टीपड़ा विधानसभा अंतर्गत प्रखंड लिटिपड़ा के झेनागरिया ग्राम में परिवेक्षक महबूब आलम के उपस्थिति में प्रखंड अध्यक्ष मुर्शीद आलम के अध्यक्षता में एक बैठक की गई जिसमे मण्डल कमिटी, पंचयात कमिटी, बूथ कमिटी गठन पर चर्चा की गई एवं संबिधान बचाव रैली करने की बात की गई। केंद्र सरकार द्वारा हमारे संविधान प्रदत्त हक़ एंव अधिकार को बोलने की स्वतंत्रता छीनने का प्रयास किया है। दलित आदिवासी के आरक्षण को समाप्त करने की मनसा पाल रखी है। भाजपा देश में तानासाही शासन स्थापित कर चाहती है जिसे जन जन तक पहुँचाना हमारा लक्ष्य है परिवेक्षक महबूब आलम जी ने कांग्रेस को मजबूती के लिए हर का सहयोग करने की बात कही उक्त बैठक में उपस्थित जाबेद अली, गुलाम अंसारी, अब्दुल रहीम अंसारी, फिरोज आलम चतुर मरांडी, सुल्तान अंसारी इत्यादि उपस्थित थे।

सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा द्वारा मृत सहायक अध्यापक के परिजनों को 20000 का किया गया आर्थिक सहयोग

शिकारीपाड़ा/दुमका/
ललित कुमार पाल की रिर्पोट
दिनांक 25 मई 2025 रविवार को सहायक अध्यापक संघर्ष मोर्चा के प्रखंड इकाई शिकारीपाड़ा द्वारा मृत सहायक अध्यापक ईश्वर मुर्मू के परिजन उनकी पत्नी पानफुल टुडू को प्रखंड के सहायक अध्यापकों द्वारा 20000 का आर्थिक सहयोग दिया गया बताते चले कि पिछले 16 अप्रैल 2025 को प्राथमिक विद्यालय जामकांदर में कार्यरत

सहायक अध्यापक ईश्वर मुर्मू का लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया था ईश्वर मुर्मू अपने पीछे दो पुत्र प्रशांत मुर्मू 25 वर्ष और उमेश मुर्मू 12 वर्ष तथा अपनी पत्नी पानफुल टुडू 45 वर्ष को छोड़कर गए हैं ईश्वर मुर्मू परिवार का एकमात्र कमाने वाला सदस्य था जिसके निधन से उसका परिवार वर्तमान में काफी आर्थिक संकट से गुजर रहा है तथा उनके बेटों की पढ़ाई और परिवार का भरण पोषण भगवान भरोसे ही गुजर रहा है इस स्थिति को देखते हुए प्रखंड इकाई ने उनकी पत्नी को 20000 का आर्थिक सहयोग दिया है मौके पर उपस्थित जिला उपाध्यक्ष अब्दुल रकीब ने अनुकंपा के आधार पर स्वर्गीय ईश्वर मुर्मू के परिवार के एक सदस्य के लिए सरकारी नौकरी तथा 20 लाख रुपया आर्थिक मुआवजा की मांग की है मौके पर उपस्थित प्रखंड अध्यक्ष वकील मुर्मू और प्रखंड सचिव खलील अंसारी ने संयुक्त रूप से विभाग से यथाशीघ्र भविष्य निधि का बीमा राशि और जमा राशि उनके परिवार को भुगतान करने की सरकार से मांग की है आर्थिक मुआवजा देने के लिए उनके निजी आवास जामकांदर में मुख्य रूप से जिला उपाध्यक्ष अब्दुल रकीब प्रखंड अध्यक्ष वकील मुर्मू प्रखंड सचिव खलील अंसारी प्रखंड कमेटी सदस्य एनुल मियां मनोवर जमाल तनवीर आलम कमलेश पंडित इस्लाम अंसारी विमानरुप हाँसदा निरंजन पाल बीनीलाल टुडू सतीनाथ पाल भीमसेंट मरांडी अजीत कुमार वर्मा लक्ष्मी कुमारी सुरेश टुडू आदि दर्जनों शिक्षक पहुंचे थे।

दुमका भागलपुर सड़क मार्ग के रामगढ़ प्रखंड व हंसडीहा थाना क्षेत्र के भदवारी सड़क किनारे बिक रहा है मौत का समान प्रशासन मौन

रामगढ़/रामजी साह।
आश्चर्य तब होता जब जिला से लेकर प्रखंड और थाना कै पुलिस पेट्रोलिंग वाहन प्रतिदिन दुमका भागलपुर सड़क मार्ग व रामगढ़ प्रखंड व हंसडीहा थाना के भदवारी मुख्य सड़क मार्ग से गुजरने के बाबजूद सड़क के किनारे प्रति दिन दर्जनों महुवा दारु के मिनी मार्केट से गुजरने के बाबजूद प्रशासन मौन है। जबकि दुमका भागलपुर सड़क मार्ग के भदवारी के नोनीहाट रानी सोनावती प्लस टू विद्यालय के समीप सडक के किनारे लगे मिनु मार्केट में मजदूर, छात्र,छोटे मोटै व्यवसाई, ट्रक, टेम्पो ,बस चालक हाहवा चालक ठेला रिक्शा चालक का दिरु पुने का जमावड़ा प्रतिदिन उक्त दारु मिनी मार्केट में आपको

देखने को मिल जायेगा। दुमका भागलपुर सड़क मार्ग में जो सड़क दुर्धटना हो रहे इसका मुख्य कारण सड़क के किनारे बिक रहे अबैध दारु है। मैट्रिक इंटर के छात्र के अलावा दिन भर मजदूरी करने वाले मजदूर ठेला चालक, रिक्शा चालक, टेम्पो चालक अपनी कमाई का आधा हिस्सा शराब पीने पर लगा देते हैं। लेकिन ऐसे मामलों में प्रशासन अनजान बनी हुई है जनता भाड़ में जाये इन्हें इसकी परवाह नहीं। ज्ञात है कि दुमका भागलपुर सड़क के हंसडीहा, रामगढ़, और जामा तीन थाना क्षेत्रों मैं आये दिन हर माह दर्जनों सड़क हादसे होते हैं लेकिन फिर भी प्रशासन सड़क किनारे दारु बेचने वाले पर कोई प्रतिबंध नहीं लगा रहे हैं। अब तो यह भी सुनने को मिल रहा हो जो बड़े लोग हैं और वह दारु भट्ठी तक जाने में लोकलाज से नहीं जाते हैं ऐसै लोग दारु होम डिलीवरी करा लेते हैं।ऐसे में हंसडीहा जानि क्षेत्र के भदवारी सड़क किनारे प्रतिदिन पचास से एक लाख रुपये के महुवा दारु की बिक्री धड़ल्ले से हो रही है।अगर जल्द ही सड़क किनारे बिक रही अबैध दारु पर प्रतिबंध नहीं लगा तो ऐसे ही सेकडो माता बहनों कै किसी के सहाग उजड़ते रहेंगे। वहीं स्थानीय लोगों ने प्रशासन से पहल की पूरजोर मांग किया है। हालांकि प्रशासन भी कभी कभी इन अवैध दारु भट्ठी पर कार्यवाही करती है लेकिन पुनः दारु दुकान अपनि कारोबार पसार कर सड़क दुर्घटना का मौत का समान दारु बेचना शुरू कर देते हैं।

थाना परिसर में बकरीद पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित

आदिवासी एक्सप्रेस लिट्टीपाड़ा (पाकुड़)। रविवार को थाना परिसर में बकरीद पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक आयोजित।इस बैठक में प्रखंड क्षेत्र के अंतर्गत सभी जनप्रतिनिधि, मुखिया, ग्राम प्रधान, पंचायत समिति, वार्ड सदस्य, सभी समुदाय के गण्यमान्य व्यक्ति, प्रबुद्ध नागरिकों, पुलिस मित्रों, मुस्लिम बकरीद कमिटी के सभी अध्यक्ष, सचिव, अन्य सदस्यों,चौकीदारों एवं थाना में पदस्थापित सभी पुलिस पदाधिकारी/ कर्मियों के मौजूदगी में आगामी बकरीद पर्व-2025 के अवसर पर आज लिटिपाडा थाना परिसर में शांति समिति का बैठक आयोजन किया गया। उक्त बैठक में सभी के द्वारा एक स्वर में बकरीद पर्व 2025 को शांति एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया जाने हेतु निर्णय लिया गया एवं थाना क्षेत्र के अन्य समस्याओं पर भी विशेष चर्चा हुई अफवा पर धयान ना दे। अगर किसी प्रकार का अफवाह का पता चलता है तो तुरंत थाना को सूचीत करें।

बकरीद पर्व मनाने को लेकर हुई थाना परिसर में शांति समिति की बैठक

सौरभ भगत
आदिवासी एक्सप्रेस
संवाददाता अमड़ापाडा
अमड़ापाडा (पाकुड़) थाना परिसर में बकरीद पर्व को देखते हुए रविवार को शांति समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रखंड क्षेत्र के जनप्रतिनिधि व गणमान्य लोग शामिल हुए, तथा जनप्रतिनिधियों की ओर से कई आवश्यक सुझाव भी दिया गया। बताया गया कि बकरीद के मौके पर ईदगाह,मस्जिद व अन्य जगहों पर नमाज अदा की जाती है। इसके पश्चात सभी लोग अपने-

अपने घरों में बकरे की कुर्बानी देते हैं। बैठक के दौरान पुलिस निरीक्षक सह थाना प्रभारी अनूप रोशन भेंगरा एवं सीओ औसफ अहमद खां ने जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य लोगों से बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण और भाईचारे के माहौल में मनाने की अपील की। इस दौरान पुलिस निरीक्षक सह थाना में प्रभारी अनूप रोशन भेंगरा ने कहा कि थाना क्षेत्र के सभी संवेदनशील जगहों पर बकरीद पर्व को लेकर मजिस्ट्रेट के नेतृत्व में पुलिस बल तैनात की जाएगी। पूरे क्षेत्र में पुलिस गशती भी जारी रहेगी। असामाजिक तत्वों पर विशेष नजर रखी जायेगी।ऐसे में कही भी कोई अफवाह फैले तो इसकी तुरंत सूचना प्रशासन को दें। मौके पर एसआई पप्पू कुमार, मुखिया गयलाल देहरी, विजय भगत, तनवीर अली,मो शौकत अली, मो जहांगीर,मुस्लिम अंसारी, मो सलाम सहित अन्य मौजूद थे।

उपायुक्त व पुलिस अधीक्षक ने प्रकृति विहार पार्क का किया निरीक्षण

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
उपायुक्त मनीष कुमार व पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार के द्वारा अमड़ापाड़ा प्रखंड के डाकबंगला स्थित पार्क पहुंचे वहां देखभाल रखरखाव सहित अन्य कार्यों की जानकारी ली और पार्क को डेवलप करने को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश बीजीआर कोल कंपनी के अधिकारी को दिया।

डीसी व एसपी ने अबुआ आवास का किया निरीक्षण

इसके अलावा उपायुक्त मनीष कुमार व पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार के द्वारा अमड़ापाड़ा प्रखंड के सालपतरा में अबुआ आवास का निरीक्षण किया गया।उपायुक्त ने अबुआ आवास योजना के तहत बन रहे घरों का जायजा लिया और निर्माण कार्य की गुणवत्ता देखी। उन्होंने निर्माण कार्य तेजी से पूरा करने हेतु लाभुकों को निर्देशित किया और कहा कि 28 मई को सभी लाभुकों का एक साथ गृह प्रवेश कराया जाएगा।

उपायुक्त व पुलिस अधीक्षक ने बनाए जा रहे मांडल आंगनबाड़ी केंद्र का किया निरीक्षण

उपायुक्त मनीष कुमार व पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार के द्वारा अमड़ापाड़ा प्रखंड के सालपतरा में बनाए जा रहे मांडल आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण कर, आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि जिले में 10 मांडल आंगनबाड़ी केंद्र बनायें जा रहे हैं।

आजिविका स्वंय सहायता समूह के मदद से तकनीकी खेती कर आत्मनिर्भर बन रही माया दीदी

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़ जिला के महेशपुर प्रखण्ड स्थित बलियापत्रा गांव की माया देवी ने गणेश आजीविका सखी मंडल से जुड़कर अपने सपनों को साकार कर रही है। माया दीदी ने बताई की 2017 से पहले पारंपरिक खेतीबाड़ी करती थी और दोनों पति- पत्नी मजदूरी कर अपना भरण पोषण किसी तरह कर पा रही थी। 2017 में देखी कि गांव में कुछ दीदी के द्वारा जेएसएलपीएस समूह का गठन किया जा रहा है तब माया दीदी भी गणेश आजीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी। समूह में जुड़ने के पश्चात समूह से 16 हजार रुपये ऋण ली और अपने जमीन पर बैंगन और टमाटर की खेती की जिससे 65 हजार का मुनाफा हुआ। 2021 में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी अंतर्गत संचालित जापान

इंटरनेशनल कॉर्पोरेशन एजेंसी (JICA) परियोजना से जुड़कर सूक्ष्म टपक सिंचाई यंत्र प्राप्त हुआ तब माया दीदी 16 हजार रुपये ऋण वापस कर फिर गणेश आजीविका स्वयं सहायता समूह से 1 लाख की ऋण लेकर ड्रिप बोरिंग की। साथ ही JREDA से कुसुम योजना का लाभ भी प्राप्त की और 33 डिसमिल जमीन में सूक्ष्म टपक सिंचाई के माध्यम से रेड लेडी प्रजाति की पपीता और 25 डिसमिल में फूलगोभी की खेती नामधारी किस्म का करके 2 लाख 50 हजार की शुद्ध आमदनी कर 1 लाख ऋण वापस किया। माया दीदी को इस वर्ष उद्यान विभाग से उद्यान विकास योजना अंतर्गत मल्चिंग प्लास्टिक का लाभ भी मिला है। अब इस वर्ष अप्रैल 2024 में पुनः माया दीदी ने रेड लेडी किस्म का पपीता की खेती के लिए मुनिवर नर्सरी गुजरात से कुल 300 पौधा ऑनलाइन के माध्यम से क्षेत्र विषयक समन्वयक के सहयोग से मंगवा के लगाई उसमें से 140 पौधा से ही अभी तक कुल 2000 किलो पपीता 65 रु प्रति किलो के दर से लोकल मार्केट में बेच कर 1 लाख 30 हजार रुपये आमदनी कर चुकी है जिसमे अभी तक 70 हजार रुपए कुल खर्च हो चूका है और शुद्ध आमदनी 60 हजार रुऊ हुआ है। अभी भी 30 हजार रुपए आमदनी होने का अनुमान है। अप्रैल 2025 में भी माया दीदी अन्य 25 डेसीमल प्लाट में VNR अमीना किस्म का पपीता का कुल 250 पौधा लगा चुकी है।

माया दीदी समूह में जुड़ने के बाद तकनीकी खेती कर अच्छी आमदनी कर रही है। साथ ही अपने परिवार का भरण पोषण भी कर रही है और अपने बच्चों को अच्छे स्कूलों में पढ़ाने की योजना बना रही है। अपने संवरते जीवन से दीदी काफी खुश है दूसरे दीदियों को इस नए तकनीकी से खेती करने के लिए प्रेरित कर रही है।

उपायुक्त ने वायरल फीवर की रोकथाम के लिए जिला टास्क फोर्स की बैठक की

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़- बरसात के दिनों में डेंगू, टायफाइड एवं मलेरिया जैसे बिमारियों की रोकथाम के लिए उपायुक्त मनीष कुमार ने जिला टास्क फोर्स के साथ बैठक किया। सतर्कता बरतने एवं इसके लक्षणों पर विस्तृत चर्चा की गई तथा सभी संबंधित विभागों के बीच प्रभावी समन्वय स्थापित कर एक प्रोएक्टिव अप्रोच अपनाने पर बल दिया गया। उपायुक्त ने निर्देशित किया कि विभिन्न विभागों की भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों को स्पष्ट करते हुए एक विस्तृत कार्यतालिका तैयार किया जाए, जिससे वर्णित विषयों पर प्रभावी नियंत्रण ससमय की जा सके बैठक में यह निर्णय लिया गया कि नगर परिषद को नियमित रूप से फॉगिंग, एंटी लार्वल स्प्रे, नालों की सफाई तथा जलजमाव वाले क्षेत्रों की पहचान कर उन्हें दूर करने का अभियान चलाने का निर्देश दिया गया। आमजन को जागरूक करने हेतु विभिन्न माध्यमों से व्यापक प्रचार-प्रसार अभियान चलाने का निर्देश दिया गया। उपायुक्त ने स्वास्थ्य विभाग के टीम से कहा कि स्थानीय जनप्रतिनिधियों, स्कूलों के छात्र-छात्राओं एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए जन-जागरूकता लायें ताकि जमीनी स्तर पर लोगों में जागरूकता बढ़े और वे स्वयं भी डेंगू रोकथाम के उपायों में भागीदार बनें। *जिला मलेरिया पदाधिकारी द्वारा डेंगू के लक्षण, परीक्षण की व्यवस्था, इलाज की प्रक्रिया एवं रोकथाम संबंधी उपायों की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि समय रहते कदम उठाए जाने से डेंगू पर प्रभावी नियंत्रण संभव है।

विधायक डॉ लुईस मरांडी ने आज रामगढ़ में दो क्षेत्रों में नव निर्माण व 11 क्षेत्रों में सडक जिर्णोद्धार सड़क का किया शिलान्यास

लोगों में खुशी की थोड़ी लहर

रामगढ़ /रामजी साह।
जामा विस के झामुमो विधायक डॉ लुईस मरांडी ने रामगढ़ के 11 सड़कों का जिर्णोद्धार व दो सड़क के नव निर्माण का किया शिलान्यास, क्षेत्र में लोगों में दौड़ी खुशी की लहर।

विधायक डॉ लुईस मरांडी ने कहा मैंने जो विस चुनाव में लोगों से वादा किया उसे पुरा किया जा रहा है ।दो नो प्रखंड का समग्र विकास मेरी प्रथम प्राथमिकता -, डॉक्टर लुईस मरांडी जामा विधानसभा क्षेत्र की जनप्रिय माननीय विधायक डॉ लुईस मरांडी जी ने रामगढ़ प्रखंड क्षेत्र कारूडीह पंचायत के जोरडीहा गांव में 13सड़कों का सुदृढ़ीकरण एवं नव निर्माण कार्य का शिलान्यास अपने करकमलों से फीता

काटकर व नारियल फोड़कर किया। करोड़ों रूपये की लागत से इन 13सड़कों का सुदृढ़ीकरण एवं नव निर्माण कार्य प्रखंड के विभिन्न पंचायतों मे लगभग 38 किलोमीटर तक है। ग्रामीण कार्य विभाग कार्य प्रमंडल दुमका द्वारा एक साथ और एकही जगह मे शिलापट्ट लगाया गया था। माननीय विधायक जी ने बारी बारी से सभी शिलापट्ट देखा। इससे पूर्व माननीय विधायक महोदया का पुष्प गुच्छ देकर विभागीय पदाधिकारि व संबंधित संवेदकों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

*विधानसभा चुनाव के दौरान छोटीरणबहियार पंचायत के ग्रामीणों ने माननीय विधायक महोदया से आग्रह किया था कि मुख्य सड़क से गांव को जोड़ा जाए। माननीय विधायक महोदया ने सभी को आश्वस्त करते हुए कहा था कि चुनाव जीतने के पश्चात मेरी पहली कार्य छोटीरणबहियार को मुख्य सड़क से जोड़ने का होगा। माननीय विधायक महोदया के अथक प्रयास से ग्रामीणों की मांग को आज पूरी की।

सुदृढ़ीकरण कार्य........
1. जोरडीहा से कारूडीह तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
2. PWD रोड से सिझुआ तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
3. अमड़ापहाड़ी से अगुंठिया तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
4. डारो से गरडापहाड़ी तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
5. रून्डे से रून्डे तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
6. पातोबांध से रानीडीह तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
7. बोरिया से लीलातरी तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
8. जोरडीहा से डेलीपाथर तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
9. सुहोदुहो मोड़ से सुहोदुहो तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
10. PWD रोड से जमुना तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।
11. फुलजोड़ी मोड़ से लोहरडीह तक पथ का सुदृढ़ीकरण कार्य।

नव निर्माण कार्य.......
12. बगबिंधा से डेलीपाथर तक पथ निर्माण कार्य।
13. गिदबोना से छोटीरणबहियार पथ निर्माण कार्य।

सुदृढ़ीकरण एवं नव निर्माण कार्य के शिलान्यास मौके पर मुख्य रूप से दुमका जिला उपाध्यक्ष सुधीर कुमार मंडल, झामुमो रामगढ़ प्रखंड अध्यक्ष सह प्रखंड प्रमुख बाबूलाल मुर्मू, रामगढ़ प्रखंड विकास पदाधिकारी कमलेंद्र कुमार सिंहा, प्रखंड सचिव नंदलाल राउत, प्रखंड कोषाध्यक्ष अशोक कुमार मंडल, कारूडीह मुखिया सह झामुमो नेत्री सुरूजमुनी हांसदा, राजेश गुप्ता, छोटेलाल मंडल, चंद्रशेखर सोरेन आदि मौजूद थे।

सेना में दिखने लगा महिला शक्ति का दम

>> विचार

“ रक्षा बलों में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने की दिशा में भारत की प्रगति धीमी रही है। लेकिन लोगों का मानना है कि इसमें लगातार प्रगति हुई है। अब एक साथ बहुत सारी महिलाएं प्रमुख भूमिकाओं में हैं। वे दूसरों के लिए रास्ता बना रही हैं। उनके प्रदर्शन पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। अगर वे अच्छा काम कर रही हैं तो उन्हें स्वीकार करना आसान होगा और आने वाली महिलाओं के लिए रास्ता साफ हो जाएगा। शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत महिलाएं केवल 10 या 14 साल तक सेवाएं दे सकती हैं। इसके बाद वो सेवानिवृत्त हो जाती हैं। लेकिन अब उन्हें स्थायी कमीशन के लिए आवेदन करने का भी मौका मिलेगा। जिससे वो सेना में अपनी सेवाएं आगे भी जारी रख पाएंगी और रैंक के हिसाब से सेवानिवृत्त होंगी।

रमेश सर्राफ धमोरा

भारतीय सेना में महिला शक्ति का दम दिखाई देने लगा है। पुरुषों की तरह महिलाएं भी सेना में बढ़ चढ़कर अपनी योग्यता का प्रदर्शन कर रही हैं। इसका ताजा उदाहरण हाल ही में सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिंदूर की प्रेस ब्रीफिंग में सेना की दो महिला अधिकारियों द्वारा युद्ध से संबंधित जानकारी देना एक महत्वपूर्ण कदम रहा है। विदेश सचिव विक्रम मिसरी के साथ कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर भारत के पराक्रम की तस्वीर को पूरी दुनिया के सामने पेश किया और बताया कि आखिर ऑपरेशन सिंदूर के जरिए भारत ने कैसे और क्या कार्यवाही की। सेना की दोनों महिला अधिकारियों ने सैनिक कार्यवाही की हर दिन प्रेस कांफ्रेंस के माध्यम से देश दुनिया को ताजा जानकारी प्रदान कर यह दिखा दिया कि भारत में महिला शक्ति भी किसी से कम नहीं है। भारत में सदियों से महिलाओं को मातृशक्ति का दर्जा दिया जाता रहा है। कहा गया है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः ।। अर्थातः जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता रमते हैं। जहां नारियों की पूजा नहीं होती, वहां किए गए सभी कार्य निष्फल हो जाते हैं। हम देश में साल में दो बार नवरात्र पर मातृशक्ति रूपी मा दुर्गा की पूजा कर देश दुनिया को यह संदेश देते हैं कि मातृ शक्ति भी किसी से कम नहीं है। अब तो हमारी सेना में पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर अपनी उत्कृष्ट क्षमता दिखा दी है। महिलाएं फाइटर प्लेन उड़ा रही है। तो युद्ध भूमि में हर प्रकार की भूमिका निभाने को तैयार नजर आ रही है।भारतीय सशस्त्र बलों में महिलाओं की भागीदारी का इतिहास लंबे संघर्ष और बदलावों से भरा रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही महिलाएं भारत की सुरक्षा और सेवा में अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देती रही हैं। लेकिन सेना में औपचारिक तौर पर उनकी नियुक्ति का रास्ता बहुत बाद में खुला। साल 1943 में बनी रानी झांसी रेजिमेंट, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की आजाद हिंद फौज का हिस्सा थी। यह पहली बार था जब महिलाएं युद्ध के मोर्चे पर सक्रिय रूप से दिखाई दी। आजादी के बाद भी सशस्त्र बलों में महिलाओं को लंबे समय तक सहायक भूमिकाओं तक ही सीमित रखा गया।भारत की तीनों सेनाओ (थल सेना, नौसेना, वायु सेना) में महिलाओं की संख्या को लेकर अगस्त 2023 में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री अजय भट्ट ने संसद में बताया था कि तीनों सेना में 11414 महिलाएं सेवाएं दे रही है। थल सेवा में 7054 महिलाएं सेवारत है।इनमें 1733 महिला अधिकारी है। यह आंकड़ा 1 जनवरी 2023 तक का है। भारतीय वायु सेवा में 1654 अधिकारी सेवारत है

जबकि 155 महिलाएं एयरमेन (अग्निवीर) के रूप में सेवा दे रही है। भारतीय नौसेना में 580 महिलाएं अधिकारी के रूप में सेवारत है जबकि 727 महिलाएं सैलर्स (अग्निवीर) के तौर पर तैनात है।इसी तरह 1212 महिलाएं भारतीय थल सेना के आर्मी मेडिकल कॉर्प्स में 168 महिलाएं आर्मी डेंटल कार्स में और 3841 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में कार्यरत है। 151 महिलाएं नौसेना के मेडिकल कॉर्प्स में 10 महिलाएं डेंटल कार्य और 380 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में सेवारत है। 274 महिलाएं भारतीय वायु सेवा के मेडिकल कॉर्प्स में पांच महिलाएं डेंटल कॉर्प्स में और 425 महिलाएं मिलिट्री नर्सिंग सर्विस में सेवारत है।पहले महिलाओं को शार्ट सर्विस कमीशन में ही लिया जाता था। लेकिन फरवरी 2020 में सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद महिलाओं को सेना में स्थाई कमीशन मिलने लगा है। अब एनडीए की कुल सीटों का 10 प्रतिशत सीटों पर लड़कियां सिलेक्ट होती है और वह भी ओपन कंपटीशन में मुकाबला करके। रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने मार्च 2025 में संसद में बताया था कि 2022 में महिला कैडेट्स के पहले बैच की एंट्री के बाद से अब तक एनडीए में 126 महिलाओं को एडमिशन मिला है। आर्म्ड फोर्सज में आने के बाद उनके लिए भी अवसर समान होते हैं। उनका करियर प्रोग्रेस वैसा ही होगा जैसा लड़कों का होगा। सर्विस रूट समान होते हैं। अब हम गर्व के साथ कह सकते हैं कि हमारी सेना में पूरी तरह जेंडर न्यूट्रलाइजेशन हो गया है।सेना में आज हमारी महिला कॉम्बैट पायलट भी है। जो मिसाइल चलती है मोर्चे पर भी जाती है। वह इंजीनियरिंग का कार्य भी देखती है और सैटेलाइट को भी नियंत्रित करती है। अब महिलाएं डिफेंस भी करती है। टेक्निकल इंटेलिजेंस भी एकत्रित करती है। अभी तक आमने-सामने की लड़ाई में महिलाओं को नहीं भेजा जाता है। राजस्थान में झुंझुनू जिले की स्क्वाड्रन लीडर मोहन सिंह 2016 में भारतीय वायु सेवा की तेजस फाइटर स्पाइडर में शामिल होने वाली पहली महिला बनी। इससे पहले वह मिग 21 बाइसन फाइटर प्लेन भी उड़ा चुकी है। ग्रुप कैप्टन सालिया धामी वायु सेवा की ऐसी पहली महिला अधिकारी बनी है जो फ्रंटलाइन काम्पैक्ट यूनिट की कमान संभाल रही है। फ्लाइंग यूनिट की फ्लाइट कमांडर बनने वाली भी वह पहली महिला अधिकारी है। भारत की सशस्त्र सेना चिकित्सा सेवा और थलसेना एवं नौसेना की चिकित्सा सेवाओं का नेतृत्व महिला अधिकारी ही कर रही हैं।रक्षा बलों में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने की दिशा में भारत की प्रगति धीमी रही है। लेकिन लोगों का मानना है कि इसमें लगातार प्रगति हुई है। अब एक साथ बहुत सारी महिलाएं प्रमुख भूमिकाओं में हैं। वे दूसरों के लिए रास्ता बना रही हैं। उनके प्रदर्शन पर बहुत कुछ निर्भर करेगा। अगर वे अच्छा काम कर रही हैं तो उन्हें स्वीकार करना आसान होगा और आने वाली महिलाओं के लिए रास्ता साफ हो जाएगा। शॉर्ट सर्विस कमीशन के तहत महिलाएं केवल 10 या 14 साल तक सेवाएं दे सकती हैं। इसके बाद वो सेवानिवृत्त हो जाती हैं। लेकिन अब उन्हें स्थायी कमीशन के लिए आवेदन करने का भी मौका मिलेगा। जिससे वो सेना में अपनी सेवाएं आगे भी जारी रख पाएंगी और रैंक के हिसाब से सेवानिवृत्त होंगी। साथ ही उन्हें पेंशन और सभी भत्ते भी मिलेंगे। 1992 में पांच साल के लिये शॉर्ट सर्विस कमीशन के लिए महिलाओं का पहला बैच भर्ती हुआ था। इसके बाद इस सर्विस की अवधि को 10 साल के लिए बढ़ाया गया। 2006 में शार्ट सर्विस कमीशन को 14 साल कर दिया गया। भारतीय सेना अब महिलाओं को सशत्र बल में नियुक्ति के लिए उनके लिए तय की गई नीतियों को लागू कर प्रोत्साहित करती है। इसके लिए महिलाओं के लिए आर्मी मेडिकल कोर, आर्मी डेंटल कोर और मिलिटरी नर्सिंग सेवाओं के लिए परमानेंट कमिशन को मंजूरी दी गई है। अब 11 आर्म्स एंड सर्विसेज में महिला अधिकारियों को परमानेंट कमिशन मिलता है। जिनमें आर्मी सर्विस कोर, आर्मी आर्डनेंस कोर, आर्मी एडुकेशन कोर, जज एडवोकेट जनरल ब्रांच, इंजीनियर कोर, सिगनल कोर, इलेक्ट्रॉनिक्स और मकैनिकल कोर, इंटेलीजेंस कोर, आर्मी एयर डिफेंस, आर्मी एविएशन, रीमाउंट एंड वेटनरी कोर आदि शामिल हैं।परमानेंट कमिशन के बाद महिला अधिकारी इंडियन आर्मी के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में शामिल आर्टिलरी का हिस्सा बनने लगी है। सेना आर्टिलरी की लगभग 300 रेजिमेंट और लगभग 5,000 अधिकारी हैं। आर्टिलरी में शामिल महिला अधिकारियों की बोफोर्स, होवित्जर, के-9 वज्र जैसी तोपों पर भी 2023 में तैनाती की अनुमति दी जा चुकी है।वर्तमान में भारतीय सशस्त्र बलों में नियुक्तियों में लैंगिक आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता है। पुरुष और महिला जवानों की हथियारों और सेवाओं के लिए तैनाती में किसी प्रकार का अंतर नहीं किया जाता है। सभी की पोस्टिंग सेना की जरूरतों के अनुसार की जाती है। भारतीय सेना में महिला अफसरों को परमानेंट कमिशन के लिए 23 नवंबर 2021 को एक जेंडर न्यूट्रल करियर प्रोग्रेशन पॉलिसी लाई गई थी। इसके जरिए महिलाओं को हथियारों व अन्य सेवाओं में समान अवसर उपलब्ध कराए गए हैं।

संपादकीय

गजा में भूख से मरते मासूम

हमास के हमले के बाद इजराइल की प्रतिक्रिया ने अब बेहद त्रासद रुख अख्तियार कर लिया है। अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि अब तमाम मानवीय तकाजों को ताक पर रख दिया गया है और प्रभावित इलाकों में लोग भूख से मरने को मजबूर हैं। इस बात की कोई फिक्रनहीं दिखती कि अब एकतरफा हो चुके युद्ध में मरने वाले निर्दोष और मासूम बच्चे हैं। गाजा में इजराइल के हमलों में जो लोग मारे जा रहे हैं, वह एक पक्ष भर है। इसके समांतर त्रासद और भयावह यह है कि इजराइल ने गाजा के प्रभावित इलाकों में मानवीय मदद पहुंचाने के भी सारे रास्ते बंद कर दिए हैं। नतीजा यह है कि अब वहां लोगों और खासकर बच्चों के मारे जाने की बड़ी वजह भुखमरी बन गई है। गाजा के अस्पतालों में हजारों की तादाद में कुपोषण के शिकार ऐसे बच्चे जिंदगी और मौत से लड़ रहे हैं, जिन्हें जान बचाने के लिए पेट भरने लायक खाना भी नहीं मिल पा रहा है। गौरतलब है कि संयुक्त राष्ट्र ने यह चेतावनी जारी की थी कि अगर जल्दी मदद नहीं मिली, तो सिर्फ दो दिनों के भीतर चौदह हजार बच्चों की जान जा सकती है। दरअसल, करीब दो महीने से इजराइल ने सभी खाद्य सहायता, दवा और अन्य सामान के गाजा के युद्ध प्रभावित इलाकों में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया हुआ है, जहां करीब बीस लाख फिलिस्तीनियों की आबादी रहती है। गाजा में रहने वाले ये लोग पूरी तरह बाहरी सहायता पर निर्भर हैं, क्योंकि इजराइली हमले ने उस इलाके की सभी खाद्य उत्पादन क्षमताओं को तबाह कर दिया है। जाहिर है, अब गाजा में अकाल का खतरा भी सामने खड़ा है। मगर अफसोसनाक यह है कि संयुक्त राष्ट्र से लेकर तमाम अंतरराष्ट्रीय प्रयास इजराइल को रोकने में नाकाम साबित हो रहे हैं। गाजा में इजराइली हमले में अब तक साठ हजार से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं। इनमें ज्यादातर महिलाएं और बच्चे थे, जिनका हमास या आतंकवाद से कोई वास्ता नहीं था। सवाल है कि हमास के जिस हमले को मानवता के खिलाफ बता कर इजराइल ने युद्ध छेड़ दिया, उसमें मासूमों को मार कर क्या हासिल हो रहा है।

भारत में कृषि संकट और खेत मज़दूरों की बदलती प्रकृति खून पर भारी सिंदूर-व्यापार!

विक्रम सिंह

महाराष्ट्र के नांदेड जिले की मुखेड तालुका के अंबुलगा गाँव के खेत मज़दूर माणिक घोंसटेवाड को साल के कुछ महीनों में ही खेतों में काम मिलता है। उनको जून-जुलाई में सोयाबीन या कपास की बुआई, अगस्त-सितंबर में निराई (हाथ से या कीटनाशकों से), और दिसंबर-जनवरी में कटाई के दौरान ही रोज़गार मिलता है। लेकिन यह काम भी निरंतर नहीं होता और इन महीनों के भी कुछ ही दिन काम मिल पाता है। गाँव और आसपास के इलाकों में कृषि में काम के दिन सीमित होने के कारण उनके परिवार का गुज़ारा मुश्किल हो जाता है। साल के बाकी दिन वह दिहाड़ी के लिए कई तरह के काम करते हैं, जैसे : सिर पर समान ढोने का काम, मिट्टी के बर्तन बनाना, निर्माण मज़दूर का काम। मूलता वह हर काम करता है, जो उपलब्ध हो। खेती और कटाई के मौसम में भी वह गैर कृषि काम में दिहाड़ी करके अपनी अजीविका जुटाने का प्रयास करता है, जिससे कि परिवार का खर्च निकल सके। वह मनरेगा का भी नियमित मज़दूर हैं, मगर वहां काम मिलना सरकार और पंचायत अधिकारियों की मर्ज़ी पर निर्भर करता है। पशुपालन से भी परिवार को कुछ आय होती है। इसी गाँव के मारोती शिवराम मिश्किरे खेती के अलावा ड्राइवर का भी काम करते हैं। साथ ही, वे सूअर पालते हैं, जो उनके घर की आय का एक अतिरिक्त स्त्रोत है। इस गांव में किए गए सर्वेक्षण के दौरान मिले खेत मजदूरों के काम के विभिन्न रूपों के ये दो उदाहरण ग्रामीण भारत में रोजगार और ग्रामीण मज़दूरों की बदलती परस्थितियों को दर्शाते हैं। इस बदलाव के कई कारण हैं, जिनमें मज़दूरों का विस्थापन करने वाली मशीनों का अंधाधुंध उपयोग और खेतों पर निर्भर मजदूरों की बढ़ती संख्या शामिल है। हमारे सामने एक ऐसी स्थिति है, जहां मजदूरों की एक बड़ी संख्या है, जिन्हें ग्रामीण इलाकों में रोजगार नहीं मिलता और न ही पलायन करने के बाद शहरी केंद्रों में सुनिश्चित रोजगार मिलता है। भारत में बढ़ता कृषि संकट इस स्थिति का मूल कारण है। भारत में ग्रामीण आबादी को सबसे ज्यादा रोजगार कृषि क्षेत्र से ही मिलता है। रोजगार में कृषि क्षेत्र का हिस्सा लगातार बढ़ रहा है, जो 2017-18 में 44.1% से बढ़कर 2023-24 में 46.1% हो गया है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में काम करने वाले लोगों की कुल संख्या 48.17 करोड़ थी। इसमें से 72 प्रतिशत कार्यबल ग्रामीण पृष्ठभूमि से है और इसमें से आधे से अधिक यानी 54.6 प्रतिशत या 26.3 करोड़ कृषि से जुड़े रोजगार में लगे हुए है। कृषि में काम करने वाले लोगों में मुख्य रूप से किसान और खेत मजदूर आते है। 2011 की जनगणना के अनुसार, इन दोनों समूहों के बीच में ज़मीन के मालिकाना हक़ की व्यवस्था एक मौलिक अंतर है, विशेष रूप से 'मालिकाना अधिकार', ‘लीज का अधिकार' और 'भूमि अनुबंध' का होना या न होना। जहां एक तरफ एक किसान के पास ज़मीन होती है, नहीं तो लीज या फिर अनुबंध होता है, वहीं दूसरी तरफ खेत मज़दूर भूमिहीन होते है और दूसरों की ज़मीन पर दिहाड़ी के लिए काम करते हैं। इसके अलावा छोटे और सीमांत किसान भी मजबूरी में दूसरों के खेतों या अन्य कामों में मजदूरी करते हैं, जिससे किसान और मजदूर के बीच की रेखा धुंधली हो गई है। खेत मजदूर ग्रामीण सर्वहारा वर्ग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जो कृषि उत्पादन में लगे हुए हैं। वह ग्रामीण भारत में सबसे दबे-कुचले और हाशिए पर रहने वाला वर्ग हैं। खेत मजदूर सभी संसाधनों से वंचित हैं और उनमें से भी ज्यादातर भूमिहीन है, उनके पास उत्पादन के कोई साधन नहीं है और वे आजीविका के लिए अपने श्रम पर निर्भर हैं। अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थिति के चलते वह शोषण का शिकार होते है और ज़मींदारों द्वारा तय न्यूनतम मजदूरी से भी कम पर काम करने को मजबूर हैं। ज्यादातर खेत मज़दूरों के पास घर तक नहीं होते, जिससे उनकी मुश्किलें और बढ़ जाती हैं। वे न सिर्फ़ आर्थिक रूप से शोषित होते हैं, बल्कि सामाजिक रूप से भी उनका शोषण होता है और हाशिये पर धकेल दिए जाते हैं, जहाँ उन्हें भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। महिला खेत मजदूरों को लैंगिक भेदभाव और सामाजिक उत्पीड़न झेलना पड़ता है और पुरुषों के मुकाबले समान काम के लिए बहुत कम मजदूरी मिलती है। व्यवस्थित उत्पीड़न के कारण खेत मज़दूर समग्र विकास की मुख्य धारा से बाहर हो जाते हैं, जिससे उनके जीवन में गरीबी और गैर-बराबरी का कुचक्रबना रहता है। ऐतिहासिक रूप से यह वर्ग शिक्षा से दूर रहा है और वर्तमान में भी इनके बच्चों को आज भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलती है, जिससे उनके सर्वांगीण विकास में बाधा आती है। संगठन और यूनियनों की कमी के कारण सामूहिक ताक़त, राजनीतिक चेतना और संघर्षों से ये मज़दूर अपरिचित रह जाते हैं। भारत के बंधुआ मजदूरों का सबसे बड़ा हिस्सा खेत मज़दूरों का रहा है। बंधुआ मजदूरी सामाजिक और आर्थिक शोषण का सबसे भयानक रूप है। यह गुलामी कर्ज़ और कर्ज़ के बोझ से पैदा होती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। देश के अलग-अलग हिस्सों में इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता था, जैसे गुजरात में 'हाली', बिहार में 'कमिया', मध्य प्रदेश में 'हरवाहा', आंध्र प्रदेश में 'गोठी', कर्नाटक में 'जीथा' आदि। हरित क्रांति के बाद कई प्रवासी मजदूरों को अपनी मजबूरियों के कारण जमींदारों द्वारा लगाई गई तरह-तरह की पाबंदियों को मानना पड़ा, जिससे वे बंधुआ मजदूरों जैसी हालत में पहुँच गए। ग्रामीण सामंती संरचना के अंतर्गत भूमिहीन परिवार आज भी अपनी रोज़ी- रोटी के लिए जमींदारों और अमीर किसानों पर निर्भर हैं और उनके हुक्म पर काम करने के लिए मजबूर हैं। हालांकि कानूनी तौर पर बंधुआ प्रथा समाप्त हो चुकी है, पर बेरोज़गारी के चलते मजदूरों को कम मजदूरी वाले अनुबंधों में जकड़ा जाता है। आज़ादी के बाद यह वर्ग सबसे तेज़ी से बढ़ने वाला वर्ग है। खासकर पिछले तीन दशकों में नवउदारवादी आर्थिक नीतियों के लागू होने के बाद खेतिहर मजदूरों की संख्या तेजी से बढ़ी है। 1960 से 2001 तक के चार दशकों में कुल कृषि कार्यबल में खेत मजदूरों से ज्यादा किसान थे। लेकिन, 2011 की जनगणना में पहली बार यह रुझान बदला। जनगणना से पता चला कि कुल कृषि कार्यबल में किसानों की हिस्सेदारी आधे से कम (लगभग 45%) रह गई थी, जबकि खेत मजदूरों की हिस्सेदारी करीब 55% थी। असल संख्या में किसानों की कुल संख्या 11,86,69,264 थी, जबकि खेतिहर मजदूरों की संख्या 14,43,29,833 थी। 1961 में हर 100 किसानों पर 33 खेत मजदूर थे, लेकिन 2011 में यह संख्या बढ़कर हर 100 किसानों पर 121 मजदूर हो गई। खेत मजदूरों की संख्या बढ़ने के कई कारण हैं, लेकिन सबसे बड़ा कारण है किसानों का गरीब होना, खासकर नवउदारवादी आर्थिक नीतियों के लागू होने के बाद। इन नीतियों के कारण कृषि को मिलने वाली सरकारी मदद कम हो गई, जिससे खेती की लागत बहुत बढ़ गई और न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) या फसल की खरीद की कोई गारंटी नहीं रही। इस वजह से कृषि की पूरी प्रक्रिया ज्यादा अनिश्चित हो गई है। पहले किसानों के लिए सिर्फ मौसम की ही अनिश्चितता थी - वे सूखे और बारिश से डरते थे, लेकिन अब बाजार की अनिश्चितताएँ प्रकृति से भी ज्यादा कठिन और कठोर हैं। जब पूरी प्रक्रिया का एकमात्र लक्ष्य मुनाफा ही होता है, तो इसमें खेत मजदूरों की जिंदगी का कोई मूल्य नहीं बचता। लगातार बने रहने वाला कृषि संकट छोटे और सीमांत किसानों को अपनी खेती से विस्थापित कर रहा है और वह किसानी छोड़ने के लिए मजबूर हो रहें है, क्योंकि अब खेती उनके परिवार का पेट नहीं पाल पा रही है। राष्ट्रीय सांख्यिकी संगठन के आँकड़ों पर आधारित अध्ययन बताते हैं कि लाखों छोटे किसानों को अपनी जमीन बेचनी पड़ रही है, खेती छोड़नी पड़ रही है और वह मजदूरों की कतारों में शामिल हो रहें हैं। सिर्फ किसान ही नहीं, बल्कि छोटे कारीगर भी अपना रोजगार खो रहें हैं और उन्हें खेत मजदूर के रूप में या अन्य छोटे-मोटे काम करने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। वर्तमान में खेत मजदूरों की संख्या किसानों से ज्यादा हो गई है, इसका मतलब है कि ज्यादा खेत मज़दूरों की खेती पर निर्भरता बढ़ गई है। खेत मजदूरों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन कृषि क्षेत्र में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ रहे हैं। साथ ही, मशीनों और प्रौद्योगिकी के अंधाधुंध इस्तेमाल ने कृषि में काम के दिन और कम कर दिए हैं। ग्रामीण भारत में बढ़ती बेरोजगारी, कृषि क्षेत्र में बढ़ते संकट और आमदनी की कमी के कारण युवाओं को अपनी जीविका के लिए पलायन करना पड़ रहा है। शहरों में आर्थिक संकट और बढ़ती बेरोजगारी एक जटिल स्थिति पैदा कर रही है। इन हालातों में, बड़ी संख्या में मजदूरों को गैर-कृषि क्षेत्रों में काम ढूँढ़ने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। यह स्थिति ग्रामीण भारत के मजदूरों को अपने परिवार के गुजारे के लिए तरह-तरह के काम करने पर मजबूर कर रही है। ज्यादातर खेत मजदूर पूरे साल किसी एक काम तक सीमित नहीं रहते। लगभग सभी ग्रामीण मजदूर अलग-अलग अनुपात में खेती के काम में हिस्सा लेते हैं। इसके अलावा, वह सब समय-समय पर कई तरह के काम करते हैं - जैसे मनरेगा का काम, ईंट भट्टे पर मजदूरी, खेतों में मजदूरी या फिर आस-पास के छोटे शहरों में औद्योगिक काम। खेती में काम करने वाले खेत मजदूर और गैर-कृषि काम करने वाले मजदूर अब मजदूरों के दो अलग-अलग समूह नही रह गए हैं। खेत मजदूर कृषि के साथ-साथ कई तरह के गैर-कृषि काम भी करते हैं, जिसमें शहरी इलाकों में पलायन करके काम करने वाले मजदूर भी शामिल हैं। फिर भी, ये मजदूर आंशिक रूप से गाँव और खेती से जुड़े रहते हैं और शहरी मजदूर वर्ग से कई मायनों में अलग हैं। इसका मतलब यह है कि गाँवों के बड़ी संख्या में मजदूर अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रहे हैं, लेकिन वे खेती से जुड़े हुए हैं। ज्यादातर खेत और ग्रामीण मजदूरों को सरकार द्वारा तय न्यूनतम मजदूरी से भी कम मजदूरी मिलती है। कम आमदनी और बढ़ती बेरोजगारी के बीच, खेत मजदूरों का जीवन कल्याणकारी योजनाओं और सार्वजनिक संस्थाओं पर निर्भर है। परंतु नवउदारवाद समर्थक पूँजीवादी ताकतें इन कल्याणकारी संस्थाओं के खिलाफ हैं। केरल की वाम मोर्चा सरकार को छोड़कर, पूरे देश में स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सार्वजनिक क्षेत्रों का तेजी से निजीकरण हो रहा है। सभी तरह की पेंशन योजनाओं को सीमित करने की वजह से ग्रामीण भारत का एक बड़ा हिस्सा परेशान है। स्थिति इतनी खराब है कि मनरेगा के तहत रोज़गार के अधिकार को जानबूझकर कमजोर किया जा रहा है। संकट इतना गहरा हो चुका है कि खेत मजदूर आत्महत्या तक करने पर मजबूर हो रहे हैं, जो उनकी भयावह स्थिति को दर्शाता है। एनसीआरबी की रिपोर्ट के अनुसार, 2014 से अब तक कुल 40,685 खेत मजदूरों ने आत्महत्या की है। जिस समय खेत मजदूरों के रोज़गार और रहन-सहन में बदलाव आ रहा है, तब गाँवों में एक नए अमीर वर्ग का भी उदय हुआ है।

तृतीय श्रेणी शिक्षकों के तबादलों की स्थायी नीति बने

आशीष जोशी

परीक्षाएं समाप्त होने के साथ ही प्रदेश के स्कूलों में ग्रीष्मावकाश भी शुरू हो गया है। जुलाई में सरकारी स्कूलों में नया शिक्षा सत्र भी शुरू हो जाएगा। लेकिन यक्ष प्रश्न यही बना हुआ है कि क्या इस बार तृतीय श्रेणी शिक्षकों के तबादले हो पाएंगे। यह प्रश्न इसलिए भी कि पिछले सात साल से इस श्रेणी के शिक्षक अपने इच्छित स्थान पर पदस्थापन का इंतजार कर रहे हैं। इनमें बड़ी संख्या में नवनियुक्त शिक्षक भी हैं, जिनका नियुक्ति के बाद एक बार भी तबादला नहीं हुआ। यों तो तबादला करना या न करना सरकार का विशेष अधिकार है लेकिन सिर्फ तृतीय श्रेणी शिक्षकों को ही तबादलों से वंचित करने पर खुद शिक्षक भी सवाल खड़े कर रहे हैं। इन शिक्षकों की मांग है कि नया सत्र शुरू होने से पहले ही तृतीय श्रेणी शिक्षकों के तबादले किए जाएं। शिक्षकों का यह भी कहना है कि खुद शिक्षा मंत्री मदन दिलावर कह चुके हैं कि 15 मार्च के बाद तबादले खोले जाएंगे। हालांकि यह तिथि भी निकल चुकी है। पिछले कांग्रेस राज में भी पांच साल तक तृतीय श्रेणी शिक्षक तबादलों की मांग करते रहे, लेकिन तब भी तबादले नहीं हुए। अंतिम बार वर्ष 2018 में ही इस श्रेणी के शिक्षकों के तबादले हो सके थे। तब भी बड़ी संख्या में एकल महिला, विधवा,

परित्यक्ता, दिव्यांगों के अलावा गंभीर रोग से ग्रसित आवेदकों को राहत मिली थी। सरकार चाहे कांग्रेस की रही हो या भाजपा की। शिक्षकों के तबादले, नीति नहीं होने की आड़ में ही अटकाए जाते रहे हैं। कई कमेटियां व मंत्रिमंडलीय उपसमिति के गठन के बावजूद तबादलों को लेकर कोई कारगर नीति नहीं बन सकी है। वर्ष 1994 से लेकर वर्ष 2021 तक करीब आधा दर्जन कमेटियां तबादला नीति पर सुझाव देने को लेकर बनी लेकिन नतीजा सिफर ही रहा। दरअसल तबादलों के लिए डिजायर संस्कृति ने ही कोई नीति नहीं बनने दी। प्रदेश में करीब साढ़े तीन लाख तृतीय श्रेणी शिक्षक हैं। इनमें से 72 हजार शिक्षक कई वर्षों से ‘डार्क जोन’ वाले जिलों में कार्यरत हैं। वे अपने गृह जिले के आसपास आना चाहते हैं। अब शिक्षक संगठनों ने तबादले नहीं खोलने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। प्रदेश में अगले महीने तक तबादला प्रक्रिया पूरी नहीं हो पाती तो फिर नया शिक्षा सत्र शुरू हो जाएगा। सरकार को शिक्षक संगठनों से भी विचार-विमर्श कर तबादलों की स्थायी नीति बनानी चाहिए ताकि असमंजस दूर हो सके।

स्वामित्वाधिकारी, मुद्रक व प्रकाशक व संपादक **सरोज चौधरी** द्वारा ई-37, अशोक विहार रांची से प्रकाशित तथा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस लालगुटवा रांची से मुद्रित, **संस्थापक संपादक : स्व. राधाकृष्ण चौधरी, प्रबंध संपादक अरूण कुमार चौधरी * फोन :** 9471170557/08084674042, **ई-मेल :** aadivashiexpress@gmail.com

उपायुक्त मनीष कुमार की अध्यक्षता में जिला परियोजना प्रबंधक, ई0 पंचायत, सभी मुखिया, सभी पंचायत सचिव एवं सभी रोजगार के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक आयोजित की गई

• सभी पंचायत सचिवालय एवं विद्यालयों में शौचालय की व्यवस्था दुरुस्त करना सुनिश्चित करें पंचायतः उपायुक्त • पंचायत सचिवालय भवन से बायोमैट्रिक उपस्थिति बनाना सुनिश्चित करें पंचायत सचिवः डीसी • उपायुक्त मनीष कुमार की अध्यक्षता में सभी सभी मुखिया, सभी पंचायत सचिव एवं सभी रोजगार सेवक के साथ बैठक कर सभी पंचायत सचिवालय एवं विद्यालयों में शौचालय ठीक करने व बनाने हेतु निर्देशित किया गया • पंचायत सचिवालय भवन को आदर्श पंचायत सचिवालय भवन में करें तब्दीलः डीसी

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
उपायुक्त मनीष कुमार द्वारा सभी मुखिया एवं पंचायत सचिव को अंतिम चेतवानी देते हुए सभी पंचायत के पंचायत सचिवालय भवन को आदर्श पंचायत सचिवालय भवन में परिवर्तित करने हेतु पंचायत सचिवालय भवनों को प्रतिदिन ससमय खोलने, पंचायत सचिव द्वारा बायोमैट्रिक उपस्थिति दर्ज करने, आधारभूत सुविधा यथा पेयजल जनप्रतिनिधियों एवं पंचायतस्तरीय कर्मियों के कक्ष के आगे नेम प्लेट, फूल के गमले, नोटिस बोर्ड, वाइट बोर्ड, सुझाव पेटी, सभी कमरों के दरवाजों एवं खिड़कियों में पर्दा, पेपर स्टैंड एवं दैनिक समाचार पत्रों की उपलब्धता, झंडोतोलन हेतु स्थल का निर्माण इत्यादि कार्य 31 मई तक हर हाल में पूर्ण करने का निर्देश दिया।

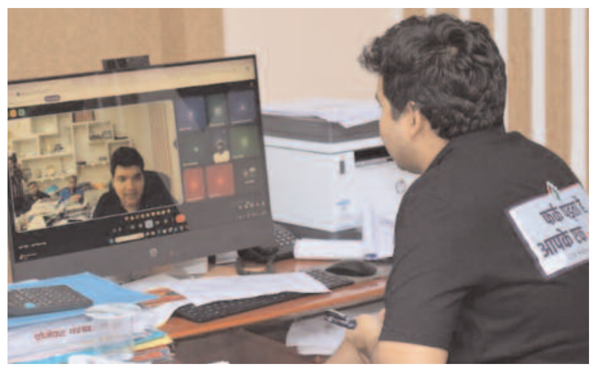

15 वें वित्त आयोग की राशि से राजस्व प्राप्ति से संबंधित योजनाओं का करें चयनः उपायुक्त
बैठक के दौरान उपायुक्त ने 15 वें वित्त आयोग के तहत खर्च की जाने वाली राशि की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने ग्राम पंचायत स्तर एवं पंचायत समिति स्तर पर खर्च की गई राशि की अद्यतन स्थिति की जानकारी प्राप्त की। बैठक के दौरान उन्होंने ने संबंधित मुखिया एवं पंचायत सचिव को निर्देशित करते हुए कहा कि 15 वें वित्त मद से क्रियान्वित योजनाओं हेतु निर्गत मार्गदर्शिका में स्पष्ट रूप से अंकित है कि त्रिस्तरीय पंचायतों को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में काम करने के लिए आवश्यक है कि वे स्वयं के आय स्त्रोत विकसित करें एवं कम से कम इतनी आय जरूर सृजित करें कि स्वयं की स्थापना, कार्यालय व्यय एवं आवश्यक कर्मियों के लिए मानदेय आदि का भुगतान कर सकें। अतः त्रिस्तरीय पंचायती राज संस्थाओं से अपेक्षा की जाती है कि इस अनुदान मद की राशि से स्वयं के आय स्त्रोत में वृद्धि के नए स्त्रोत / आय वृद्धि में संवर्धन से लक्षित योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर चयनित,क्रियान्वित एवं संचालित करें। त्रिस्तरीय पंचायतें अपने स्व आय स्त्रोत में वृद्धि सृजन के लिए स्व वित्त पोषित योजनाएँ, जिसमें किसी योजना/ अनुदान मद की राशि का व्यय निहित न हो, को क्रियान्वित करने के लिए स्वतंत्र होगीं। ग्राम पंचायत स्तर ज़रूरत की योजनाओं का चयन कर निर्माण पर राशि खर्च करें। अतः ये आवश्यक है की ग्राम पंचायत राजस्व प्राप्ति से संबंधित योजनाओं का चयन कर क्रियान्वयन करें।

आवास को ससमय पूर्ण कराना करें सुनिश्चितः उपायुक्त
आवास योजना की समीक्षा के क्रम में उपायुक्त महोदय द्वारा लंबित सभी प्रकार के आवास को जल्द से जल्द पूर्ण करवाने का निर्देश दिया गया। साथ ही मनरेगा योजना में सभी का मास्टर रोल जेनेरेट करने का निर्देश दिया गया। पूर्ण हो चुके आवास में से 1500 आवास में दिनांक-28.05.2025 को विधिवत गृह प्रवेश कार्यक्रम के आयोजन का निर्देश सभी पंचायत सचिव एवं मुखिया को दिया गया।

बिरसा हरित ग्राम योजना में पिट डिजिंग शत प्रतिशत पूर्ण करना करें सुनिश्चितः उपायुक्त
मनरेगा योजना अंतर्गत बिरसा हरित ग्राम योजना में 29 मई तक सभी स्वीकृत योजनाओं में शत प्रतिशत पिट डिजिंग एवं फेंसिंग का कार्य पूर्ण करने का निर्देश सभी मुखिया, पंचायत सचिव एवं रोजगार सेवक को दिया गया।
इसके अतिरिक्त बारिश के मौसम को ध्यान में रखते हुए वैक्टर जनित रोग से बचाव हेतु मच्छरदानी का उपयोग के लिये प्रेरित करें। साथ ही नियमित रूप से जागरूकता अभियान चलाकर ग्रामीणों को जागरूक अवश्य करें।

संक्षिप्त समाचार

डायरिया से गंभीर रूप से पीड़ित चार मरीज भर्ती

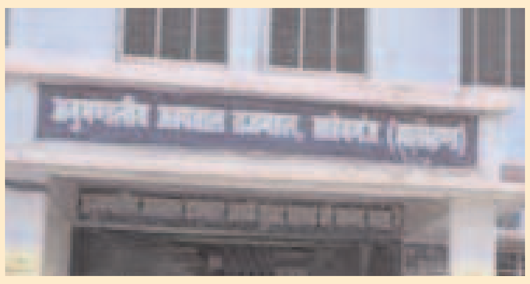

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज
साहिबगंज। राजमहल प्रखंड में बदलते मौसम के साथ क्षेत्र में एक बार फिर डायरिया का प्रकोप तेजी से बढ़ रहा है रविवार को अनुमंडल अस्पताल में डायरिया से गंभीर रूप से पीड़ित चार मरीज भर्ती हैं। जिसका डॉक्टरों की देखरेख में इलाज किया जा रहा है। इस संबंध में अस्पताल के प्रभारी प्रभार उपाधीक्षक डॉक्टर सादिक अंसारी ने बताया कि एक बार फिर से बदलते मौसम के मिजाज के कारण डायरिया, लूज मोशन क्षेत्र में फैल रहा है। लगातार डायरिया के मरीज अस्पताल पहुंच रहे हैं हालांकि सभी का इलाज किया जा रहा है। पर्याप्त रूप से डायरिया से संबंधित दवा ओआरएस एवं सलाइन आदि उपलब्ध है। अस्पताल में मरीजों को सारी व्यवस्था दी जा रही है। पिछले कई दिनों से लगातार डायरिया के मरीज अस्पताल में आते देखे जा रहे हैं।

रजत जयंती के रूप में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज
साहिबगंज के बरहरवा सब्जी मंडी में स्थापित सरस्वती शिशु विद्या मंदिर बरहरवा के 25वें वर्षगांठ पर शनिवार की संध्या विद्यालय प्रांगण में रजत जयंती के रूप में वार्षिकोत्सव कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बरहरवा एसडीपीओ नितिन खंडेलवाल शामिल हुए। विद्यालय में अध्यनरत छात्राओं ने गणेश वंदना कार्यक्रम का शुभारंभ के साथ रामायण के गुरुकुल पर आधारित नाटक, चंद्रशेखर आजाद की वीर गाथा की कहानी पर आधारित नाटक एवं हाल में हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार में ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान के 9 आतंकी संगठनों पर हवाई फायरिंग के तहत सैकड़ो आतंकवादियों की सफाया करने की दृश्य को नाटक के आधार पर रखा।

शव को पैतृक निवास स्थान पाकुड़ जिले के महेशपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत गवाल पाड़ा गांव भेज दिया गया

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज
साहिबगंज। जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के पुलिस लाईन महिला बैरेक के पास से रविवार की सुबह मिले आरक्षी जवान सुरजीत कुमार यादव का शव बरामद होने के बाद प्रभारी एसपी सह गोड्डा एसपी अनिमेष नैथानी ने घटनास्थल पर पहुंचकर बारीकी से कई चीजों का जायजा लेते हुए संबंधित वरीय पुलिस पदाधिकारियों को कई तरह के दिशा निर्देश दिए। उधर थाना परिसर में बातचीत के क्रम में उन्होंने बताया कि इस मामले को लेकर कई संदिग्ध लोगों को हिरासत में लेकर उससे कड़ाई से पूछताछ की जा रही है जहां उनके खिलाफ प्रयाप्त साक्ष्य मिलने के बाद केस दर्ज करते हुए न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया जाएगा। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की गहराई से छानबीन कर रही है। उधर मृतक जवान को पुलिस लाईन मैदान में अंतिम सलामी देते हुए उसके शव को पैतृक निवास स्थान पाकुड़ जिले के महेशपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत गवाल पाड़ा गांव भेज दिया गया है। जहां पुलिस कल्याण कोष से मृतक जवान के परिजनों को 10 हजार रूपए आर्थिक सहायता के रूप में दिया गया है। इधर इस घटना से सभी पुलिसकर्मियों में शोक व्याप्त है।

पाकुड़ जिले के लिए 3150 क्विंटल धान का बीज हुआ प्राप्त, किसानों के बीच किया गया वितरण

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़- रविवार को संयुक्त कृषि भवन, पाकुड़ में बीज दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें जिला कृषि पदाधिकारी, जिला भूमि संरक्षण पदाधिकारी, जन प्रतिनिधिगण, प्रखंड तकनीकी प्रबंधक,तकनीकी सहायक एवं अन्य उपस्थित हुए। उक्त कार्यक्रम में किसानों को खरीफ मौसम में खरीफ के मुख्य फसलों जैसे धान, मक्का, ज्वार, रागी, तिल, उरद, अरहर आदि के प्रभेदों से अवगत कराया गया एवं बीज विनिमय वितरण तथा बीजोत्पादन योजना अंतर्गत खरीफ फसलों हेतु विभिन्न लैंप्स एवं एफपीओ में बीज की उपलब्धता की जानकारी किसानों को दी गई। जिला पाकुड़ हेतु कुल 3150 क्विंटल धान बीज एवं अन्य बीज का आवंटन प्राप्त हुआ है जिसे किसानों के बीच 50 प्रतिशत अनुदान पर जिला अंतर्गत लैंप्स एवं एफपीओ के माध्यम से ब्लॉक चैन टेक्नोलॉजी अंतर्गत ओटीपी के द्वारा वितरित किया जाएगा। इसके अतिरिक्त किसानों को अन्य योजनाओं जैसे बिरसा फसल विस्तार योजना, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एवं पोषण मिशन अंतर्गत क्लस्टर में शत प्रतिशत अनुदान पर उपलब्ध कराए जाने वाले बीजों की जानकारी दी गई।
अंत में खरीफ मौसम हेतु बीज वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए उपस्थित किसानों के बीच धान बीज का वितरण जन प्रतिनिधि, जिला कृषि पदाधिकारी एवं भूमि संरक्षण पदाधिकारी के द्वारा किया गया।

एक सिपाही का शव संदिग्ध अवस्था में मिला शव की पहचान पुलिस कर्मी सुरजीत यादव के रूप में हुई

पुलिस लाइन स्थित महिला बैरक के पास एक सिपाही का शव मिला

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
साहिबगंज। साहिबगंज पुलिस लाइन स्थित महिला बैरक के पास रविवार को एक सिपाही का शव संदिग्ध अवस्था में मिला। शव की पहचान पुलिसकर्मी सुरजीत यादव के रूप में हुई है। वह पुलिस लाइन में पद स्थापित थे। उनका बायां हाथ टूटा हुआ था और शरीर पर कई जगह चोट के निशान थे। आशंका जताई जा रही है कि शनिवार की रात घटना को अंजाम दिया गया है। घटना की जानकारी मिलते ही जिरवाबाड़ी थाना पुलिस मौके पर पहुंची। शव को जिरवाबाड़ी थाना पुलिस अपने कब्जे में लेते हुए पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेजा गया। मेडिकल बोर्ड की टीम मे डॉ मुकेश कुमार, डॉ प्रशांत कुमार, डॉ ऋतुराज ने पोस्टमार्टम किया। पहले गोली मारने की आशंका जताई

गई थी, लेकिन पोस्टमार्टम में गोली लगने की पुष्टि नहीं हुई है। सुरजीत यादव मूल रूप से पाकुड़ जिले के महेशपुर थाना क्षेत्र के ग्वालापाड़ा गांव के रहने वाले थे। 2011 में झारखंड पुलिस में बहाल हुए थे। 2015 में उनकी शादी शोभनपुर भट्टा निवासी सुरेंद्र यादव की बड़ी बेटी से हुई थी। उनकी दो बेटियां हैं, एक 7 साल की, दूसरी 2 साल की। बड़ी बेटी संत जेवियर स्कूल में पढ़ती है। सुरजीत ने आजाद नगर में जमीन लेकर घर बनाया था। दो दिन पहले उनका तबादला मुफ्फसिल थाना से पुलिस लाइन किया गया था। वह टाइगर मोबाइल और सिविल जज के अंगरक्षक भी रह चुके हैं। पुलिस सूत्रों के अनुसार सुरजीत की ड्यूटी कमान के तहत दुमका मंडल कारा में लगाई गई थी और वह जल्दी वहां रवाना होने वाले थे। लेकिन उससे पहले ही उनकी रहस्यमई मौत हो गई जिससे पूरे पुलिस महकमे में खलबली मच गई है। पत्नी ने बताया कि शनिवार शाम वह एक साथी सिपाही के साथ घर से निकले थे। रात में घर नहीं लौटे। काफी खोजबीन की गई, लेकिन पता नहीं चला। साहिबगंज एसपी अमित कुमार सिंह कोलकाता में है। उनके नहीं होने पर गोड्डा एसपी अनिमेष नैथानी ने जांच की। गोड्डा एसपी ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। संदिग्ध पुलिस कर्मियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। एसआईटी टीम का गठन कर दिया गया है। पुलिस ने कहा कि जल्द ही मामले का खुलासा कर लिया जाएगा। किसी भी कीमत पर अपराधियों को बख्शा नहीं जाएगा।

समर कैंप में हुए प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने लिया हिस्सा

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़
पाकुड़- प्रोजेक्ट परख के तहत जिले के सभी कस्तूरबा विद्यालय, डिस्ट्रिक सीएम एसओई पाकुड़ राज, सीएम एसओई गर्ल्स पाकुड़, रानी ज्योतिर्मय गर्ल्स हाई स्कूल पाकुड़, सीआरसी धनुषपूजा, मॉडल स्कूल काशीला, आरके 10+2 हाई स्कूल बिरकिट्टी महेशपुर, 10+2 हाई स्कूल महेशपुर सहित अन्य विद्यालयों में समर कैंप का आयोजन किया गया। कैंप में छात्राएं योग, मेहंदी, पेपर क्राफ्ट और ड्राइंग, खेलकूद, संगीत प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा दिखाई। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्राओं को सम्मानित किया गया। जिला शिक्षा पदाधिकारी सुश्री अनीता पुरती ने कहा कि बेटियों में प्रतिभा कूट कूट कर भरी हुई है। इस तरह के आयोजन से छात्राओं में प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित होती हैं। उन्होंने छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद और संगीत में भी आगे बढ़ने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि यह कैंप जिला प्रशासन और शिक्षा विभाग के निर्देश पर आयोजित किया जा रहा है। इससे छात्राओं में आत्मनिर्भरता, रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।

पूर्व विधायक रणधीर कुमार सिंह के नेतृत्व में भाजपाइयों के द्वारा निकाली गई तिरंगा यात्रा

आदिवासी एक्सप्रेस/देवघर
कृष्णा गोस्वामी
ऑपरेशन सिंदूर के तहत भारतीय सेना द्वारा पाकिस्तान में छुपे आतंकियों और पाकिस्तान सेना को मुंहतोड़ जवाब देने को लेकर हिंदुस्तान सेना के सम्मान में सारठ विधानसभा के पूर्व विधायक सह पूर्व मंत्री रणधीर कुमार सिंह के नेतृत्व में सैकड़ों भाजपाइयों के साथ पालोजोरी में तिरंगा यात्रा निकाली गयी। यह तिरंगा यात्रा पालोजोरी के पुराना पैट्रोल पम्प से मुख्य चौक होते हुए पूरे पालोजोरी बाजार भ्रमण करते हुए महावीर चौक होते हुए ठेंगाडीह के विकास विद्यालय तक पहुँची वापस पेट्रोल पंप पहुंचे। इस बाबत उन्होंने कहा कि जिस प्रकार पाकिस्तान के आतंकियों ने पहलगांव में निर्दोष निहत्थे पर्यटकों पर हमला कर 28 लोगों की जान ले लिया था। जिसके जबाब में भारतीय सेना ने अदम्य साहस दिखाते हुए पाकिस्तान में घुसकर आतंकियों के ठिकानों को नेस्तनाबूद कर दिया।वहीं पाकिस्तानी सेना द्वारा आतंकियों के समर्थन में हमला करने पर जिस प्रकार भारतीय सेना ने मुंहतोड़ जबाब देकर पाकिस्तान को घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया वह अति सराहनीय कार्य है। इसके लिए सेना के तीनों अंगों को पूरा देश सलाम कर रहा है। सेना का अदम्य पराक्रम को सम्मान देने व आभार प्रकट करने के लिए पूरे देश में भाजपाइयों ने आम जनता के साथ मिलकर तिरंगा यात्रा निकाला है। पूरा देश सेना पर गर्व कर रहा है आज सेना के पराक्रम से पूरे विश्व में भारत का सर ऊंचा हुआ है। तिरंगा यात्रा के दौरान संतोष साह, गोरा दास, सुशील साधु, पिन्टू हलदर, रोशन साह, बिक्की भगत, सीताराम टुडू, रोहित राय, उत्तम राय, पवन मिर्धा, आशीष रुज, रबिन्द्र रुज, पिन्टू मोदी, पवन, उदय, संतोष मंडल, उत्तम, राजेश कापरी, सत्यवान पंडित, मनु राय, पप्पू कापरी, पप्पू साह, कामदेव मंडल, राजू पंडित, केशव दास, जितेंद्र राय, पंचानंद कापरी, पप्पू राय, शूकर, टुनटुन, सहित उपस्थित थे।

साहिबगंज जिला मुख्यालय के समाहरणालय के समीप एकदिवसीय विशाल धरना प्रदर्शन कार्यक्रम को आयोजित किया जायेगा

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
साहिबगंज- झामुमो केंद्रीय कमिटी के निर्देश पर केंद्र सरकार द्वारा घोषित जाति जनगणना में आदिवासी सरना धर्म कोड को लागू नहीं किए जाने के विरोध में आगामी 27 मई को साहिबगंज जिला मुख्यालय के समाहरणालय के समीप एकदिवसीय विशाल धरना प्रदर्शन कार्यक्रम को आयोजित किया जायेगा.जहां इस कार्यक्रम को सफल बनाने को लेकर जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र के पचगढ़ स्थित स्वंयवर बैंकेट हॉल में झामुमो के नगर अध्यक्ष आदित्य कुमार

यादव व प्रखंड अध्यक्ष अमरदीप सिंह के संयुक्त अध्यक्षता में झामुमो कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की। जहां इस दौरान सभी झामुमो कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया गया कि वे अधिक से अधिक संख्या में इस धरना प्रदर्शन कार्यक्रम में शामिल हो और इसे सफल बनाए। इस मौके पर झामुमो के जिला संगठन सचिव वारिस अंसारी मो.कामरान अहमद, मो.जमालुद्दीन, कपिल दास, राजेंद्र कुमार, मुकेश कुमार सिंह, अनीस, मो फैसल, मो तारिक खान, मो सोनू, संजीत सिन्हा, गोपाल मंडल, विनीत कुमार, मो सैफ अहमद, मो राजा मुराद, मो कमरान अहमद, आकाश कुमार चौधरी, मो शाहिद अंसारी, मो जमालुद्दीन, मो फारूक समेत अन्य झामुमो कार्यकर्ता मौजूद थे।

27 को झामुमो का विशाल धरना प्रदर्शन जिला मुख्यालय मेंः झामुमो जिला अध्यक्ष अरुण सिंह

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
साहिबगंजः बोरियो झामुमो प्रखण्ड कमेटी की बैठक मोरंग नदी के समीप हुई। उक्त बैठक में मुख्य अतिथि के रूप में झामुमो जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह शामिल हुए। बैठक में जिला अध्यक्ष अरुण कुमार सिंह ने सभी 17 पंचायतों के अध्यक्ष सचिव व पूरी कमेटी को निर्देशित किया कि आगामी 27 मई मंगलवार को जिला समाहरणालय के समीप विशाल धरना प्रदर्शन कार्यक्रम भाजपा की केंद्र सरकार विरोध में झामुमो जिला कमेटी के द्वारा किया जाना है। झारखण्ड की पुरानी मांग सरना धर्म कोड/ आदिवासी धर्म कोड विधेयक को

लागू जब तक केंद्र की सरकार झारखंड में नही करती है, तब तक जातिगत जनगणना नही के पक्ष में पूरा झारखण्ड खड़ा है। केंद्र की भाजपा सरकार सरना धर्म कोड विरोधी है, जब जबकि अबुआ सरकार के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के द्वारा विधानसभा से पूर्ण बहुमत के साथ राज्यपाल के माध्यम से केंद्र सरकार को इस विधेयक को झारखंड में लागू करने के लिए भेजा पर आज तक इस पर भाजपा चुप्पी साधे हुई है।पहले सरना उसके बाद जातिगत जनगणना हो। हमें हमारा अधिकार से केंद्र की सरकार वंचित रखना चाहती है,जो गलत है। मौके पर झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य संजय मिश्रा उर्फ बबलू मिश्रा, सांसद प्रतिनिधि स्टीफन मुर्मु, प्रखण्ड अध्यक्ष जेठा मरांडी, सचिव गफ्फार अंसारी, कोषाध्यक्ष निताय मंडल, रिजवान अंसारी, मों एजाज़ अंसारी, मिट्ठू कुमार दत्ता, बाबूलाल हेम्ब्रम, अर्जुन रजक, सुरेश मरांडी, शकल सोरेन, फरहाद अंसारी, रमेश, नजीर अंसारी, मंजूर आलम, कुतुबुद्दीन अंसारी, हेमलाल हेम्ब्रम, लखीराम समेत अन्य दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

आदिवासी समुदाय में एक बार फिर आंदोलन की लहर तेज हो गई

आदिवासी एक्सप्रेस संवाददाता
साहिबगंज। राजमहल सरना धर्म कोड की मान्यता को लेकर आदिवासी समुदाय में एक बार फिर आंदोलन की लहर तेज हो गई है। इसी क्रम में 27 मई को राजमहल में प्रस्तावित धरना-प्रदर्शन की तैयारियों को अंतिम रूप देने हेतु एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया।बैठक में विधायक प्रतिनिधि मोहम्मद मारुफ उर्फ गुड्डू शेख मुख्य अतिथि के रूप

में उपस्थित रहे, जबकि अध्यक्षता नगर अध्यक्ष मोहम्मद आजाद शेख ने की। इस बैठक में आंदोलन की रूपरेखा तय की गई और इसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए व्यापक जनजागरूकता अभियान चलाने का निर्णय लिया गया। वक्ताओं ने कहा कि सरना धर्म कोड केवल धार्मिक मान्यता का विषय नहीं, बल्कि यह आदिवासी अस्मिता, पहचान और अस्तित्व से जुड़ा हुआ मुद्दा है। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार से मांग की कि सरना धर्म कोड को जल्द से जल्द संवैधानिक मान्यता प्रदान की जाए ताकि आदिवासी समाज की अलग धार्मिक पहचान को सुरक्षित किया जा सके।बैठक में कई प्रमुख लोग मौजूद रहे, जिनमें शामिल हैंः मोहम्मद एखलाकुर रहमान, सामाजिक कार्यकर्ता मोहम्मद अनिसुर रहमान, झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य दुर्गा मंडल, राजमहल प्रखंड अध्यक्ष मोहम्मद आजाद शेख, राजमहल प्रखंड सचिवआय्युब उर्फ बाबू, राजमहल नगर अध्यक्ष विश्वाजित मंडल, उधवा प्रखंड अध्यक्ष अन्य कई पंचायत प्रतिनिधि एवं युवा कार्यकर्ता बैठक में यह भी तय हुआ कि आंदोलन को सफल बनाने हेतु गांव-गांव जाकर संपर्क अभियान चलाया जाएगा और आमजन को सरना धर्म कोड के महत्व से अवगत कराया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

संविधान बचाओ रैली की तैयारियों को लेकर जिला कांग्रेस कमेटी ने की समीक्षा बैठक

गिरिडीह, प्रतिनिधि। जिला कांग्रेस कमेटी के द्वारा आगामी 28 मई को संविधान बचाओ रैली की तैयारी को लेकर गिरिडीह नया परिसदन भवन में समीक्षा बैठक आयोजित की गई। इस बैठक में पर्यवेक्षक जी पी पटेल ने उपस्थित सभी कार्यकर्ताओं को निर्देश दिया कि राहुल गांधी का जो सपना है उसे हम सभी को मिलकर पूरा करना है। इस देश से भाजपा को भगाना है। साथ ही कहा कि रैली में हर प्रखंड से अधिक संख्या में हमारे कार्यकर्ता पहुंच पाए यह सुनिश्चित करें। जिला अध्यक्ष धनंजय सिंह ने कहा की संविधान बचाओ रैली में जिले के हर कोने से कार्यकर्ता पहुंचेंगे। यह वर्ष संगठन सृजन का है। प्रदेश प्रभारी के राजू और प्रदेश अध्यक्ष केशव महतो कमलेश के नेतृत्व में संगठन में और अधिक मजबूती आ रही है। बैठक में कार्यकारी अध्यक्ष सतीश केडिया,नरेश वर्मा, उपेंद्र सिंह, बलराम यादव, विमल कुमार सिंह, यूथ कांग्रेस के पुरुषोत्तम चौधरी, यश सिन्हा, अल्पसंख्यक मोर्चा के अध्यक्ष नूरी,ओबीसी के जिला अध्यक्ष इतवारी वर्मा, प्रखंड अध्यक्ष इम्तियाज, मनोज राय, मोतीलाल शास्त्री, निजाम अंसारी, निजामुद्दीन,अशोक कुमार निराला, धनंजय गोस्वामी, सोहेल कुरेशी साबिर खान,चांद, त्रिभुवन दास, चंद्रेशकर सिंह, अमित सिन्हा, समीर चौधरी समेत कई कार्यकर्ता थे।

गिरिडीह में ट्रैफिक सुधार के लिए डीएसपी कौसर अली के नेतृत्व में अतिक्रमण हटाओ अभियान

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह पुलिस ने रविवार को टावर चौक क्षेत्र में ट्रैफिक व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया। इस अभियान का नेतृत्व डीएसपी-2 कौसर अली ने किया। बताया गया कि मेन रोड पर लगातार जाम की स्थिति बनी रहती है, जिससे राहगीरों को भारी परेशानी होती है। अभियान के तहत सड़क किनारे से अतिक्रमण हटाया गया और मेन रोड को जाम मुक्त किया गया। पुलिस ने बताया कि यह अभियान आगे भी जारी रहेगा और नागरिकों से अपील की गई कि वे मुख्य मार्गों को अतिक्रमण मुक्त रखने में सहयोग करें।

गिरिडीह में भीषण सड़क हादसा: दो वाहन चालकों की मौत

- दर्जनों मवेशी भी कुचले गए

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह जिले के ताराटांड थाना क्षेत्र में मोहलीडीह के पास सुबह एक दिल दहला देने वाला सड़क हादसा हुआ। सीमेंट लदी ट्रक और मवेशियों से भरे वाहन की आमने-सामने जबरदस्त टक्कर में दोनों चालकों की मौके पर ही मौत हो गई। टक्कर इतनी भयावह थी कि दोनों वाहनों के परखच्चे उड़ गए और एक दर्जन से ज्यादा मवेशियों की भी जान चली गई। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और सैकड़ों की भीड़ घटनास्थल पर उमड़ पड़ी।घटना की सूचना मिलते ही ताराटांड थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जेसीबी मशीन से बुरी तरह फंसे चालकों के शवों को बाहर निकाला। बताया जा रहा है कि एक वाहन गिरिडीह से धनबाद और दूसरा धनबाद से गिरिडीह की ओर जा रहा था। फिलहाल मृत चालकों की पहचान नहीं हो सकी है। यह हादसा न सिर्फ दो परिवारों के चिराग बुझा गया, बल्कि दर्जनों मवेशियों की मौत ने पशुपालन करने वाले गरीबों को भी गहरा झटका दिया है।

गुरुवार को गिरी 11 हजार वोल्ट की तार, सड़क पर लगी आग

गिरिडीह, प्रतिनिधि। गिरिडीह जिले के बगोदर थाना क्षेत्र स्थित मंझलाडीह में गुरुवार शाम को उस समय हड़कंप मच गया जब 11 हजार वोल्ट की हाई वोल्टेज बिजली की तार अचानक टूटकर राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच) के पास गिर गई। तार के गिरते ही सड़क पर आग लग गई, जिससे अफरा-तफरी का माहौल पैदा हो गया। आग तेजी से फैलने लगी, लेकिन समय रहते बिजली विभाग की टीम मौके पर पहुंची और बिजली आपूर्ति को बाधित कर क्षतिग्रस्त तार को बदला गया। गनीमत रही कि इस हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ।

कंपोजिट कंट्रोल रूम तथा प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए चिन्हित किए गए स्थल

सुस्मित तिवारी
आदिवासी एक्सप्रेस ब्यूरो पाकुड़

उपायुक्त मनीष कुमार व पुलिस अधीक्षक प्रभात कुमार के द्वारा मुख्य डाकघर के समीप कंपोजिट कंट्रोल रूम निर्माण करने हेतु स्थल का निरीक्षण किया। साथ ही प्रोजेक्ट प्रयास के तहत प्रतियोगी परीक्षाओं का संचालन हेतु खाली पड़े सर्व शिक्षा अभियान के पुराने कार्यालय भवन को चिन्हित कर जीर्णोद्धार करने का निर्देश दिया गया।

जमुआ में बालू का अवैध खनन जोरो पर! प्रशासन कुंभकरणी नींद में सोया, आंखों पर लगी हैं काली पट्टी

- बेरहाबाद में बालू उठाव रोकने को लेकर ग्रामीणों ने की बैठक, बालू उठाव पर रोक लगाने की बनी सहमती
- आवेदन देने की बाद भी जमुआ पुलिस प्रशासन कोई हरकत में नहीं, इनकी कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह लगाता है

जमुआ, प्रतिनिधि। जमुआ प्रखंड अंतर्गत बेरहाबाद पंचायत में बालू के अवैध खनन पर रोक लगाने को लेकर बैठक की गई। बैठक की अध्यक्षता मुखिया प्रतिनिधि गौतम सागर राणा ने की।

जब पुलिस प्रशासन से बालू का अवैध खनन पर रोक नहीं लग पा रहा है, तो क्राइम पर अंकुश कैसे लगेगा: गौतम सागर राणा

मौके पर मुखिया प्रतिनिधि गौतम सागर राणा ने कहा कि बालू हमारे ही संपदा है, इसे बचाना हमारी जिम्मेवारी है। यहां पूरे प्रखंड में बालू का अवैध खनन पर प्रशासन को रोक लगाना चाहिए, सरकार को करोड़ों रुपए के राजस्व का नुकसान हो रहा हैं। अभी भी बालू का उठाव लगातार हो रहा है, लेकिन प्रशासन पूरी तरह से कुंभकरणी नींद में सोया हुआ है। प्रशासन के द्वारा बालू माफियाओं के खिलाफ कोई भी कदम अभी तक नहीं उठाया गया। जो प्रशासन की कार्यशैली पर प्रश्न चिन्ह लगाता है, इससे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रशासन की मिलीभगत से जमुआ में पूरी तरह से फल- फूल रहा है बालू का अवैध खनन का धंधा। प्रशासन मूकदर्शक की तरह देख रहा है। जब पुलिस प्रशासन से बालू का अवैध खनन पर रोक नहीं लग पा रहा है, तो क्राइम पर अंकुश कैसे लगेगा, ये सोचने वाली बात हैं।

बालू उठाव कर अन्य प्रखंडों तक निर्यात कर पूर्ण रूप से रोक लगाने का निर्णय लिया

बैठक में प्राकृति संपदा बचाव को लेकर विशेष रूप से चर्चा किया गया, वहीं लोगों ने अपनी-अपनी बातों को रखा और सभी ने इस अभियान को लेकर लिखित समर्थन भी किया। इस बैठक में विभिन्न बिंदुओं पर निर्णय लिया गया। जिसमें पंचायत स्तरीय बालू बचाव संघर्ष समिति का गठन करने का निर्णय भी लिया। बैठक में निर्णय लिया कि बालू उठाव कर अन्य प्रखंडों तक निर्यात कर पूर्ण रूप से रोक लगाने का निर्णय लिया। अगली बैठक में बालू बचाव संघर्ष समिति का गठन किया जाएगा। जमुआ प्रशासन को लिखित पत्राचार कर बालू उठाव कर रोक लगाने की मांग पर बनी सहमती।

बालू माफियाओं द्वारा कानून को ताक पर रख, बड़े पैमाने पर बालू उठाव कर दूसरे राज्यों में ऊंचे दामो पर बेचा जा रहा: ग्रामीण

मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने कहा कि नदी से बालू उठाव कर जमुआ प्रखंड के अलावे बड़े पैमाने पर बिहार राज्य भेजा जा रहा है। वहीं विरोध जताते हुए लोगों ने कहा कि हम लोग को घर बनाने के लिए ए ग्रेड का बढ़िया बालू नहीं मिलता है। कई आवास योजनाएं अधूरी हैं। वही बालू माफियाओं द्वारा कानून को ताक पर रख बड़े पैमाने पर बालू उठाव कर दूसरे राज्यों में ऊंचे दामो पर बेचा जा रहा है।

बालू का अवैध खनन पर रोक लगना जरूरी, नहीं तो हमलोगों को ऊंचे दामों में बालू को खरीदना पड़ेगा: मनोज यादव

मौके पर मनोज यादव ने कहा बालू का अवैध खनन पर रोक लगना चाहिए, अगर रोक नहीं लगती है तो हमारा भविष्य खतरे में पड़ जाएगी, आने वाले समय में हमलोगों को ऊंचे दामों में बालू को खरीदना पड़ेगा इसलिए इस पर रोक लगाया जाए।

बालू का अवैध खनन पर रोक लगना बहुत जरूरी है: राधे यादव

मौके पर राधे यादव ने कहा कि बालू का अवैध खनन पर रोक लगना बहुत जरूरी है, बालू खनन से नदियों का अस्तित्व खतरे में है और हम सभी ग्रामीणों को इसपर विशेष जागरूक होकर रोक लगना होगा तभी रुकेगी।

बैठक में इनकी रही मौजूदगी

बैठक में उप मुखिया इकबाल अंसारी, वार्ड सदस्य राजू सिंह, मंटू यादव, बसीर अंसारी, नरेश यादव, प्रदीप ठाकुर, महेंद्र दास, सोना यादव, इसरेल अंसारी, राधे यादव, प्रदीप तुरी, बासुदेव यादव, राजेश यादव, विजय यादव, सहदेव यादव, अमृत दास, हजरत अंसारी, मुस्तकीम अंसारी, घनश्याम यादव, बजरंगी यादव, पप्पू यादव, एजाज खान, बिनोद मोदी, शंकर मोदी आदि दर्जनों लोग मौजूद थे।

कांग्रेस का हर कार्यकर्ता संविधान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं: विनोद कुशवाहा

आदिवासी एक्सप्रेस
हजारीबाग। कार्मेल स्कूल चौक के समीप पैराडाइज रिसोर्ट में शनिवार को जिला कांग्रेस कमेटी के तत्वाधान में संविधान बचाओ सभा कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता कांग्रेस जिलाध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार यादव ने की। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष सह हजारीबाग जिला प्रभारी जलेश्वर महतो शरीक हुए। वहीं कांग्रेस के कई दिग्गज नेता ने संविधान बचाओ सभा में हुंकार भरी। आयोजित कार्यक्रम में झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महासचिव विनोद कुमार कुशवाहा ने हुंकार भरते हुए कहा कि संविधान भारत के करोड़ों नागरिकों की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक आजादी की गारंटी है और केंद्र की मौजूदा भाजपा सरकार देश में अराजकता का माहौल पैदा कर संविधान के साथ खिलवाड़ कर रही है और तरह तरह के षड्यंत्रों के जरिए संविधान को बदलने की नापाक मंसूबे बना रही जिसे कांग्रेस के सिपाही कभी कामयाब नही होने देंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का हर कार्यकर्ता संविधान की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध हैं। श्री कुशवाहा ने संविधान बचाओ अभियान को लेकर नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के संघर्षो का जिक्र करते हुए कहा कि राहुल गांधी संविधान की रक्षा के लिए लड़ रहे हैं। संविधान बचाओ सभा कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों को उनके संवैधानिक अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति जागरूक करना है।

जमुआ: कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कहा! काम करें कोई, पद ले कोई...

- जमुआ प्रखंड कांग्रेस कमेटी दो खेमे में विभक्त, कांग्रेस पर्यवेक्षक अमित सिन्हा पहुंचे जमुआ, दोनों गुटों से अलग अलग मिलकर विचार विमर्श किया
- एक कमिटी ने विरोध प्रकट किया, दूसरे गुट ने बैठक कर कांग्रेस कमेटी का गठन कर लिया
- जमुआ प्रखंड कांग्रेस कमेटी में गुटबाजी का मामला मधुबन की बैठक में रखा जाएगा: अमित सिन्हा

जमुआ, प्रतिनिधि। मोटी रकम लेकर एवं साजिश के तहत जमुआ में गैर कांग्रेसी को प्रखंड अध्यक्ष बनाए जाने के संबंध में अमित सिन्हा, संगठन सृजन कार्यक्रम पर्यवेक्षक को जमुआ प्रखंड के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने अलग से ज्ञापन सौंप कर मामले से प्रदेश के पदाधिकारियों से निराकरण की मांग की। पर्यवेक्षक अमित सिन्हा ने उस मामले को वरीय पदाधिकारी के समक्ष रखने की बात कही। कांग्रेस द्वारा सौंपे गए ज्ञापन में उल्लेखनीय है, कि जमुआ प्रखंड में पिछले कई वर्षो से संगठन का कार्य बहुत ही अच्छे और सुचारू रूप से चल रहा था, मगर जिला अध्यक्ष एवं कार्यकारी अध्यक्ष, वह प्रदेश सचिव द्वारा झामुमो से मिलकर संगठन को तोड़कर पार्टी को कमजोर करने के नियत से एक गैर कांग्रेसी को मोटी रकम लेकर जमुआ प्रखंड अध्यक्ष बना दिया गया। जिससे यहां के तमाम पुराने कांग्रेसजनों में भारी रोष है और इस मामले को लेकर कई बार पार्टी आलाकमान को लिखित तथा मौखिक जानकारी देकर जांच तथा कार्रवाई की मांग की गई है। मगर आज तक कोई विचार नहीं होने से पार्टी एवं पार्टी संगठन को भारी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है, जांच करके यह भी देखा जा सकता है पिछले 10 वर्षो के कार्यकाल में संगठन द्वारा जितनी बैठक एवं धरना प्रदर्शन, भारत जोड़ो यात्रा सहित सभी कार्यक्रम में उक्त नए प्रखंड अध्यक्ष का कोई योगदान नहीं रहा और पुराने कांग्रेस जनों को उसके पार्टी में आने या रहने की कोई जानकारी नहीं है। इस संबंध में वर्तमान झारखंड प्रदेश के प्रभारी के राजू जी को लिखित आवेदन देकर जांच की मांग की गई थी। मगर विडंबना या है कि आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई अतः आपसे जमुआ प्रखंड के तमाम पुराने पार्टी के कार्यकर्ताओं द्वारा यह मांग किया जाता है कि अभिलंब जांच किया जाए और उचित कार्रवाई की जाए। इतना ही नहीं सामान्य वर्ग के लोगों को कमिटी गठन में उपेक्षा किया गया है।

इनकी रही मौजूदगी

कांग्रेस कमेटी के प्रखंड उपाध्यक्ष मो अली असगर अंसारी, समेत महशर ईमाम, सच्चिदानंद सिंह, अली असगर अंसारी, मुंसाफ आलम, फरीद आलम, महताब आलम, तस्लीम उद्दीन, ज़फरुल अंसारी, कुलो अंसारी, सोहेल आलम आदि मौजूद थे।

क्या कहते हैं सृजन कार्यक्रम पर्यवेक्षक

संगठन सृजन कार्यक्रम पर्यवेक्षक अमित सिन्हा ने कहा कि जमुआ प्रखंड में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा एक अभ्यावेदन प्राप्त हुआ है उस मामले को 27 तारीख को मधुबन में आयोजित बैठक में प्रदेश के पदाधिकारी के समक्ष रखा जाएगा।

उच्च विद्यालय भंडारों में भवन निर्माण कार्य को ग्रामीणों ने रोका प्रमुख प्रतिनिधि एवं उप प्रमुख ने की ग्रामीणों की अगुवाई

- भवन निर्माण कार्य में अत्यंत घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है: रब्बुल हसन रब्बानी
- भंडारों एवं चितरडीह में उच्च विद्यालय भवन को इसी संवेदक द्वारा घटिया सामग्री का इस्तेमाल कर कार्य की गुणवत्ता को बिगाड़ा गया है, इसकी शिकायत डीसी से की जाएगी: संजीत यादव

जमुआ, प्रतिनिधि। जमुआ प्रखंड के एसबीएम के उच्च विद्यालय भंडारों में निर्माणाधीन नए भवन की दूसरी मंजिल की ढलाई कार्य को शनिवार को ग्रामीणों ने अनियमितता एवं निम्न गुणवत्ता का आरोप लगाते हुए रोक दिया। बता दें कि वहां निर्माणाधीन बिल्डिंग के पहले तल्ले की ढलाई हो चुकी है।उसकी ढलाई कार्य में इतनी अनियमितता बरती गई कि अभी से छत से वर्षा के पानी रिसने लगे। दरवाजे एवं खिड़कियों में लोहे की किवाड़ के जगह पतले चादरें उपयोग में लाई गई है। सीढ़ी जो बनाई गई है उसके प्रत्येक फूट स्टेप को इतना छोटा कर दिया गया कि उपर चढ़ने में बुजुर्ग एवं भारी भरकम शरीर वालों को भारी फजीहत होगी। ग्रामीणों ने बतलाया कि डीपीसी एवं लिंटन की ढलाई बिना छड़ के की गई है। सिर्फ दरवाजे या खिलाड़ियों के जगह छड़ का प्रयोग किए गए। दूसरे तल्ले की ढलाई की तैयारी शनिवार को की गई थी। अब कुछ तैयार था कि ग्रामीणों ने प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव और उप प्रमुख रब्बुल हसन को बुला लिया। उनलोगों ने ग्रामीणों की शिकायतों की जांच की तो शिकायत से ज्यादा गड़बड़ियां पाई गई। नतीजतन संवेदक को बाध्य होकर कार्य रोकना पड़ा। प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव ने स्थल पर मौजूद विभागीय जे ई दिनेश प्रसाद वर्मा से दो टुक कहा कि तकनिकी त्रुटियों को सुधारे बगैर ढलाई कार्य नहीं करवा सकते। पूर्व पंसस कुलदीप शरण ने कहा कि बालू में पत्ते एवं मिटी का मिश्रण है। छत में कम छड़ दिए गए। रूफ बिंब में कहीं क्रैंक नहीं दिए गए।

निर्माण कार्य जैसे तैसे कर रहे संवेदक: रानिता कुमारी

विद्यालय प्रबंधन समिति के अध्यक्ष रानिता कुमारी ने कहा कि विद्यालय निर्माण कार्य जैसे तैसे कर रहे संवेदक। ग्रामीणों एवं जनप्रतिनिधियों के सलाह पर भी गौर नहीं करते। उच्च स्तरीय जांच कर संवेदक पर कार्रवाई जरूरी है। ग्रामीणों में कुलदीप शरण, प्रमोद वर्मा, लक्ष्मण यादव, नंदकिशोर यादव, जानकी रविदास, मोइनुद्दीन अंसारी समेत कई लोग थे।

भवन निर्माण कार्य में अत्यंत घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है: रब्बुल हसन रब्बानी

उपप्रमुख रब्बुल हसन रब्बानी ने कहा कि उच्च विद्यालय भंडारों में भवन निर्माण कार्य में अत्यंत घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है। जबतक सुधार नहीं किया जाता कार्य बंद रहना चाहिए। नीचे तल्ले में कार्य बहुत निम्न है।

भंडारों एवं चितरडीह में उच्च विद्यालय भवन को इसी संवेदक द्वारा घटिया सामग्री का इस्तेमाल कर कार्य की गुणवत्ता को बिगाड़ा गया है: संजीत यादव

प्रमुख प्रतिनिधि संजीत यादव ने बतलाया कि भंडारों एवं चितरडीह में उच्च विद्यालय भवन को इसी संवेदक द्वारा घटिया सामग्री का इस्तेमाल कर कार्य की गुणवत्ता को बिगाड़ा गया है। इसकी शिकायत डीसी से की जाएगी। झारखनाथ उच्च विद्यालय तारा में एक करोड़ लगता से बन रहे बीस कमरे निर्माण की ढलाई कार्य को देखने प्रमुख प्रतिनिधि और उपप्रमुख गए।वहां ढलाई में गिट्टी में चिप्स मिलाकर ढाला जा रहा था।गिट्टी एवं बालू में मिट्टी मिले हुए थे। ढलाई कार्य में सीमेंट की मात्रा बढ़ाने की सलाह प्रमुख प्रतिनिधि ने दिया। कार्यस्थल पर जे ई नहीं थे। संवेदक द्वारा सुधार का आश्वासन दिया गया। कार्य अपेक्षाकृत सामान्य थे।

पांकी विधानसभा में विकास का काम पड़ा है ठप- रूचिर तिवारी

भाजपा के विधायक एवं सांसद को हिंदू मुस्लिम करने से फुर्सत नहीं- भाकपा

आज भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के आम जनता की बैठक रामजी भूइंया की अध्यक्षता में हुई। बैठक में मुख्य रूप से पार्टी के वरिष्ठ साथी सूर्यपत सिंह मौजूद थे और उन्होंने कहा कि पांकी क्षेत्र से आज से 20- 25 वर्ष पहले ही कम्युनिस्ट पार्टी में सामंती जमींदारी प्रथा से मुक्त कर गरीब भूमिहीन दलित आदिवासियों पिछड़ों को भूमि पर कब्जा दिलवाया था परंतु हेमंत सरकार में भी अभी तक इन गरीबों का रसीद नहीं कटवाया जो चिंता का विषय है वहीं पूर्व जमींदार परिवार पुनः उसी जमीन को हड़पने में लगे हुए है उनके इस मंसूबे को कम्युनिस्ट पार्टी कभी पूरा नहीं होने देगी। बैठक को संबोधित करते हुए जिला सचिव रूचिर कुमार तिवारी ने कहा कि आज पार्टी प्रखंड एवं अंचल कार्यालय बिचौलिया गिरि एवं भ्रष्टाचार का अड्डा बना हुआ है ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी सड़क नहीं बना हुआ है जिसका उदाहरण ग्राम करार एवं नादगाद है ग्राम करार में स्थित आरोग्य सेवा मंदिर कभी कभार खुलता है वहीं यहां के जनप्रतिनिधि भाजपा के विधायक शशि भूषण मेहता को आम गरीब मजदूर जनता के पास जाने को फुर्सत नहीं है यहां तक की एक्सीडेंट दुर्घटना जैसी घटना हो जाने के बाद भी वह अपने घरों में बैठे रह रहे हैं एवं घर से ही केवल हिंदू मुस्लिम करने में लगे हुए हैं पांकी विधानसभा में विकास का काम ठब पड़ा हुआ है विकास सिर्फ यहां के भाजपा के विधायक एवं भाजपा के सांसद का हो रहा है गरीब मजदूरों के पास ना तो काम है और नहीं खेतों में पानी सरकार के द्वारा अमानत बराज योजना आज बरसों से लटका हुआ है लेकिन इस पर किसी को मतलब नहीं है ऐसे में इन सभी जन समस्याओं को लेकर के भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जुलाई महीना में पांकी प्रखंड कार्यालय पर प्रदर्शन एवं घेराव करेगी। बैठक में सर्वसम्मति से ग्राम लोहरसी के शाखा सचिव छोटू पासवान, सहायक सचिव सरवन कुमार सिंह, करार के शाखा सचिव गनौरी भूइंया, सहायक सचिव सविता देवी एवं लाल देवी को बनाया गया वहीं बाकी अंचल के प्रभारी के रूप में देवानंद बड़ईक एवं सहायक प्रभारी गनौरी भूइंया को बनाया गया। बैठक में किसान सभा के रामराज तिवारी, नगर सचिव सुरेश ठाकुर, ज्ञान प्रकाश ,वकील मियां, सेवक भूइंया,सेवक मांझी,वसराज गंझू, छेदी भूइंया, ब्रिछ मांझी,सरवन सिंह, कल्लू भूइंया, योगेश्वर मांझी, ट्यूशन मोची ,राजदेव भूइंया, रामलाल जागो भूइंया,नीलम कुमारी सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

80 कार्टून विदेशी शराब के साथ शराब तस्कर गिरफ्तार

सं सू पंकज कुमार ठाकुर

चांदन (बांका) चांदन कटोरिया मुख्य सड़क मार्ग के जुगड़ी मोड़ के समीप गुप्त सूचना के आधार पर चांदन पुलिस को शराब की एक बड़ी खेप पकड़ने में सफलता हाथ लगी है।थानाध्यक्ष विष्णुदेव ने गुप्त सूचना के आधार पर आज रविवार दोपहर को वाहन चैकिंग अभियान चलाकर चांदन की और कटोरिया की और जा रही उजला रंग की एक पिकअप मालवाहक वाहन को तालाशी के लिए रोका। तालाशी के दौरान युरिया खाद्य के आड़ में छिपाकर ले जा रहे 80 कार्टून विदेशी शराब कुल मात्रा 717.840 लीटर के साथ शराब तस्कर सह् चालक को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार शराब तस्कर की पहचान सुमन कुमार पिता दीपसागर सिंह सा0राजधाम,थाना-महेशखुट, जिला-खगड़िया निवासी को गिरफ्तार कर लिया।इस संबंध में बेलहर प्रक्षेत्र एसडीपीओ राजकिशोर सिंह ने बताया गुप्त सूचना के आधार पर पिकअप वैन ने 80 कार्टून विदेशी शराब कुल मात्रा 717.840 लीटर जप्त कर शराब तस्कर के खिलाफ मध उत्पाद अधिनियम के सुसंगत धारा के तहत प्राथमिकी दर्ज कर न्यायिक हिरासत में बांका जेल भेज दिया।

लघु सिंचाई विभाग द्वारा निर्माण हो रहे बांध की चेन कोपी मशीन वन पाल नें किया जब्त

बांका कटोरिया से श्रीकान्त यादव की रिपोर्ट

बांका कटोरिया क्षेत्र के बसमत्ता पंचायत अंतर्गत नीलकुंज गांव के पास निर्माण हो रहे बाबू मायो बांध में मिट्टी काट रहे चेन कोपी मशीन को वन पाल द्वारा जब्त कर लिया गया हैं। जानकारी के अनुसार 10156733 रूपये में लघु सिंचाई विभाग द्वारा गांव के बाबू मायो बांध का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। जिनमें चेन कोपी मशीन से मिट्टी कटकर बौंसी रेंज के वन विभाग जमीन में जहाँ-तहाँ रखते हुए बांध निर्माण कर रहा हैं। जिनकी सूचना मिलने पर तत्कालीन कार्रवाई करते हुए वन पाल बलराम सिंह के मौजूदगी में फोरेस्ट पुलिस टीम द्वारा मिट्टी काटनें वाले चेन कोपी मशीन को जब्त किया गया। वही मुंशी मंजेश शर्मा नें बताया हमलोग वन विभाग के जमीन में बांध निर्माण की मिट्टी नही कटे हैं वन पाल नें सक के अधार पर चेन कुपी मशीन को जब्त किया हैं। लेकिन एक गल्ती हुआ है कि वन विभाग के जमीन में मिट्टी जहां तहां रखा गया है। दुसरे तरफ वन फोरेस्ट बलराम सिंह का कहना है कि जमीन नापी कर जांच पड़ताल करते हुए उचित कार्रवाई किया जायगा।

भजपा मंडल कार्यसमिति की बैठक

बांका कटोरिया से श्रीकान्त यादव की रिपोर्ट

बांका कटोरिया क्षेत्र के कोल्हासार पंचायत अन्तर्गत कधार दुर्गा मंदिर में भाजपा मंडल कार्यसमिति की बैठक आयोजित किया गया। जहां मुख्य रूप से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के मन की बात सुनते हुए समाजीक उत्थान की बात किया गया। जिसमे मुख्य रूप से विधान सभा प्रभारी राजीव लोचन मिश्रा जिला उपाध्यक्ष रिपुसुदन सिंह मंडल अध्यक्ष भोला यादव महामंत्री मुनियां मुर्मू विभीषण यादव उपाध्यक्ष कपिलदेव शर्मा मिथलेश सिंह मंत्री सुकेश जी संगीता जी कोसाध्यच्छ प्रमोद कुमार युवा मोर्चा मुन्ना भाई श्री प्रसाद जी सहित सैकड़ों भाजपा नेता गण एवं कार्यकर्ता ने भाग लिया।

शहीद स्मारक के जीर्णोद्धार कार्य पूर्ण होने के उपरांत विधायक बरही, विधायक सदर, उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया उद्घाटन

- अमर शहीदों को दी ससम्मान श्रद्धांजलि
- शहीद स्मारक की भव्यता और इनकी गौरव गाथा में कोई कमी न रहे यही हमारा प्रयास है: उपायुक्त

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। वीर अमर शहीदों की याद में निर्मित शहीद स्मारक को एक भव्य शहीद स्मारक के रूप में जीर्णोद्धार कार्य को पूर्ण कर आज माननीय विधायक बरही मनोज यादव, विधायक सदर प्रदीप कुमार,उपायुक्त नैंसी सहाय एवं पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह के द्वारा संयुक्त रूप से फीता काट कर विधिवत उद्घाटन किया गया। उद्घाटन के दौरान सभी ने अमर शहीदों की याद में शीश नवाए एवं दीप प्रज्वलित कर सम्मान प्रकट किया।

इस अवसर पर विधायक बरही मनोज यादव ने कहा

इस संध्या को हम सब एकत्रित हुए है यह एक गौरव का क्षण है। उन्होंने जीर्णोद्धार कार्य के लिए उपायुक्त को धन्यवाद दिया। सदर विधायक ने अपने संबोधन में कहा कि सेना के सम्मान में आयोजित कार्यक्रम के शामिल होकर सम्मानित महसूस कर रहा हूं। पूर्व में यह स्थान रखरखाव के अभाव में उपेक्षित था,लेकिन उपायुक्त के प्रयास से इस स्थल का जीर्णोद्धार हुआ है इसके लिए उपायुक्त सहाय बधाई के पात्र है।

इस कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त ने कहा कि यह स्मारक उन वीर सपूतों को समर्पित है जिन्होंने देश की अखंडता और संप्रभुता के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

उद्घाटन समारोह में उपायुक्त ने शहीदों की वीरता और बलिदान को याद करते हुए उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मुख्यमंत्री परिषद में बस्तर के नवाचारों की मिली खुलकर तारीफ

मुख्यमंत्री परिषद में विष्णुदेव साय ने बताया कैसे बस्तर बना संस्कृति और विकास का केंद्र

नई दिल्ली, (आरएनएस)। राजधानी दिल्ली के अशोक होटल में आयोजित मुख्यमंत्रियों की परिषद की बैठक में छत्तीसगढ़ सरकार के विकास मॉडल, सुशासन के प्रयासों और जनभागीदारी से जुड़े नवाचारों ने विशेष पहचान बनाई। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा प्रस्तुत बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम जैसे अभिनव कार्यक्रमों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित अन्य राज्यों के मुख्यमंत्रियों का ध्यान आकर्षित किया। बैठक में छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री अरुणसाव और विजय शर्मा भी उपस्थित थे। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने अपने प्रजेंटेशन की शुरुआत राज्य में सुशासन के लिए किए जा रहे प्रयासों से की। उन्होंने बताया कि छत्तीसगढ़ ने सुशासन और पारदर्शिता को संस्थागत रूप देने के लिए 'सुशासन एवं अभिसरण विभाग' का गठन किया है। राज्य में 'अटल मॉनिटरिंग पोर्टल' जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के

ज़रिए योजनाओं की निगरानी की जा रही है, जिससे शिकायतों का समाधान तय समय में हो रहा है। मुख्यमंत्री ने यह भी कहा कि शासन का उद्देश्य सिर्फ योजनाएं चलाना नहीं, बल्कि योजनाओं को ज़मीन पर ईमानदारी से उतारना है।

बैठक में चर्चा का दूसरा बड़ा बिंदु केंद्र की फ्लैगशिप योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन रहा। मुख्यमंत्री साय ने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना, उज्ज्वला योजना, आयुष्मान भारत और जल जीवन मिशन जैसी प्रमुख योजनाओं को छत्तीसगढ़ में ग्रामसभा, जनसंवाद और तकनीक के सहयोग से जन-जन तक पहुँचाया गया है। बैठक का सबसे रोचक और प्रेरक हिस्सा तब आया, जब मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बस्तर ओलंपिक और बस्तर पंडुम पर एक विशेष प्रजेंटेशन दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'खेलोगे इंडिया, जीतोगे इंडिया' मंत्र को याद करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ ने इसे जमीनी हकीकत में बदल दिया है। उन्होंने बताया कि बस्तर ओलंपिक कोई आम आयोजन नहीं, बल्कि एक सामाजिक क्रांति है, जिसने युवाओं को बंदूक नहीं, गेंद, भाला और तीर थमा दिए हैं। इस आयोजन में 7 ज़िलों के 32 विकासखंडों से 1.65 लाख प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता 40 दिनों तक तीन चरणों में हुई – विकासखंड, जिला और संभाग स्तर पर। इसमें 11 पारंपरिक खेलों जैसे तीरंदाजी, दौड़, खो-खो, कबड्डी, रस्साकसी को शामिल किया गया। प्रतियोगिता को चार वर्गों में बाँटा गया – जूनियर, सीनियर, महिला और दिव्यांग। खास बात यह रही कि दूर-दराज के गांवों से आए युवाओं, महिलाओं और दिव्यांगजनों ने भी पूरे उत्साह से भागीदारी की। मुख्यमंत्री साय ने इस दौरान दोरनापाल के पुनेन सन्ना का उदाहरण साझा किया – जो कभी नक्सल असर वाले इलाके से थे, लेकिन आज व्हीलचेयर पर दौड़ प्रतियोगिता में मेडल जीतकर पूरे समाज के लिए प्रेरणा बन गए हैं। ग़ौरतलब है कि, प्रधानमंत्री मोदी ने अपने 'मन की बात' कार्यक्रम में भी बस्तर ओलंपिक की खुलकर सराहना की थी और कहा था कि यह आयोजन केवल खेल नहीं, बल्कि बस्तर की आत्मा का उत्सव है। मुख्यमंत्री ने बताया कि बस्तर पंडुम उत्सव के जरिए छत्तीसगढ़ ने न केवल आदिवासी संस्कृति, परंपराओं और लोककलाओं को सहेजा है, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय पहचान भी दिलाई है। इसमें 7 जिलों के 32 विकासखंडों से 47,000 प्रतिभागियों, 1,885 ग्राम पंचायतों और 1,743 सांस्कृतिक दलों ने हिस्सा लिया। तीन चरणों में हुए इस आयोजन में लोकनृत्य, गीत-संगीत, हाट-बाज़ार और पकवान प्रतियोगिताएं शामिल रहीं। सरकार ने 2.4 करोड़ रुपये की प्रोत्साहन राशि दी। यह आयोजन युवाओं, महिलाओं और बुजुर्गों को जोड़ते हुए बस्तर की एकता और विकास का प्रतीक बना। इस आयोजन ने नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में सकारात्मक माहौल तैयार किया है, जहाँ अब उत्सव, खेल और विकास की चर्चा होती है। मुख्यमंत्री परिषद की बैठक में चुनिंदा राज्यों को अपनी योजनाओं का प्रजेंटेशन देने का अवसर मिला, जिसमें छत्तीसगढ़ के बस्तर मॉडल को विशेष रूप से सराहा गया। बैठक में सुझाव दिया गया कि जनभागीदारी और सांस्कृतिक जुड़ाव पर आधारित ऐसे प्रयासों को अन्य राज्यों में भी अपनाया जा सकता है।

मंदार स्पोर्ट्स क्लब वेस्ट ने ईस्ट को दो विकेट से किया पराजित, रोमांचक मुकाबले में अंतिम ओवर में हुआ फैसला

आदिवासी एक्सप्रेस / बौसी (बांका)

25 मई 2025: मंदार स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित टी20 ट्राइ सीरीज मुकाबले में एमएससी बेस्ट ने एमएससी ईस्ट को रोमांचक अंतिम ओवर में हराकर जीत दर्ज किया। रविवार को सी एन डी मैदान, बौंसी में आयोजित प्रतिष्ठित इन्ट्रा-क्लब टी20 मुकाबले में आज क्रिकेट प्रेमियों को एक जबरदस्त मुकाबला देखने को मिला। जहाँ एमएससी बेस्ट ने आखिरी ओवर में हराकर जीत अपने नाम की।

टॉस जीतकर एमएससी ईस्ट ने पहले बल्लेबाज़ी करने का निर्णय लिया और निर्धारित 20 ओवरों में 8 विकेट के नुकसान पर निर्धारित लक्ष्य रन को पुरा कर लिया।

यह रहा स्कोरकार्ड

टीम की ओर से:

- राजा दुबे ने 27 गेंदों पर शानदार 32 रन बनाए,
- राजेश ने तेज़ 24 रन (20 गेंद) जोड़े,

- आर्यन झा ने 40 गेंदों पर संयमित 21 रन बनाए,
- और शुभम दुबे ने मात्र 8 गेंदों में तेज़तर्रार 17 रन का योगदान दिया।

एमएससी बेस्ट की गेंदबाज़ी भी प्रभावशाली रही, जिसमें:

- सुमित सागर ने 2 विकेट,
- प्रीतम चौधरी ने 2 विकेट,
- गौरव दत्ता ने 1 विकेट,
- और रंजन ने 1 महत्वपूर्ण विकेट प्राप्त किये इसके अलावा फील्डिंग में 2 शानदार रन आउट भी देखने को मिला।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी एमएससी वेस्ट की शुरुआत संतुलित रही, लेकिन आखिरी ओवरों में खेल रोमांचक हो गया। वेस्ट ने 19.4 ओवर में 8 विकेट के नुकसान पर 144 रन बनाकर मैच जीत लिया।

टीम की जीत में सबसे बड़ा योगदान रहा अमन दर्शन का, जिन्होंने दबाव की स्थिति में बेहतरीन बल्लेबाज़ी करते हुए:

- 31 गेंदों पर 41 रन (1 छक्का और 6 चौके) बनाए।
- उनके अलावा रंजन ने भी 13 गेंदों में तेज़ 22 रन बनाकर अहम भूमिका निभाई।

एमएससी ईस्ट की ओर से युवराज ने उम्दा गेंदबाज़ी करते हुए 3 विकेट चटकाए और मुकाबले को रोमांचक बनाए रखा।

मैन ऑफ द मैच का पुरस्कार शानदार बल्लेबाज़ी के लिए अमन दर्शन को प्रदान किया गया।

इस मुकाबले ने उपस्थित दर्शकों ने खेल का भरपूर आनंद लिया। क्लब के प्रमुख ने बताया कि मैच नियम के अनुसार और अंपायर के अंतिम फैसले के अनुसार ही जारी रहेंगे सभी टीमों को इसका ख्याल रखना अनिवार्य है।

हाईटेंशन बिजली की चपेट में आने से हाईवा चालक की मौत

सं, सू पंकज कुमार ठाकुर

चांदन (बांका) चांदन कटोरिया मुख्य सड़क मार्ग के बाबूकूरा मोड़ के समीप पी.कंट्रक्शन प्लांट में कार्यरत हाईवा गाडी हाईटेंशन बिजली की तार से स्पर्श हो जाने से चालक की घटना पर ही मौत हो गई। जानकारी के अनुसार बजरंगी सिंह उम्र 30 वर्ष पिता तेजलाल सिंह सा0छिड़ापत्थर, थाना चन्द्रमण्डी जिला जमुई निवासी पी. कांट्रेक्शन में हाईवा गाडी का चालक था। हाईवा गाडी को हाइड्रोलिक करने के दौरान प्लांट के उपर गुजरी हाईटेंशन बिजली की तार से स्पर्श हो गई। जिससे चालक बजरंगी सिंह की घटना स्थल पर ही मौत हो गई।घटना की सुचना पर पहुंचे चांदन थाना पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए बांका भेज दिया।घटना का कारण प्लांट में काम कर रहे लोगों ने बताया प्लांट के उपर से खिंची गई हाईटेंशन तार और बिजली विभाग की लापरवाही बताया है। इस संबंध में थानाध्यक्ष विष्णुदेव कुमार ने बताया शव को पोस्टमार्टम के लिए बांका भेज कर मामले की जांच की जा रही है।

प्रधानमंत्री मन की बात सुनने के दौरान भाजपा नेताओं ने कहा बिहार की धरती बहुत खास

रविवार को फुल्लीडुमर प्रखंड क्षेत्र के भाजपा नेताओं ने प्रधानमंत्री मन की बात कार्यक्रम को सुना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मन की बात. कार्यक्रम क़े. माध्यम से देशवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा बिहार के 5 शहरों ने खेलो इंडिया यूथ गेम्स की मेजबानी की थी। पूरे देश से यहाँ 5 हजार से अधिक एथलीट पहुँचे थे,जिन्होंने बिहार की स्पोर्टिंग स्पिरिट और बिहार से मिली आत्मीयता की तारीफ की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के विषय में आज मन की बात कार्यक्रम में व्यक्त विचार भारत के मन की बात को अभिव्यक्त करते हैं। प्रधानमंत्री के यशस्वी नेतृत्व में 140 करोड़ भारतवासी आतंकवाद के विरुद्ध एकजुट हैं, और पूर्ण विश्वास व प्रतिबद्धता से भारतीय सेना के साथ खड़े हैं।

आज हर भारतीय का यही संकल्प है, हमें आतंकवाद को खत्म करना ही है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमारी सेनाओं ने जो पराक्रम दिखाया है, उसने हर हिंदुस्तानी का सिर गर्व से ऊंचा कर दिया है। ऑपरेशन सिंदूर में स्वदेशी हथियारों, उपकरणों और Technology की सफलता से विश्व ने आत्मनिर्भर भारत की गूंज को सुना है।भारत के जन-गण के मन को Nation First की भावना, राष्ट्रवादी चेतना और स्वदेशी गौरव बोध से दीप्त करते उद्बोधन के लिए प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा आज मन की बात कार्यक्रम में खेलो इंडिया के अंतर्गत शानदार प्रदर्शन का उल्लेख समूचे बिहार प्रदेश को गर्वित करने वाला है। भाजपा नेता रंजीत यादव ने कहा-

युवा खिलाड़ियों का यह प्रदर्शन उनके अथक परिश्रम, अनुशासन व संकल्पशक्ति का ही परिणाम है। आपके यशस्वी नेतृत्व में खेलो इंडिया का विजन निरंतर सशक्त हो रहा है। बिहार प्रदेश की खेल प्रतिभाओं का उत्साहवर्धन करने हेतु प्रधानमंत्री का भाजपा नेताओं ने हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

हजारीबाग अग्रसेन भवन में पुंय श्लोक रानी अहिल्याबाई होल्कर की 300 वीं जयंती वर्ष पर संगोष्ठी की गई

- सच्चा धर्म केवल पूजा पाठ और अनुष्ठानों में नहीं, बल्कि मानवता की सेवा में निहीत है: प्रांत प्रचारक गोपाल जी
- आध्यात्मिकता ही जीवन का सच्चा लक्ष्य है और हमें भौतिक सुखों से परे आनंद प्रदान करता है: प्रदीप प्रसाद

आदिवासी एक्सप्रेस

हजारीबाग। रानी अहिल्याबाई होलकर की300 वीं जयंती वर्ष पर जयंती समारोह का आयोजन हजारीबाग स्थित अग्रसेन भवन में किया गया ।जिसकी अध्यक्षता जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह व संचालन दामोदर सिंह एवं धन्यवाद विज्ञापन रेणुका साहू द्वारा की गई। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बतौर झारखंड प्रदेश के प्रांत प्रचारक श्री गोपाल जी ,हजारीबाग विधानसभा के विधायक प्रदीप प्रसाद, प्रदेश के पूर्व उपाध्यक्ष सीमा शर्मा, प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक उपस्थित हुए। कार्यक्रम की शुरुआत दीनदयाल उपाध्याय, श्यामा प्रसाद मुखर्जी एवं रानी अहिल्याबाई होलकर के प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा पुष्प अर्पित कर किया गया ।भाजपा जिला अध्यक्ष विवेकानंद सिंह द्वारा आए अतिथियों का अपने मधुर वाणी से स्वागत करते हुए विषय प्रवेश कराया गया। रानी अहिल्याबाई होलकर एक महान मराठा शासिका थी। जिन्होंने मालवा

क्षेत्र में होलकर राजवंश की स्थापना की ।जिन्हें उनकी न्याय प्रियता, धार्मिकता के लिए जाना जाता है ।अहिल्याबाई होल्कर शिव के भक्तथी। अहिल्याबाई की 13 वर्ष की अल्प आयु में मल्हार राव होलकर के पुत्र खंडेराव खोलकर के साथ विवाह हो गई थी। विवाहो प्रांत एक पुत्र एवं एक पुत्री की मां बनी ।यौवना अवस्था की दहलीज पर ही थी की 29 वर्ष की आयु में पति का देहांत हो गया ।कुछ वर्षों के बाद उनके पिता तुल्य ससुर भी चल बसे ।उन्हें स्वयं शासन की बागडोर संभालनी पड़ी। जब अहिल्याबाई की उम्र मात्र 42 वर्ष की थी ।तो उनके बेटे मालेराव भी एक युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए। इस तरह अहिल्याबाई होल्कर की जीवनी से प्रशासनिक और सामाजिक कर्तव्यों की सीख मिलती है। उन्होंने विधवा विवाह एवं उसकी समुचित व्यवस्था के साथ-साथ महिलाओं की शिक्षा पर विशेष जोर दी थी। कार्यक्रम को प्रांत प्रचारक गोपाल जी, सदर विधायक प्रदीप प्रसाद, प्रदेश पूर्व उपाध्यक्ष सीमा शर्मा ,प्रदेश मीडिया प्रभारी शिवपूजन पाठक ,ने संबोधन किया इसके साथ-साथ कार्यक्रम में मुख्य रूप से प्रदेश ओबीसी मोर्चा के अध्यक्ष अमरदीप यादव, केपी ओझा ,सुदेश चंद्रवंशी, हरीश श्रीवास्तव ,अशोक यादव ,दिनेश सिंह राठौर,जिला पदाधिकारी दामोदर सिंह, रेणुका साहू ,भानुमति पासवान, जय नारायण प्रसाद ,कुणाल किशोर, मनोज गिरी, कुंवर मनोज सिंह, सुमित लहरी, मनोरमा राणा ,अजीत चंद्रवंशी, इंद्र नारायण कुशवाहा ,राजकरण पांडे, श्री झा, सत्यभामा ,विवेक बैरियर, प्रकाश कुशवाहा ,कृष्णा मेहता, कैलाश यादव ,रणधीर पांडे, ऋषि शर्मा, चंदन सिंह ,अजीत बक्शी ,राजेश चंद्रवंशी ,कुलदीप कृष्णा ,सुमन सिंहा ,राजेश कुमार ,आशीष कुमार ,विनोद ओझा ,गणेश प्रसाद ,लीलावती देवी ,पिंटू देवी, गुड़िया देवी, संगीता अग्रवाल ,कंचन शर्मा, किरण देवी ,नेहा आलम, सोनी, पूनम ,रेखा देवी ,सरिता देवी ,सुनैना, शांति यदि सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित थे , इस आशय की जानकारी भाजपा जिला मंत्री जय नारायण प्रसाद द्वारा दी गई।

करोड़ो की लागत से बना अस्पताल, डॉक्टर नदारद

पालोजोरी सीएचसी बना मरीजों की मजबूरी

आदिवासी एक्सप्रेस

कृष्णा गोस्वामी /देवघर

पालोजोरी प्रखंड में बनें करोड़ों रुपयों की लागत से पालोजोरी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इन दिनों डॉक्टरों की अभाव में मरीज़ की कमी खलती हुई देखने को मिल रही हैं। बताया जाता है कि जहां पालोजोरी प्रखंड क्षेत्र की आबादी अमुमन डेढ़ लाख की आसपास बताई जाती हैं ।वहीं इन दिनों मरीजों की बेहतर स्वास्थ्य सेवा

को लेकर एक चिंता का विषय बना हुआ है। जबकि इस बात को लेकर स्वास्थ्य विभाग को तनिक भी चिंता या भय नाम का चिंज नहीं देखने को मिल रहा हैं। साथ ही वहीं स्वास्थ्य कर्मी इस विषय पर कुछ भी कहने से कतराते हैं। बता दे की सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पालोजोरी प्रखंड के जनमानस की बेहतर स्वास्थ्य सेवा को देखते हुवे इनका निर्माण कराया गया था। चूंकि लोग यहां सुलभ वातावरण में बेहतर स्वास्थ्य का लाभ उठा सकें। जबकि इन दिनों डॉक्टरों की कमी कहें या सरकार की लापरवाही जिस कारण आज स्वास्थ्य केंद्र पर मरीज़ आने से कतराते हैं। तथा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में अमुमन मरीजों को बगैर इलाज़ से पहले ही उन्हें बाहर रेफर कर दिए जाते हैं। जिस कारण आज सरकारी स्वास्थ्य को लेकर लोग गंभीरता से लेने के बजाय निजी क्लिनिकों पर भरोसा करना बेहतर समझ रहें है। वहीं विषय पर झामुमो नेता मनोज सुभद्रा यादव ने कहा की मौसमी बीमारियों के साथ साथ बरसात का समय आने को है।हॉस्पिटल की माली हालत क्या हैं?इन सब चीजों को लेकर मनोज सुभद्रा यादव ने सरकार के क्रिया कलापों व काम-काजों के उपर तंज कसते हुए कहा की जहां सरकार द्वारा छोटी छोटी चीजों पर शोध कर लाखों रुपए खर्च कर रहे हैं। फिर भी आज के समय में ग्रामीण इलाकों के अस्पतालों में मरीजों के अभाव में स्वास्थ्य कर्मी मटरगश्ती करते देखने को मिल रहें हैं। कहीं ना कहीं की खूली छूट या लूट कहें जिसको लेकर स्वास्थ्य विभाग के प्रभारी पदाधिकारी के अलावा अन्य कर्मी भी अक्सर कोरे कागजों में ही अपनी स्वास्थ्य सेवा की दिनचर्या उसी में खप्त कर देते हैं जिससे स्वास्थ्य विभाग की विकास की खेल आएं दिन देखने को मिल रहे हैं।

पाटीदार और कमिंस पर धीमी ओवर गति के लिए जुर्माना

एजेंसी

लखनऊ। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) के कप्तान रजत पाटीदार पर सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के मैच में धीमी ओवर गति के लिये जुर्माना लगाया गया है। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी एकाना क्रिकेट स्टेडियम के मैच नंबर 65 के दौरान हैदराबाद के खिलाफ आरसीबी पर धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिये यह जुर्माना लगाया गया है। आईपीएल की आचार संहिता के तहत न्यूनतम ओवर-रेट अपराधों से संबंधित उनकी टीम का सीजन का दूसरा अपराध था, इसलिए पाटीदार पर 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया। इम्पैक्ट प्लेयर समेत प्लेइंग इलेवन के बाकी सदस्यों पर व्यक्तिगत रूप से छह लाख रुपये या उनकी संबंधित मैच फीस का 25 प्रतिशत, जो भी कम हो, का जुर्माना लगाया गया। सनराइजर्स हैदराबाद के कप्तान पैट कमिंस पर उनकी टीम की धीमी ओवर गति के कारण जुर्माना लगाया गया है।यह आईपीएल आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के तहत उनकी टीम का इस सीजन का पहला अपराध था, जो न्यूनतम ओवर-रेट अपराधों से संबंधित है, इसलिए कमिंस पर 12 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया।

शानदार तरीके से अभियान का समापन करने उतरेंगी केकेआर और एसआरएच

नई दिल्ली। सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) यहां अरुण जेटली स्टेडियम में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 सीजन के अपने अंतिम ग्रुप स्टेज मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से भिड़ेगी। दोनो ही टीमे प्लेऑफ के लिए दावेदार नहीं है, जिससे मैच नंबर 68 प्रतिष्ठा की लड़ाई बन गया है। हालांकि, दोनों फ्रेंचाइजी इस साल के टूर्नामेंट में विपरीत प्रदर्शन के बावजूद सकारात्मक प्रदर्शन के साथ अभियान को समाप्त करना चाहेंगी। सनराइजर्स हैदराबाद ने खराब शुरुआत के बावजूद अपने पिछले चार मैचों में से तीन में जीत के साथ शानदार प्रदर्शन किया है। अपने पिछले मैच में, हैदराबाद ने रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु पर 42 रनों की शानदार जीत दर्ज की, जिसमें ईशान किशन की 48 गेंदों पर 94 रनों की तूफानी पारी शामिल थी। सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा के धमाकेदार फॉर्म ने टीम की वापसी में अहम भूमिका निभाई है, जिन्होंने 193 के स्ट्राइक रेट से 12 पारियों में 407 रन बनाए हैं। इस बीच, गत चैंपियन कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) इस सीजन में लय हासिल करने में विफल रही है और 13 मैचों में से पांच जीत के साथ अंक तालिका में सातवें स्थान पर है। आरसीबी के खिलाफ उनका सबसे हालिया मुकाबला बारिश की भेंट चढ़ गया, जिससे उनकी प्लेऑफ की उम्मीदें खत्म हो गईं।

नागालैंड की महिलाओं ने रचा इतिहास

दीव । नागालैंड ने दीव में खेले गए खेलो इंडिया बीच गेम्स में सेपकटकरॉ महिलाओं की क्वाडरेगु टीम इवेंट में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। इस शानदार प्रदर्शन ने उन्हें पहली बार किसी खेलो इंडिया प्रतियोगिता के शीर्ष तीन में पहुंचा दिया। वहीं,दिल्ली ने मणिपुर को हराकर पुरुषों की क्वाडरेगु टीम स्पर्धा में स्वर्ण पदक अपने नाम किया। नागालैंड ने खेलो इंडिया बीच गेम्स 2025 में अपना अभियान कुल मिलाकर तीसरे स्थान पर समाप्त किया, जिसमें उन्होंने 5 स्वर्ण, 3 रजत और 5 कांस्य पदक जीते। नागालैंडके चार स्वर्ण पदक पेंचक सिलाट से आए हैं।पदक तालिका में मणिपुर और महाराष्ट्र पहले और दूसरे स्थान पर रहे। घोंघला बीच पर जैसे ही अंतिम सीटी बजी, वहां उत्सव और जश्न का माहौल छा गया।नागालैंड की महिला टीम ने घबराहट, कड़ी टक्कर और दबाव का सामना करते हुए हरियाणा को रोमांचक मुकाबले में 2-1 से हराकर जीत दर्ज की। वहीं, दिल्ली की पुरुष टीम ने फाइनल में मणिपुर को सीधे सेटों में 2-0 से हराकर आसानी से खिताब जीता। पुरुष और महिला दोनों वर्गों के फाइनल के दौरानबड़ी संख्या में दर्शक मौजूद थे।

नार्वे शतरंज : मैगनस कार्लसन और गुकेश के बीच टक्कर पर दुनिया की नजरे

ओस्लो ,नॉर्वे। यहाँ शुरू होने वाले नार्वे शतरंज के तेरहवें संस्करण में भारत के वर्तमान विश्व चैंपियन डी गुकेश और मेजबान देश के पाँच बार के विश्व चैंपियन मैगनस कार्लसन दोनों भाग लेने जा रहे है और शतरंज प्रेमियों के लिए यह पहला मौका होगा जब विश्व चैंपियन बनने के बाद गुकेश क्लासिकल शतरंज में कार्लसन का मुकाबला करेंगे । आज भी कार्लसन एक दशक से भी अधिक समय से दुनिया के नंबर एक खिलाड़ी है जबकि गुकेश दुनिया के फ़िलहाल नम्बर तीन खिलाड़ी है । इन दोनों के अलावा भारत के अर्जुन एरिगैसी , यूएसए के फैबियानो कारूआना और हिकारू नाकामुरा आवर चीन के वे यी भी इस प्रतियोगिता का हिस्सा होंगे , यह सभी खिलाड़ी दोहरे राउंड रॉबिन के आधार पर कुल दस राउंड खेलेंगे ,मतलब हर खिलाड़ी आपस में एक बार सफेद और एक बार काले मोहरो से मुकाबला खेलेंगे । कार्लसन नॉर्वे शतरंज का खिताब रिकॉर्ड छह बार जीत चुके है आवर अब देखना होगा की क्या गुकेश इस बार उन्हें यह खिताब हासिल करने से रोक पायेंगे । इस बार नॉर्वे शतरंज में पहली बार महिला वर्ग की प्रतियोगिता भी खेली जाएगी इसमें वर्तमान विश्व चैंपियन चीन की जू वेंजून , चीन की लेई टिंग्जे , भारत की कोनेरू हंपी और आर वैशाली , यूक्रेन की अन्ना मुझीचुक और स्पेन की सरासदात खड़ेमलसरीह भाग लेंगी ।

आईपीएल 2025 : रोमांचक मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स ने पंजाब किंग्स को 6 विकेट से हराया

एजेंसी

जयपुर। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 66वें मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स ने पंजाब किंग्स को 6 विकेट से हरा दिया है। इस जीत के साथ जहां दिल्ली ने आईपीएल के इस सीजन को अलविदा कहा, वहीं पंजाब को इस हार से उसके प्लेऑफ में शीर्ष स्थान पर काबिज होने के सपने को धक्का लगा है। जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में दिल्ली कैपिटल्स ने टॉस जीतकर पंजाब किंग्स को पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किया। पंजाब की शुरुआत अच्छी नहीं रही और सलामी बल्लेबाज प्रियांश आर्या 6 रन बनाकर आउट हुए। उसके बाद जोश इंगलिस और प्रभसिमरन के बीच दूसरे विकेट के लिए 47 रनों की साझेदारी हुई। इस पार्टनरशिप को विपरज निगम ने तोड़ा। उन्होंने इंगलिस (32) और प्रभसिमरन (28) दोनों को आउट किया। पंजाब

का मिडिल ऑर्डर एक बार फिर फ्लॉप रहा। कप्तान श्रेयस एक छोर पर डटे रहे और लगातार रन बनाते रहे, लेकिन उन्हें दूसरे छोर से किसी का साथ नहीं मिला। अय्यर 34 गेंदों में 53 रन बनाकर आउट हुए। आखिर में मार्कस स्टोइनिस ने 16 गेंदों में नाबाद 41 रनों की पारी खेलकर टीम के स्कोर को 206 तक पहुंचाया। दिल्ली की तरफ से मुस्तफिजुर रहमान ने सबसे अधिक 3 विकेट चटकाए। जबकि विपरज निगम और कुलदीप यादव को दो-दो सफलता मिली। एक विकेट मुकेश कुमार के खाते में गया। 207 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी दिल्ली कैपिटल्स को कप्तान फाफ डुप्लेसिस और केएल राहुल ने सधी शुरुआत दिलाई। दोनों के बीच पहले विकेट के लिए 55 रन की साझेदारी हुई। राहुल 35 रन बनाकर आउट हुए। इसके तुरंत बाद डुप्लेसिस भी 23 रन के निजी स्कोर पर आउट हो गए। जबकि आईपीएल में डेब्यू कर रहे सेदिकुल्लाह अटल` 16 गेंदों में 2 छक्कों की मदद से 22 रन की पारी खेली। फिर समीर रिजवी ने करुण नायर के साथ मिलकर 62 रन जोड़े और टीम को जीत की दहलीज की ओर ले गए। हालांकि नायर अर्धशतक लगाने से चूक गए। उन्होंने 27 गेंदों में 44 रनों की पारी खेली। दिल्ली को आखिर के दो ओवर में 22 रन की जरूरत थी। 19वें ओवर में अर्शदीप सिंह को 18 रन जड़कर स्टब्स और रिजवी ने जीत को और आसान कर दिया।

खेलो इंडिया बीच गेम्स 2025: मणिपुर चैंपियन, नगालैंड का ऐतिहासिक प्रदर्शन

एजेंसी

दीव। पहले खेलो इंडिया बीच गेम्स 2025 में मणिपुर ने शानदार प्रदर्शन कर कुल पांच स्वर्ण और छह रजत पदकों के साथ चैंपियन का खिताब अपने नाम किया। इस आयोजन ने न केवल नए खेल प्रतिभाओं को मंच दिया, बल्कि नगालैंड जैसे उभरते राज्यों को इतिहास रचने का अवसर भी दिया, जिसने पहली बार किसी खेलो इंडिया प्रतियोगिता में तीसरा स्थान हासिल किया। प्रतियोगिता में मणिपुर, महाराष्ट्र, नगालैंड, हरियाणा और जम्मू-कश्मीर ने पांच-पांच स्वर्ण पदक जीते, लेकिन रजत पदकों के आधार पर फाइनल रैंकिंग तय की गई। पहले स्थान पर मणिपुर की टीम रही, जिसने 5 स्वर्ण, 6 रजत पदक जीते। जबकि महाराष्ट्र ने 5 स्वर्ण और 5 रजत पदक के साथ दूसरा स्थान प्राप्त किया। तीसरे स्थान पर पांच स्वर्ण और तीन रजत के साथ नगालैंड रहा। तो चौथे स्थान पर संयुक्त रूप से हरियाणा एवं जम्मू-कश्मीर रहे। इनके खाते में 5 स्वर्ण और 1 रजत पदक रहा।

वहीं, मेजबान दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव (डीएनएचडीडी) ने 4 स्वर्ण के साथ सातवां स्थान प्राप्त किया। अहम बात यह रही कि कुल 46 स्वर्ण पदकों में से 28 पदक पेंचक सिलाट (एक इंडोनेशियाई मार्शल आर्ट) में ही दिए गए। मणिपुर के 5 में से 4 स्वर्ण, नगालैंड के सभी 4 स्वर्ण, जम्मू-कश्मीर और डीएनएचडीडी के सभी पदक इसी स्पर्धा में आए, जिससे इन राज्यों की स्थिति पदक तालिका में मजबूत हुई। प्रतियोगिता में खेले गए टीम खेलों के फाइनल में बीच वॉलीबॉल, बीच सॉकर और सेपक टकरा में रोमांच चरम पर रहा।

इंग्लैंड दौरे के लिए भारतीय टेस्ट टीम का ऐलान, शुभमन गिल बने कप्तान

एजेंसी

मुम्बई। इंग्लैंड के खिलाफ आगामी पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए 18 सदस्यीय भारतीय टेस्ट टीम का ऐलान कर दिया गया है। टीम की कप्तानी शुभमन गिल को सौंपी गई है, जबकि ऋषभ पंत को उप-कप्तान बनाया गया है। कप्तान और उप-कप्तान के तौर पर दोनों युवा खिलाड़ियों पर टीम की बड़ी जिम्मेदारी होगी। टीम में करुण नायर की वापसी हुई है तो साई सुदर्शन को आईपीएल 2025 में शानदार प्रदर्शन करने का इनाम मिला है। इसके साथ ही तेज गेंदबाज अर्शदीप सिंह को भी पहली बार शामिल किया गया है। वहीं शार्दुल ठाकुर भी टीम में वापसी कर रहे हैं, जो टीम की गेंदबाजी आक्रमण को और मजबूत करेंगे। हालांकि इस घोषणा में एक बड़ा झटका भी आया है, जब चयनकर्ताओं ने मोहम्मद शमी को मेडिकल टीम की रिपोर्ट के आधार पर फिट नहीं मानते हुए टीम से बाहर कर दिया। मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर ने प्रेस कांफ्रेंस पुष्टि की कि चयन समिति शमी को टीम में शामिल करना चाहती थी, लेकिन मेडिकल विभाग की सलाह के बाद उन्होंने ऐसा नहीं किया। पूरे पांच मैच नहीं खेलेंगे बुमराह इस बीच, मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के बारे में भी अहम जानकारी मिली है। अजित अगरकर ने कहा कि उन्हें

लगता है कि बुमराह पूरे पांच टेस्ट मैच नहीं पाएंगे। उनका खेलना चार या तीन मैचों तक सीमित रह सकता है, जो पूरी तरह से उनकी फिटनेस और प्रबंधन टीम की देखरेख पर निर्भर करेगा। कोहली के संन्यास पर बोले अगरकरस्टार खिलाड़ी विराट कोहली के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने के सवाल पर अजित अगरकर ने बताया कि अप्रैल महीने में कोहली ने उनसे संपर्क किया और टेस्ट क्रिकेट से संन्यास लेने की इच्छा जताई। चयन समिति ने उनकी इस इच्छा का पूरा सम्मान किया और कोहली को अपनी मर्जी से निर्णय लेने की आज़ादी दी। शुभमन गिल (कप्तान), ऋषभ पंत (विकेटकीपर और उप-कप्तान), यशस्वी जायसवाल, केएल राहुल, साई सुदर्शन, अभिमन्यु ईश्वरन, करुण नायर, नितीश कुमार रेड्डी, रविंद्र जडेजा, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, शार्दुल ठाकुर, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, आकाश दीप, अर्शदीप सिंह और कुलदीप यादव।

भारत-इंग्लैंड टेस्ट सीरीज का पूरा शेड्यूल

पहला टेस्टः 20-24 जून - हेडिंग्ले, लीड्स

दूसरा टेस्टः 2-6 जुलाई - एजबेस्टन, बर्मिंघम

तीसरा टेस्टः 10-14 जुलाई - लॉर्ड्स क्रिकेट ग्राउंड, लंदन

चौथा टेस्टः 23-27 जुलाई - ओल्ड ट्रैफर्ड, मैनचेस्टर

पांचवां टेस्टः 31 जुलाई-4 अगस्त - केनिंग्टन ओवल, लंदन

करुण नायर की आठ साल बाद भारतीय टेस्ट टीम में वापसी

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय बल्लेबाज करुण नायर ने करीब आठ साल बाद एक बार फिर भारतीय टेस्ट टीम में वापसी की है। उन्हें इंग्लैंड के खिलाफ 20 जून से शुरू होने वाली पांच मैचों की टेस्ट सीरीज के लिए घोषित 18 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने इंग्लैंड दौरे पर जाने वाली भारतीय टेस्ट टीम की घोषणा की। रोहित शर्मा के टेस्ट क्रिकेट से संन्यास के बाद चयनकर्ताओं ने शुभमन गिल को टेस्ट कप्तान बनाया है, वहीं ऋषभ पंत को उप कप्तान बनाया गया है। दौरे के लिए 18 खिलाड़ियों का चयन किया गया है। इसमें करुण नायर भी शामिल हैं। उनकी टेस्ट टीम में वापसी करीब आठ वर्ष बाद हुई है। करुण नायर ने भारतीय टीम के लिए आखिरी टेस्ट 2017 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ धर्मशाला में खेला था। अब तक उन्होंने कुल 6 टेस्ट मैचों में 374 रन बनाए हैं, जिसमें उनका औसत 62.3 का रहा है। सबसे खास बात यह है कि नायर पूर्व दिग्गज वीरेंद्र सहवाग के बाद टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक लगाने वाले दूसरे भारतीय बल्लेबाज हैं।

घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन से हासिल की वापसी

2023-24 घरेलू सीजन में करुण नायर ने कर्नाटक छोड़कर विदर्भ की टीम से खेलना शुरू किया। पहले ही सीजन में उन्होंने 10 मैचों में 690 रन बनाए, जबकि 2024-25 रणजी ट्रॉफी सीजन में नायर ने 9 मैचों में 863 रन बनाकर टीम को तीसरा रणजी खिताब जिताने में अहम भूमिका निभाई। उनका औसत 54 का रहा। भारतीय टीम में चुने जाने से पहले नायर को इंग्लैंड लॉयंस के खिलाफ इंडिया ए टीम में भी जगह दी गई थी।

इंटरकॉन्टिनेंटल लीजेंड्स चैंपियनशिप: उद्घाटन मुकाबले में इंडियन वॉरियर्स से भिड़ेंगे अफ्रीकन लायंस

एजेंसी

ग्रेटर नोएडा। शहीद विजय सिंह पथिक स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स ग्रेटर नोएडा में 27 मई से शुरू हो रही इंटरकॉन्टिनेंटल लीजेंड्स चैंपियनशिप (आईएलसी) का उद्घाटन मुकाबला इंडियन वॉरियर्स और अफ्रीकन लायंस के बीच 27 मई को शाम खेला जाएगा। इसके बाद 28 मई से प्रतिदिन डबल हेडर मुकाबले देखने को मिलेंगे। दिन का पहला मैच दोपहर 3:30 बजे से, जबकि दूसरा मुकाबला शाम 7:30 बजे शुरू होगा। लीग चरण 3 जून को समाप्त होगा, जिसके बाद सेमीफाइनल मुकाबले 4 जून को क्रमशः दोपहर 3ः30 बजे और शाम 7:30 बजे से खेले जाएंगे। इसके बाद 5 जून को भव्य समापन समारोह के साथ ग्रैंड फिनाले मुकाबला खेला जाना तय है। आईएलसी के संस्थापक और निदेशक प्रदीप सांगवान ने कार्यक्रम की घोषणा करते हुए कहा, यह सिर्फ लीग

नहीं बल्कि, 6 महाद्वीपों का समागम है, जो दर्शकों को रोमांच और पुरानी यादों का बेहतरीन मेल देने जा रहा है। शेड्यूल को इस तरह से तैयार किया गया है कि रोमांच बना रहे और दुनियाभर के दर्शक हर दिन स्क्रीन से जुड़े रहें। जहां पूर्व दक्षिण अफ्रीकी धाकड़ बल्लेबाज हर्शल गिब्स अफ्रीकन लायंस की कप्तानी करेंगे, तो वहीं एशियन किंग्स की अगुवाई सुरेश रैना के हाथों में है। एशिया की इस टीम में रैना के साथ पूर्व श्रीलंकाई दिग्गज तिलकरत्ने दिलशान और अफगानिस्तान के पूर्व कप्तान असगर अफगान भी जलवा बिखेरते नजर आएंगे।छह महाद्वीपों की 6 टीमों के बीच खेली जा रही इस चैंपियनशिप का मजा दर्शक सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क पर लाइव ले सकेंगे। एमवीपी क्रेस्ट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा आयोजित और 100 स्पोर्ट्स द्वारा प्रबंधित इस लीग का लेखा-जोखा जिस तरह से तैयार किया गया है, निश्चित तौर पर यह क्रिकेट के नए इतिहास की इबारत लिखने जा रहा है।

उत्तर गुवाहाटी में ताइक्कांडो चैंपियनशिप शुरू

एजेंसी

गुवाहाटी । उत्तर गुवाहाटी के बिहलंगनी बरनामघर खेल मैदान में तीन दिवसीय कार्यक्रम के रूप में 10वीं कामरूप जिला ताइक्कांडो चैंपियनशिप का शुभारंभ हुआ। इस प्रतियोगिता में कामरूप जिले के विभिन्न क्षेत्रों से 500 से अधिक खिलाड़ी भाग ले रहे हैं। उद्घाटन समारोह का शुभारंभ विशिष्ट समाजसेवी हिरण्य बोरा और निरंजन बोरा ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कामरूप जिला ताइक्कांडो एसोसिएशन के सचिव प्रांजन बुढ़ागोहाईं ने की।प्रतियोगिता में आठ वर्ष से कम आयु वर्ग के सब-जूनियर, कैडेट, मीडियम, सब-गर्ल्स और सीनियर वर्गों में विभिन्न इवेंट आयोजित किए जाएंगे। विशेष अतिथि के रूप में पूर्व अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी दिगंत बोरा, पत्रकार कौशिक दास और मुकुटेश्वर गोस्वामी उपस्थित रहे। इनके साथ-साथ राज्य के कई अग्रणी खिलाड़ियों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया।

भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के सहायक कोच नियुक्त हुए बिरेन्द्र लाकड़ा

एजेंसी

नई दिल्ली। हॉकी इंडिया ने भारतीय पुरुष हॉकी टीम के पूर्व स्टार खिलाड़ी बिरेन्द्र लाकड़ा को भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम का सहायक कोच नियुक्त किया है। 35 वर्षीय अनुभवी डिफेंडर अब टीम के मुख्य कोच पीआर श्रीजेश के साथ मिलकर युवा खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देंगे। खिलाड़ी से कोच बनने की इस नई भूमिका में लाकड़ा का अनुभव टीम की डिफेंस संरचना और मैच टेम्परामेंट को मजबूत करने में सहायक होगा। यह नियुक्ति खास तौर पर एफआईएच जूनियर हॉकी वर्ल्ड कप 2025 को ध्यान में रखते हुए की गई है, जो 28 नवंबर से 10 दिसंबर तक चेन्नई और मदुरै में आयोजित होगा। बिरेन्द्र लाकड़ा ने 2010 में भारतीय सीनियर टीम के लिए डेब्यू किया और जल्द ही देश के सबसे भरोसेमंद डिफेंडर्स में

शुमार हो गए। उन्होंने लंदन 2012 और टोक्यो 2020 ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व किया। अपने शानदार करियर में उन्होंने एशियन गेम्स 2014 में गोल्ड, 2018 में ब्रॉन्ज, एशिया कप 2013 में सिल्वर, कॉमनवेल्थ गेम्स 2014 में सिल्वर, चैम्पियंस ट्रॉफी 2018 में सिल्वर जैसे कई महत्वपूर्ण पदक भारत को दिलाए। ओडिशा के रहने वाले लाकड़ा हाल ही में हीरो हॉकी इंडिया लीग 2024-25 में टीम गोणासिका की ओर से खेले, जिससे उनकी फिटनेस और हॉकी के प्रति जुनून झलकता है। नई भूमिका को लेकर बिरेन्द्र लाकड़ा ने कहा, इस महत्वपूर्ण समय में भारतीय जूनियर टीम का हिस्सा बनना मेरे लिए बहुत गर्व की बात है। मैंने भारत की जर्सी पहनने की कीमत को समझा है और अब मैं अगली पीढ़ी को इसके लिए तैयार करने के लिए उत्सुक हूं। श्रीजेश के साथ काम करना, जो मेरे साथी और प्रेरणा रहे हैं, एक रोमांचक चुनौती है। हम एक ऐसी टीम बनाना चाहते हैं जो निडर होकर खेल सके और देश को गर्व महसूस करा सके। टीम के कोच पीआर श्रीजेश ने कहा, बिरेन्द्र का टीम से जुड़ना हमारे लिए बहुत बड़ा फायदा है। उनके पास जबरदस्त अनुभव, रणनीतिक समझ और शांत नेतृत्व है, जो इन युवा खिलाड़ियों के लिए बेहद मूल्यवान होगा।

वांग/सन ने टीटी विश्व चैंपियनशिप में लगातार तीसरा मिश्रित युगल खिताब जीता

दोहा। चीन के ओलंपिक चैंपियन वांग चुकिन और सुन यिंगशा ने विश्व टेबल टेनिस चैंपियनशिप में

जापानी टीम को 3-1 से हराकर अपना तीसरा मिश्रित युगल खिताब जीता। दूसरे वरीय जोड़ी ने 16वीं वरीय महारू योशिमुरा और सत्सुकी ओडो की जोड़ी को 39 मिनट में 11-7, 11-8, 7-11, 11-8 से हराकर जीत हासिल की। इससे पहले दिन में वांग और सुन क्रमशः पुरुष और महिला एकल फाइनल में पहुंचे।

मलेशिया मास्टर्स: किदांबी श्रीकांत ने तीन साल बाद किसी फाइनल में बनाई जगह

एजेंसी

नई दिल्ली। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी किदांबी श्रीकांत ने मलेशिया मास्टर्स सुपर 500 टूर्नामेंट के पुरुष एकल फाइनल में जगह बना ली है। उन्होंने जापान के युशी तनाका को सीधे गेमों में हराकर यह सफलता हासिल की।

2021 वर्ल्ड चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता 32 वर्षीय श्रीकांत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पुराने अंदाज़ की झलक दिखाई। तेज़ नेट प्ले और आक्रामक शॉट्स के दम पर उन्होंने विश्व नंबर 23 तनाका को 21-18, 24-22 से हराया। यह श्रीकांत की छह साल में बीडब्ल्यूएफ वर्ल्ड टूर पर पहली फाइनल एंट्री है। इससे पहले वह 2019 इंडिया ओपन में उपविजेता रहे थे। श्रीकांत ने आखिरी बार 2017 में चार खिताब अपने नाम

किए थे। एक समय के विश्व नंबर 1 रह चुके श्रीकांत की मौजूदा रैंकिंग 65वीं है। बीते कुछ सालों में वह फॉर्म और फिटनेस के कारण संघर्ष करते रहे हैं, लेकिन इस प्रदर्शन से उन्होंने वापसी के संकेत दिए हैं।

उत्तर-पूर्व को मिलेगा खेलों का नया मंच, हर साल होंगे 'खेलो इंडिया नॉर्थईस्ट गेम्स' : डॉ मनसुख मांडविया

एजेंसी

नई दिल्ली। देश के उत्तर-पूर्वी राज्यों में छिपी खेल प्रतिभा को राष्ट्रीय मंच देने और उसे प्रोत्साहन देने के लिए भारत सरकार हर वर्ष खेलो इंडिया नॉर्थईस्ट गेम्स आयोजित करेगी। यह घोषणा केंद्रीय युवा मामलों और खेल मंत्री डॉ मनसुख मांडविया ने राइजिंग नॉर्थईस्ट इन्वेस्टर्स समिट 2025 में की। यह आयोजन नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में हुआ। डॉ मांडविया ने कहा, जिस तरह उत्तर-पूर्व भारत में परिवर्तन की लहर आई है, उसी तरह अब खेलों का एक नया युग भी इस क्षेत्र से शुरू हो रहा है। आज देश के कई शीर्ष खिलाड़ी उत्तर-पूर्व से आ रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत का नाम रोशन कर रहे हैं।

उत्तर-पूर्व राज्यों में हर साल होगा खेलो इंडिया नॉर्थईस्ट गेम्स

मंत्री ने बताया कि अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा में बारी-बारी से हर वर्ष खेलो इंडिया नॉर्थईस्ट गेम्स आयोजित किए जाएंगे। इसका उद्देश्य न केवल प्रतिभा की पहचान और पोषण करना है, बल्कि परंपरागत खेलों को भी मंच प्रदान करना है। डॉ मांडविया ने बताया कि उत्तर-पूर्व में खेल अधोसंरचना को मजबूत करने के लिए 2021 में 439 करोड़ रुपये की मंजूरी दी गई थी, जिसके तहत 64 परियोजनाएं शुरू की गईं, जिनमें सिंथेटिक टर्फ, मल्टीपर्पज हॉल, स्विमिंग पूल और छात्रावास शामिल हैं। आज इस क्षेत्र में 86 खेल परियोजनाएं सक्रिय रूप से उपयोग में हैं। सरकार राष्ट्रीय खेल भंडार प्रणाली (एनएसआरएस) पोर्टल पर एक विशाल प्रतिभा पहचान अभियान शुरू करने जा रही है। कोई भी नागरिक किसी खिलाड़ी के खेल प्रदर्शन का वीडियो अपलोड कर सकता है। यदि वह खिलाड़ी संभावनाशील पाया जाता है, तो भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) की टीम मौके पर जाकर उसका मूल्यांकन करेगी और उसे खेलो

इंडिया केंद्र (केआईसी) या राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई) में शामिल किया जाएगा। वर्तमान में उत्तर-पूर्वी भारत में 250 से अधिक खेलो इंडिया केंद्र (केआईसी) हैं, जहां 8000 से अधिक खिलाड़ी प्रशिक्षण ले रहे हैं। इसके अतिरिक्त 8 राज्य स्तरीय उत्कृष्टता केंद्र (केआईएससीई) और गुवाहाटी, इटानगर और इम्फाल में 3 राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई) सक्रिय हैं, जहां 600 से अधिक खिलाड़ियों को विश्वस्तरीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

खेल मंत्री ने बताया कि खेलो इंडिया अस्मिता लीग के तहत 13,000 से अधिक उत्तर-पूर्व की लड़कियों ने विभिन्न खेलों में भाग लिया। यह दर्शाता है कि यह क्षेत्र अब खेल प्रतिभा का नया केंद्र बनता जा रहा है, जो भविष्य में राष्ट्रीय टीम को मजबूत बैकअप देगा। डॉ मांडविया ने कहा कि भारत 2030 में राष्ट्रमंडल खेलों और 2036 में ओलंपिक की मेजबानी का लक्ष्य लेकर चल रहा है। भारत की भौगोलिक विविधता (दक्षिण में मानसून, उत्तर में हिमपात और पश्चिम में गर्मी) इसे वर्ष भर अंतरराष्ट्रीय खेलों की मेजबानी के लिए आदर्श बनाती है। उन्होंने कहा, जैसे मेक इन इंडिया ने दुनिया को भारत में निर्माण की दिशा में आकर्षित किया, वैसे ही प्ले इन इंडिया भारत को वैश्विक खेल गंतव्य बना सकता है।

न्यायालय ने फर्स्ट गेम्स को भेजे गए 5,712 करोड़ रुपये के जीएसटी नोटिस पर रोक लगाई: पेटीएम

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस के स्वामित्व वाले रियल मनी गेमिंग मंच फर्स्ट गेम्स को भेजे गए 5,712 करोड़ रुपये के जीएसटी नोटिस पर रोक लगा दी है। पेटीएम ब्रांड नाम के तहत कारोबार करने वाली कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस ने शेयर बाजार को यह जानकारी दी। जीएसटी खुफिया महानिदेशालय, नयी दिल्ली ने अप्रैल में फर्स्ट गेम्स को कारण बताओ नोटिस (एससीएन) जारी किया था। शेयर बाजार को दी गई जानकारी में कहा गया, फर्स्ट गेम्स ने हमें 24 मई, 2025 को सुबह 10:44 बजे (आईएसटी) बताया कि उक्त कारण बताओ नोटिस को चुनौती देने वाली फर्स्ट गेम्स की रिट याचिका पर सुनवाई करते हुए माननीय उच्चतम न्यायालय ने 23 मई, 2025 को एससीएन की कार्यवाही पर रोक लगा दी है। वन97 कम्युनिकेशंस ने कहा कि कर का मामला एक उद्योग-व्यापी मुद्दा है और फर्स्ट गेम्स तक सीमित नहीं है। इस मामले की सुनवाई न्यायालय कर रहा है।

जेके सीमेंट का मुनाफा चौथी तिमाही में 64.4 प्रतिशत बढ़कर 361.3 करोड़ रुपये पर

नयी दिल्ली। जेके सीमेंट लिमिटेड ने बताया कि वित्त वर्ष 2024-25 की मार्च तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध लाभ 64.5 प्रतिशत बढ़कर 361.33 करोड़ रुपये हो गया।जेके सीमेंट लिमिटेड (जेकेसीएल) ने शेयर बाजार को बताया कि कंपनी ने एक साल पहले जनवरी-मार्च तिमाही में 219.68 करोड़ रुपये का लाभ दर्ज किया था। मार्च तिमाही में परिचालन राजस्व 15.3 प्रतिशत बढ़कर 3,581.18 करोड़ रुपये हो गया। एक साल पहले इसी अवधि में यह 3,105.77 करोड़ रुपये था। जेकेसीएल का कुल खर्च मार्च तिमाही में 3,092.04 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल की समान तिमाही से 9.8 फीसदी ज्यादा है।

उप्र सरकार का 2026-27 तक 347 नयी टीएचआर इकाइयां स्थापित करने का लक्ष्य

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार ने कुपोषण दूर करने के लिए वित्त वर्ष 2026-27 तक राज्य में 347 नई टीएचआर इकाइयां स्थापित करने का लक्ष्य रखा है। एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी गयी। बयान में कहा गया कि राज्य में योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व की सरकार कुपोषण के खिलाफ अपने अभियान को तेज कर रही है। इस समय 43 जिलों में 204 'टेक होम राशन' (टीएचआर) इकाइयों से 288 परियोजनाओं को आपूर्ति हो रही है और अब 2026-27 तक 347 नई टीएचआर इकाइयों की स्थापना का लक्ष्य रखा गया है। इस योजना के लिए 273.50 करोड़ रुपये की धनराशि आवंटित की गई है, जिससे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और धात्री माताओं के लिए पौष्टिक आहार सुनिश्चित होगा। बयान के अनुसार योजना के तहत विकेंद्रीकृत भुगतान व्यवस्था लागू की गई है, जिसके लिए कुल 273.50 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं। संतकबीर नगर, अंबेडकरनगर, बस्ती, सिद्धार्थनगर, अलीगढ़, बांदा, इटावा, प्रतापगढ़, ललितपुर, औरैया और महोबा जैसे जनपदों ने शत-प्रतिशत भुगतान पूरा कर लिया है, जो इस योजना की सफलता को दर्शाता है।

'राइजिंग नॉर्थ ईस्ट' निवेशक सम्मेलन में 4.18 लाख करोड़ रुपये के करार की घोषणा: सिंधिया

ग्वालियर। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि दिल्ली में चल रहे 'राइजिंग नॉर्थ ईस्ट' निवेशक सम्मेलन 2025 में 4.18 लाख करोड़ रुपये के करार की घोषणा की गई। इस सम्मेलन का उद्घाटन शुक्रवार को राष्ट्रीय राजधानी के भारत मंडपम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया। इसका उद्देश्य इस क्षेत्र को अवसरों की भूमि के रूप में स्थापित करना, वैश्विक और घरेलू निवेश को आकर्षित करना और प्रमुख हितधारकों, निवेशकों तथा नीति निर्माताओं को एक मंच पर लाना है। सिंधिया ने संवाददाताओं को बताया, पहली बार पूर्वोत्तर के सभी आठ राज्यों के लिए एक संयुक्त कार्यक्रम चल रहा है। इसके लिए बेंगलुरु, मुंबई, अहमदाबाद, चेन्नई, दिल्ली, कोलकाता और इंदौर जैसे शहरों में रोड शो आयोजित किए गए। विभिन्न औद्योगिक समूहों के साथ बैठकें की गईं।

जापान को पछाड़ भारत बना दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, अगले तीन वर्षों में जर्मनी से होगा आगे

एजेंसी

नई दिल्ली। नीति आयोग के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) बीवीआर सुब्रह्मण्यम ने कहा कि भारत जापान को पीछे छोड़कर दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है और अब अगले 2.5 से 3 वर्षों में जर्मनी को हटाकर तीसरे स्थान पर पहुंच जाएगा। सुब्रह्मण्यम ने 10वीं नीति आयोग गवर्निंग काउंसिल मीटिंग की प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'मैं जब बोल रहा हूं, तब हम दुनिया की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और 4 ट्रिलियन डॉलर की जीडीपी हैं और यह मेरा डेटा नहीं है। यह आईएमएफ का डेटा है। आज भारत जापान से भी बड़ी अर्थव्यवस्था है।

सुब्रह्मण्यम ने कहा, केवल संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन और जर्मनी ही हमसे बड़े हैं और जो योजना बनाई जा रही है, अगर हम उसी पर टिके रहते हैं, तो भारत

अगले 2, 2.5 से 3 वर्षों में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने वर्ल्ड इकोनॉमिक आउटलुक अप्रैल 2025 में कहा था कि 2025 में भारत की नॉमिनल जीडीपी बढ़कर 4,187.017 अरब डॉलर हो जाएगी। वहीं, जापान की जीडीपी का आकार 4,186.431 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। आईएमएफ के अनुमानों के अनुसार, आने वाले वर्षों में भारत जर्मनी को पछाड़कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भी बन सकता है। 2027 तक भारत की अर्थव्यवस्था 5 ट्रिलियन डॉलर के आंकड़े को पार कर सकती है और इस दौरान जीडीपी का आकार 5,069.47 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। वहीं, 2028 तक भारत की जीडीपी का आकार 5,584.476 अरब डॉलर होगा, जबकि इस दौरान जर्मनी की जीडीपी का आकार 5,251.928 अरब डॉलर रहने का अनुमान है। आईएमएफ के मुताबिक, 2025 में अमेरिका 30,507.217 अरब डॉलर के आकार के साथ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना रहेगा। वहीं, चीन 19,231.705 अरब डॉलर के साथ दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा। आईएमएफ की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिका की जीडीपी वृद्धि इस साल 1.8 प्रतिशत तक धीमी होने की उम्मीद है, जो 2026 1.7 प्रतिशत तक रह जाएगी। वहीं, यूरोप की वृद्धि दर 2025 में मात्र 0.8 प्रतिशत रहने का अनुमान है। हालांकि, 2026 में इसमें रिकवरी देखने को मिलेगी और यह 1.2 प्रतिशत पर पहुंच जाएगी।

पेट्रोल और डीजल की कीमतों में बदलाव नहीं

एजेंसी

नई दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में तेजी लौटने के बावजूद घरेलू बाजार में पेट्रोल और डीजल के दाम में आज कोई बदलाव नहीं हुआ, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 94.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 87.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे।तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 104.21 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 92.15 रुपये प्रति लीटर पर रहा। वैश्विक स्तर पर साप्ताहांत पर अमेरिकी क्रूड 0.92 प्रतिशत उबलकर 61.76 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया। इसी तरह लंदन ब्रेंट क्रूड 0.39 प्रतिशत की तेजी लेकर 65.03 डॉलर प्रति बैरल पर रहा।

एलआईसी ने 24 घंटे में सर्वाधिक जीवन बीमा पॉलिसियां बेचने का बनाया गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड

एजेंसी

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की बीमा कंपनी भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने बड़ी उपल्बिध हासिल की है। कंपनी ने 24 घंटे में सबसे ज्यादा जीवन बीमा पॉलिसियां बेचने के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड (जीडब्ल्यूआर) का खिताब हासिल किया है। बीमा कंपनी के एजेंटों ने 20 जनवरी, 2025 को भारत में रिकॉर्ड 5,88,107 जीवन बीमा पॉलिसियां बेचीं है। जीवन बीमा कंपनी ने एक बयान में बताया कि भारतीय जीवन बीमा निगम को यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि उसने 24 घंटे में सबसे ज्यादा जीवन बीमा पॉलिसियां बेचने के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स का खिताब जीता है। एलआईसी के एजेंटों ने 20 जनवरी, 2025 को पूरे भारत में रिकॉर्ड 5,88,107 जीवन बीमा पॉलिसियां बेचीं। जीवन बीमा कंपनी ने कहा कि 20 जनवरी, 2025 को एलआईसी के कुल 4,52,839 एजेंटों ने पूरे भारत में 5,88,107 जीवन बीमा पॉलिसियां सफलतापूर्वक पूरी कीं और जारी कीं। इस शानदार प्रयास ने 24 घंटे की अवधि के भीतर जीवन हिस्सा थी। कंपनी की यह उपलब्धि 24 घंटे की अवधि के भीतर जीवन बीमा उद्योग में एजेंट उत्पादकता के लिए एक नया वैश्विक बेंचमार्क है।

बीमा उद्योग में एजेंट उत्पादकता के लिए एक नया वैश्विक मानक स्थापित किया है। जीवन बीमा पॉलिसियों की यह रिकॉर्ड बिक्री प्रत्येक एजेंट से मैड मिलियन डे यानी 20 जनवरी, 2025 को कम से कम एक पॉलिसी पूरी करने की अपील का एलआईसी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी और प्रबंध निदेशक सिद्धार्थ मोहंती ने कहा कि यह उपलब्धि अपने ग्राहकों और उनके परिवारों को महत्वपूर्ण वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के अपने मिशन के प्रति निगम की गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

इंडोनेशिया के राष्ट्रपति और चीन के पीएम ने की टैरिफ पर चर्चा, मलयेशिया ने कहा- हम एकजुट हों

एजेंसी

बीजिंग। चीन के प्रधानमंत्री ली कियांग ने रविवार को इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो से मुलाकात की और अमेरिका के वैश्विक व्यापार युद्ध तथा आर्थिक वैश्वीकरण के समक्ष चुनौतियों के दौरान व्यापार और निवेश बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। ली दक्षिण-पूर्व एशिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था इंडोनेशिया की तीन दिवसीय यात्रा पर शनिवार दोपहर को इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता पहुंचे। यह इस साल उनकी पहली विदेश यात्रा का पहला पड़ाव था। इंडोनेशिया और चीन 20 प्रमुख विकासशील देशों और उभरती अर्थव्यवस्थाओं व ब्रिक्स के सदस्य देश हैं। ली रविवार शाम को इंडोनेशिया-चीन व्यापार स्वागत समारोह में अपने संबोधन के लिए 60 प्रमुख चीनी व्यवसायियों को अपने साथ लाए। उन्होंने अपने भाषण में इस बात पर जोर दिया कि बढ़ती बाहरी चुनौतियों के बावजूद चीन की अर्थव्यवस्था ने इस साल तेजी से विकास हासिल किया है। ली ने इस कार्यक्रम में कहा, वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय स्थिति गतिरोध की स्थिति

में है, एकतरफावाद और संरक्षणवाद बढ़ रहा है, धमकाने वाला व्यवहार बढ़ रहा है। इस कार्यक्रम में सुबियांटो भी मौजूद थे।

ली ने कहा कि इस वर्ष गुटनिरपेक्ष आंदोलन की 70वीं वर्षगांठ है, जिसे एशियाई और अफ्रीकी देशों द्वारा इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में आयोजित किया गया था, जब सात दशक से अधिक समय पहले विश्व एक ऐतिहासिक चौराहे पर था। ली ने कहा कि एकजुटता, मैत्री और सहयोग की बांडुंग भावना ने वैश्विक दक्षिण देशों की एकता और सहयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।ली ने कहा, सात दशक से भी अधिक समय बाद, दुनिया एक बार फिर महत्वपूर्ण चौराहे पर है।उन्होंने सभी देशों से बातचीत और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के माध्यम से मतभेदों को सुलझाते हुए साझा आधार तलाशने का आह्वान किया। मलेशिया ने कहा- अमेरिकी टैरिफ से निपटने के लिए एकजुट रहना चाहिए मलेशिया के विदेश मंत्री मोहम्मद हसन ने रविवार को कहा कि दक्षिण पूर्व एशियाई देशों को क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण में तेजी लानी चाहिए।

ईपीएफ पर वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 8.25 फीसदी ब्याज दर को मंजूरी

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) जमा पर 8.25 फीसदी ब्याज दर को मंजूरी दी है। इससे ईपीएफओ अपने 7 करोड़ से अधिक अंशधारकों के भविष्य निधि पर वार्षिक ब्याज को जमा कर सकेगा। इसके लिए अधिसूचना जारी कर दी गई है। श्रम मंत्रालय के एक अधिकारी ने बताया कि वित्त मंत्रालय ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए ईपीएफ पर 8.25 फीसदी ब्याज दर पर अपनी सहमति दे दी है। श्रम मंत्रालय ने गुरुवार को ईपीएफओ को इस बारे में एक पत्र भेजा है। दरअसल कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने 28 फरवरी को वित्त वर्ष 2024-25 के लिए ईपीएफ जमा पर 8.25 फीसदी की ब्याज दर को बरकरार रखने का फैसला किया था। ये इससे पिछले वित्त वर्ष में दिये गये ब्याज दर के

बराबर है। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने 28 फरवरी को वित्त वर्ष 2024-25 के लिए कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) जमा पर 8.25 प्रतिशत की ब्याज दर बरकरार रखने का फैसला किया था, जो पिछले वित्त वर्ष में दी गई दर के बराबर है। 2024-25 के लिए स्वीकृत ब्याज दर को वित्त मंत्रालय की सहमति के लिए भेजा गया था। ईपीएफओ एक्ट के तहत कर्मचारी की बेसिक सैलरी+महंगाई भत्ता का 12 फीसदी राशि ईपीएफ अकाउंट में जाता है। कंपनी भी कर्मचारी की बेसिक सैलरी+महंगाई भत्ता का 12 फीसदी जमा करती है। कंपनी के 12 फीसदी हिस्से में से 3.67 फीसदी पीएफ अकाउंट में जाता है, जबकि बाकी 8.33 फीसदी धनराशि पेंशन स्कीम में जाता है। वहीं, कर्मचारी के हिस्से का सारा पैसा ईपीएफ अकाउंट में जाता है।

दरअसल 2022 में ईपीएफओ ने वित्त वर्ष 2021-22 के लिए अपने सात करोड़ से अधिक ग्राहकों के लिए ईपीएफ पर ब्याज को घटाकर चार दशक से ज्यादा के निचले स्तर 8.10 फीसदी कर दिया था। वित्त वर्ष 2020-21 में यह ब्याज दर 8.5 फीसदी थी। ईपीएफ पर 8.10 फीसदी ब्याज दर 1977-78 के बाद से सबसे कम थी, उस वक्त ये दर सिर्फ आठ फीसदी थी। ईपीएफओ ने वित्त वर्ष 2019-20 के लिए ईपीएफ जमा पर ब्याज दर घटाकर सात साल के निचले स्तर 8.5 फीसदी कर दिया था, जो वित्त वर्ष 2018-19 के लिए 8.65 प्रतिशत था।

जिंसों में टिकाव

एजेंसी

नई दिल्ली। स्थानीय स्तर पर मांग कमजोर रहने से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में खाद्य तेल समेत सभी जिंसों के भाव स्थिर रहे। इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में टिकाव रहा। सरसों तेल, मूंगफली तेल, सूरजमुखी तेल, सोया रिफाइंड, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ और पिछले स्तर पर पड़े रहे।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में स्थिरता रही। इस दौरान चीनी और गुड़ के भाव पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर टीके रहे।

दाल-दलहन: दाल-दलहन के बाजार में टिकाव रहा। इस दौरान चना, दाल चना, मसूर दाल, मूंग दाल, उड़द दाल और अरहर दाल में कोई बदलाव नहीं हुआ।

अनाज : अनाज मंडी में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गेहूं और चावल के दाम पिछले कारोबारी दिवस के स्तर पर पड़े रहे।

'जातिगत जनगणना विभाजनकारी नहीं', एनसीएससी के अध्यक्ष बोले- आंकड़ों से सामाजिक न्याय होगा मजबूत

एजेंसी

मुंबई। राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (एनसीएससी) के अध्यक्ष किशोर मकवाना ने जातिगत गणना से समाज में खाई पैदा होने के आरोपों को खारिज किया है। उन्होंने कहा है कि एकत्र किए गए आंकड़े नीतिगत निर्णय लेने में आधार के रूप में काम आएंगे। इससे सामाजिक न्याय को मजबूती मिलेगी। आयोग के मुखिया ने कहा कि इससे हाशिए पर पड़े पिछड़े समुदायों के उत्थान में मदद मिलेगी।

भाजपा के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार की ओर से अगली जनगणना में जातिगत गणना को शामिल किए जाने का मकवाना ने स्वागत कहा है। उन्होंने कहा कि 2011 से उलट इस बार, ÷निश्चित आंकड़े उपलब्ध होंगे÷ जिससे कल्याणकारी योजनाओं तक आनुपातिक पहुंच

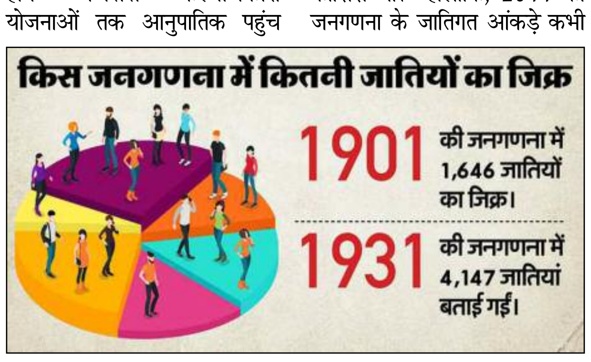

सुनिश्चित को सकेगी। यूपीए सरकार ने 2011 में सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना करवाई थी, जो 1931 के बाद से देश भर में जाति के आंकड़े एकत्र करने की पहली कोशिश थी। हालांकि, 2011 की जनगणना के जातिगत आंकड़े कभी भी पूरी तरह से जारी या उपयोग नहीं किए गए। जातिगत जनगणना से सांप्रदायिक विभाजन पैदा होने की चिंताओं को खारिज करते हुए मकवाना ने कहा, 'इससे जाति के आधार पर कोई विभाजन पैदा नहीं होगा। बल्कि, इससे सामाजिक न्याय मजबूत होगा। उन्होंने कहा, यह पिछड़ी जातियों का उत्थान करेगा और अनुसूचित जाति समुदाय के लिए बाबासाहेब अंबेडकर के सपने के सभी तीन पहलुओं -सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक- को मजबूत करेगा। एनसीएससी अध्यक्ष ने कहा कि जाति जनगणना से सटीक आंकड़े मिलेंगे। इससे मुद्रा योजना जैसी योजनाओं के लाभार्थियों को बेहतर तरीके सुविधाएं दी जा सकेंगी। उन्होंने कहा, इससे यह सुनिश्चित होगा कि जो लोग वंचित रह गए हैं, उन्हें अंततः उनका हक मिले। मकवाना ने साफ किया कि एनसीएससी सीधे तौर पर गणना प्रक्रिया में शामिल नहीं होगी।

तेलंगाना का 2047 तक जीडीपी में आठ प्रतिशत योगदान का लक्ष्य : मुख्यमंत्री रेड्डी

एजेंसी

नई दिल्ली। तेलंगाना के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि उनकी सरकार का लक्ष्य 2047 तक देश के राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में आठ प्रतिशत का योगदान करना है। उन्होंने छह प्रमुख महानगरीय शहरों को विकसित करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्य दल बनाने का प्रस्ताव भी रखा। रेड्डी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में सरकारी थिंक टैंक नीति आयोग की 10वीं शासी परिषद की बैठक में कहा कि तेलंगाना देश की आजादी की शताब्दी के लिए सरकार के लक्ष्य ÷विकसित भारत को हासिल करने की दिशा में जारी प्रयासों का नेतृत्व करने के लिए तैयार है।रेड्डी ने कहा कि कांग्रेस शासित राज्य वर्तमान में भारत की जीडीपी में लगभग 2.5 प्रतिशत का योगदान देता है, जबकि इसकी आबादी 2.9 प्रतिशत है। उन्होंने कहा, ÷तेलंगाना इस

जिम्मेदारी को निभाने और विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय लक्ष्य को साकार करने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। उन्होंने छह महानगरों- मुंबई, दिल्ली, बेंगलुरु, कोलकाता, चेन्नई और हैदराबाद की क्षमता का दोहन करने के लिए प्रधानमंत्री और संबंधित मुख्यमंत्रियों के अधीन एक राष्ट्रीय कार्य दल की स्थापना का प्रस्ताव रखा। उन्होंने कहा कि ये छह शहर आर्थिक वृद्धि, नवाचार और रोजगार सृजन के इंजन के रूप में काम करते हैं।

एनटीपीसी का शुद्ध लाभ मार्च तिमाही में 22 प्रतिशत बढ़कर 7,897 करोड़ रुपये पर

नई दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी एनटीपीसी ने बताया कि मार्च तिमाही में उसका एकीकृत शुद्ध लाभ लगभग 22 प्रतिशत बढ़कर 7,897.14 करोड़ रुपये हो गया। कंपनी ने शेयर बाजार को बताया कि उसने 2023-24 की जनवरी-मार्च तिमाही में 6,490.05 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ दर्ज किया था। समीक्षाधीन तिमाही के दौरान एनटीपीसी की परिचालन आय सालाना आधार पर 47,628.19 करोड़ रुपये से बढ़कर 49,833.70 करोड़ रुपये हो गई। पूरे वित्त वर्ष 2024-25 के लिए कंपनी का शुद्ध लाभ बढ़कर 23,953.15 करोड़ रुपये हो गया, जो 2023-24 में 21,332.45 करोड़ रुपये था। इस दौरान परिचालन आय भी 1,78,524.80 करोड़ रुपये से बढ़कर 1,88,138.06 करोड़ रुपये हो गई। कंपनी के निदेशक मंडल ने 2024-25 के लिए 33.50 प्रतिशत (3.35 रुपये प्रति शेयर) का अंतिम लाभांश देने की सिफारिश की है।

पीयूष गोयल ने यूरोपीय संघ के आयुक्त मारोस सेफकोविक से मुलाकात की, एफटीए पर हुई चर्चा

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने ब्रुसेल्स में यूरोपीय व्यापार आयुक्त मारोस सेफकोविक से मुलाकात की। यह दोनों नेताओं की एक महीने के भीतर दूसरी मुलाकात थी, जिसमें भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर चर्चा की गई। गोयल ने इस महीने की शुरुआत में अपने यूरोपीय संघ समकक्ष के साथ बैठक की थी। यूरोपीय व्यापार आयुक्त मारोस सेफकोविक और वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने 'एक्स' पोस्ट पर इस मुलाकात और बातचीत की जानकारी दी है। यूरोपीय संघ के अधिकारी मारोस सेफकोविक ने एक्स पोस्ट के माध्यम से कहा, अपने मित्र और समकक्ष पीयूष गोयल का स्वागत करते हुए मुझे खुशी हो रही है। हम लगातार प्रगति कर रहे हैं। आइए, हम कड़ी मेहनत और स्पष्ट फोकस के साथ गति बनाए रखें। मैं जल्द ही हमारी अगली बैठक की प्रतीक्षा कर रहा हूं। वहीं, केंद्रीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने मारोस सेफकोविक

के पोस्ट के जवाब में 'एक्स' पर लिखा है, मेरे मित्र, गर्मजोशी से स्वागत के लिए धन्यवाद। हम भारत और यूरोपीय संघ की साझा समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। आइए, हम इस गति को जारी रखें! अमेरिका के दौरे पर गए वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल 23 मई को वाशिंगटन से ब्रुसेल्स पहुंचे, जबकि भारत के मुख्य वार्ताकार एल. सत्य श्रीनिवास और उनकी टीम भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर वार्ता के लिए पहले से ही यूरोपीय संघ मुख्यालय में मौजूद हैं। दोनों नेताओं के बीच यह बैठक ऐसे समय में हुई है, जब दोनों पक्ष जुलाई तक अर्ली हार्वेस्ट व्यापार समझौते को अंतिम रूप देने का लक्ष्य बना रहे हैं।

गोयल ने इस महीने की शुरुआत में अपने यूरोपीय संघ समकक्ष के साथ बैठक की थी।

उल्लेखनीय है कि यूरोपीय संघ के अनुसार ईयू-भारत व्यापार वार्ता गति पकड़ रही है, दोनों पक्षों का लक्ष्य 2025 के अंत तक एक समझौते को पूरा करना है। भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर बातचीत में तेजी लाने के लिए डच समर्थन भी मांगा, जिसे भारत 2025 के अंत तक पूरा करने की उम्मीद करता है। दोनों पक्षों के अधिकारियों ने हाल ही में 16 मई को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ग्यारहवें दौर की वार्ता पूरी की है।

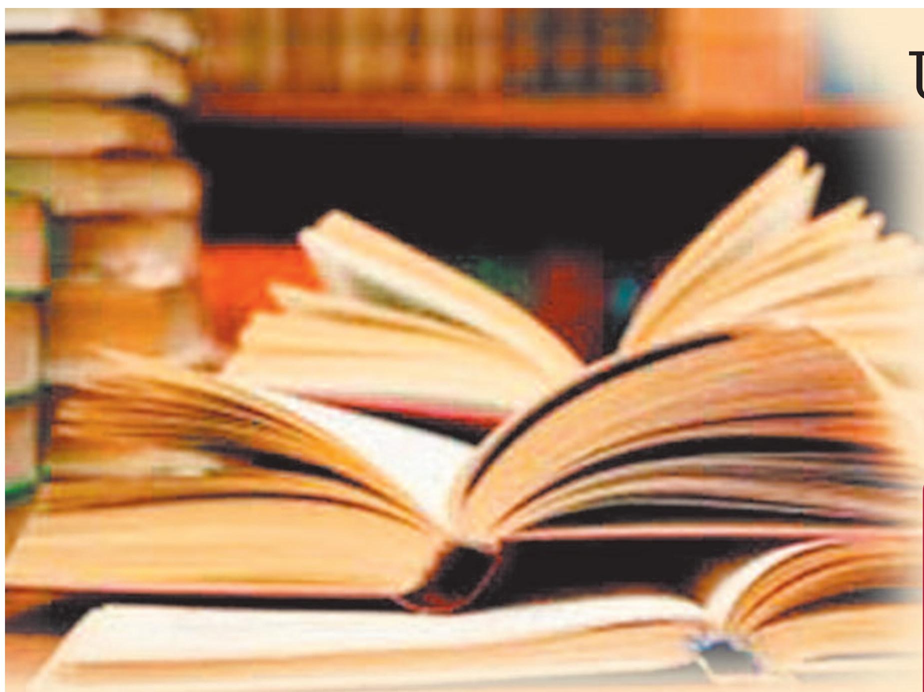

परीक्षा में सफलता पाने का मूल मंत्र

यदि तुम इस बार क्लास में फर्स्ट रैंक पर नहीं आई, तो याद रखना कि तुम्हारे सारे गिफ्ट्स कैंसल..., गोवा का ट्रिप तो कैंसल ही समझना यदि तुमने टॉप नहीं किया..., देखो बेटा कम नंबर लाकर हमारी नाक मत कटवा देना, यदि 90 प्रतिशत नहीं आए तो मनपसंद कालेज में एडमिशन नहीं मिलेगा..., ये सब एग्जाम से पहले हर पेरैंट्स को कहते हुए सुना जा सकता है, जो बच्चों में एग्जाम की टैंशन दोगुना कर देते हैं।

वास्तव में परीक्षा की घड़ी ऐसा समय होता है, जब बच्चे हों या बड़े हर कोई घबरा जाता है। छोटे बच्चों के लिए परीक्षा किसी हौव्वे से कम नहीं होती। एक ओर पेरैंट्स की उनसे अपेक्षाएं और दूसरी ओर उनका चंचल मन, दोनों उनके लिए दुविधा का कारण बन जाते हैं। परीक्षा में जहां तनाव के कारण बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता, वहीं दूसरी ओर बच्चों के लिए परीक्षा में अच्छे अंक लाना भी मजबूरी बन जाती है।

सफलता का मूल मंत्र

1 सबसे पहले पढ़ाई करने के लिए एक टाइम टेबल बनाएं और उसी के अनुसार अपनी पढ़ाई करें।

2 पढ़ाई करते वक्त एकाग्रता होनी बहुत जरूरी होती है। इसके लिए सुबह जल्दी उठ कर ध्यान करें, जिससे आपकी एकाग्रता बनी रहे।

3 हर रोज कोई टैस्ट पेपर बना कर एक निर्धारित समय सीमा में उसको हल करने का प्रयास करें। उसके बाद अपनी उत्तर पुस्तिका को जांच कर अपना मूल्यांकन स्वयं करें।

4 लगातार घंटों बैठ कर पढ़ाई करने से बेहतर है कुछ समय एकाग्रचित्त होकर पढ़ाई की जाए।

5 पढ़ाई के बीच-बीच में दो-तीन घंटे बाद एक ब्रेक अवश्य लें।

6 देर रात तक पढने़ की अपेक्षा सुबह जल्दी उठ कर पढ़ाई करें।

7 आप चाहें तो अपने दोस्तों के साथ बैठ कर भी पढ़ाई कर सकते हैं।

8 पढ़ाई के दौरान और परीक्षा के लिए जाते समय कभी भी ऐसे नकारात्मक विचार मन में न आने दें कि जो पेपर में आएगा वह हल कर पाऊंगा या नहीं।

9 पूरे आत्मविश्वास के साथ पेपर देने जाएं। इससे पेपर हल करने में काफी मदद मिलेगी।

10 हमेशा यह सोचें कि मेहनत करके आप भी अव्वल आ सकते हैं।

11 परीक्षा में सबसे पहले पूरा प्रश्नपत्र पढ़ें और उसके बाद ही उसे हल करें। हड़बड़ी में प्रश्नपत्र हल करने की भूल न करें।

12 जिस प्रश्न को हल कर रहे हैं, उस पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित रखें। इस दौरान अन्य प्रश्नों के बारे में विचार न करें, परंतु समय का ध्यान जरूर रखें।

न बनाएं दबाव

अपने बच्चे की क्षमता, रुचियों, इच्छा और क्लास में उसकी पोजीशन जानने की पेरैंट्स की कोई इच्छा नहीं रहती तथा बच्चे पर हर संभव तरीके से दबाव डाला जाता है, जिसके परिणामस्वरूप बच्चा बीमार भी हो सकता है तथा फेल होने पर घातक कदम तक उठा लेता है। अतः बच्चे को बिना किसी दबाव के इम्तिहान देने देना ही उसे तनाव मुक्त बनाता है।

उस पर कभी ज्यादा अंक लाने या किसी अन्य बच्चे जैसा बनने का दबाव न डालें। हर बच्चा अपने आप में विलक्षण होता है, बस उसे पहचानने की कोशिश करें। उसे आपके विवेकपूर्ण मार्गदर्शन की आवश्यकता है, इसलिए उसकी असफलताओं पर उसे धिक्कारें नहीं, बल्कि विषम परिस्थितियों में उसे संभले रहने की शिक्षा दें।

प्रेरित करें

हर बच्चे की बुद्धि, योग्यता और दक्षता भिन्न-भिन्न होती है, इसलिए तुलना विपरीत परिणाम सामने ला सकती है। किसी बच्चे पर अधिक अंक लाने के दबाव का परिणाम अक्सर उल्टा होता है। अपने बच्चे को परीक्षा के लिए अधिक से अधिक तैयारी करने के लिए प्रेरित करना तो अच्छी बात है, परंतु उसके लिए लक्ष्य निर्धारित कर प्राप्त करने का दबाव बनाना गलत है।

इससे वह प्रेरित होने की अपेक्षा कुंठित ज्यादा होता है। यदि बच्चा पेरैंट्स की इच्छानुसार परिणाम नहीं ला पाता तो उसे प्रताड़ित न करें। इस बात का विश्वास रखें कि हर बच्चा अपने पेरैंट्स की अपेक्षाओं पर हमेशा खरा उतरने का प्रयास करता है।

बच्चे का संबल बनें

जब वह ऐसा नहीं कर पाता तो वह खुद ही बहुत निराशा, हताशा और आत्मग्लानि महसूस करता है। इस नाजुक समय में बच्चे को पेरैंट्स से संबल की जरूरत होती है। ऐसी स्थिति में बच्चे को अपमानित करने से बचें, क्योंकि यह वह संवेदनशील स्थिति होती है कि बच्चा आत्महत्या जैसे घातक कदम तक उठा सकता है।

बदलें दृष्टिकोण

यदि आशानुरूप परिणाम नहीं आए, तो उसे धीरज बंधाएं और समझाएं कि कोई एक परीक्षा उनके लिए उससे महत्वपूर्ण नहीं है। अभी जीवन बहुत बड़ा है और उसे खुद को सिद्ध करने के अनेक मौके मिलेंगे। अभिभावकों का यह दृष्टिकोण बच्चे को अच्छा प्रदर्शन करने को प्रेरित करेगा।

रखें ध्यान

1 हर बच्चा किसी विशेष प्रतिभा के साथ पैदा होता है। इस बात को समझें व बच्चे को भी समझाएं।

2 अपने बच्चे को कामयाब नहीं, काबिल बनने के लिए पढने़ को कहें।

3 उसे अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने का साधन मत समझें।

4 उसकी रुचियों और आदतों को समझते हुए उसे समझने का प्रयास करें तथा उसी के अनुरूप करियर चयन में उसका साथ दें।

5 किसी बात को उस पर थोपें नहीं, बल्कि उसे सिर्फ सुझाव दें।

कैसे प्रेरित करें व्यक्ति को उन्नति व प्रगति की तरफ

प्रशंसा के द्वारा मानव हृदय जितना अधिक आकर्षित और आंदोलित होता है, उतना और किसी प्रकार नहीं होता। प्रशंसा, झूठी चापलूसी और चाटुकारिता से सर्वथा भिन्न है। सभी चाहते हैं कि हमारे गुणों को दूसरे भी परखें,सम्मान करें। प्रशंसा-प्रोत्साहन द्वारा अनेक व्यक्तियों को ऊंचा उठाने, आगे बढ़ाने में सहायक बनने का सत्प्रयोजन पूरा किया जा सकता है। इसका जादू सभी पर प्रभाव डालता है।

हो सकता है कि कोई क्रियाशील व्यक्ति आपकी प्रशंसा-प्रोत्साहन पाकर आभावों-प्रतिकूलताओं के बीच भी आगे बढ़ने का साहस नए सिरे से जुटा ले और उन्नति के प्रकाशपूर्ण पथ पर चलता हुआ, एक दिन ऊंची चोटी पर जा पहुंचे। इस महान कर्म-साधना में आप भी अनायास ही पुण्य के भागीदार बन बैठेंगे।

अनेक ऐसे लोग जो व्यक्तिगत रूप से उन्नतिशील होते हैं और जिनमें योग्यता के अंकुर विद्यमान होते हैं, समीपस्थ लोगों की झिड़क, तिरस्कार, उपेक्षा के कारण दब जाते हैं। उनका मन मर जाता है और वे उसी को अपनी नियति मान बैठते हैं। उनके गुणों को परखकर प्रशंसा-प्रोत्साहन के दो शब्द उनके कानों में डालने की कंजूसी न की जाए, तो इन्हीं थोड़े शब्दों का रस ही उनके अन्त:करण को ऊंचे स्तर की तृप्ति देता है, जिससे उनकी सारी थकान मिट जाती है, स्फूर्ति और उमंग उमड़ पड़ती है।

उन्नति के अवरुद्ध स्रोत खुल जाते हैं, अविकसित सत्प्रवृत्तियां प्रस्फुटित हो जाती हैं, छिपी योग्यताएं जाग्रत हो जाती हैं और निराशा के अंधकार में उन्हें पुन: आशा का दीपक जगमगाता दृष्टिगोचर होने लगता है। प्रशंसा के उपरांत यह परामर्श भी दिया जा सकता है कि उसमें जो थोड़ा-बहुत दोष-दुर्गुण हैं उन्हें किस प्रकार छोड़ें, अधिक प्रतिभावान बनें। यदि आप दूसरों के मुरझाए हृदयों को सींचने का, कानों की राह आत्माओं को अमृत पिलाने का धर्म-कार्य करते हैं, तो परोपकारी मेघों जैसे श्रेय के भागी हैं।